॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ॥

अभिधम्मपिटके

धम्मसङ्गणीपाळि

मातिका

१. तिकमातिका

१. (क) कुसला धम्मा।

(ख) अकुसला धम्मा।

(ग) अब्याकता धम्मा।

२. (क) सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा।

(ग) अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा।

३. (क) विपाका धम्मा।

(ख) विपाकधम्मधम्मा।

(ग) नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा।

४. (क) उपादिण्णुपादानिया [उपादिन्नुपादानिया (स्या०)] धम्मा।

(ख) अनुपादिण्णुपादानिया धम्मा।

(ग) अनुपादिण्णअनुपादानिया [अनुपादिन्नानुपादानिया (स्या०)] धम्मा।

५. (क) संकिलिट्ठसंकिलेसिका धम्मा।

(ख) असंकिलिट्ठसंकिलेसिका धम्मा।

(ग) असंकिलिट्ठअसंकिलेसिका [असंकिलिट्ठासंकिलेसिका (स्या०)] धम्मा।

६. (क) सवितक्कसविचारा धम्मा।

(ख) अवितक्कविचारमत्ता धम्मा।

(ग) अवितक्कअविचारा [अवितक्काविचारा (स्या०)] धम्मा।

७. (क) पीतिसहगता धम्मा।

(ख) सुखसहगता धम्मा।

(ग) उपेक्खासहगता धम्मा।

८. (क) दस्सनेन पहातब्बा धम्मा।

(ख) भावनाय पहातब्बा धम्मा।

(ग) नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बा धम्मा।

९. (क) दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा।

(ख) भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा।

(ग) नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा।

१०. (क) आचयगामिनो धम्मा।

(ख) अपचयगामिनो धम्मा।

(ग) नेवाचयगामिनापचयगामिनो [नेवाचयगामिनो नापचयगामिनो (स्या०)] धम्मा।

११. (क) सेक्खा धम्मा।

(ख) असेक्खा धम्मा।

(ग) नेवसेक्खनासेक्खा [नेवसेक्खानासेक्खा (सी० स्या०)] धम्मा।

१२. (क) परित्ता धम्मा।

(ख) महग्गता धम्मा।

(ग) अप्पमाणा धम्मा।

१३. (क) परित्तारम्मणा धम्मा।

(ख) महग्गतारम्मणा धम्मा।

(ग) अप्पमाणारम्मणा धम्मा।

१४. (क) हीना धम्मा।

(ख) मज्झिमा धम्मा।

(ग) पणीता धम्मा।

१५. (क) मिच्छत्तनियता धम्मा।

(ख) सम्मत्तनियता धम्मा।

(ग) अनियता धम्मा।

१६. (क) मग्गारम्मणा धम्मा।

(ख) मग्गहेतुका धम्मा।

(ग) मग्गाधिपतिनो धम्मा।

१७. (क) उप्पन्ना धम्मा।

(ख) अनुप्पन्ना धम्मा।

(ग) उप्पादिनो धम्मा।

१८. (क) अतीता धम्मा।

(ख) अनागता धम्मा।

(ग) पच्चुप्पन्ना धम्मा।

१९. (क) अतीतारम्मणा धम्मा।

(ख) अनागतारम्मणा धम्मा।

(ग) पच्चुप्पन्नारम्मणा धम्मा।

२०. (क) अज्झत्ता धम्मा।

(ख) बहिद्धा धम्मा।

(ग) अज्झत्तबहिद्धा धम्मा।

२१. (क) अज्झत्तारम्मणा धम्मा।

(ख) बहिद्धारम्मणा धम्मा।

(ग) अज्झत्तबहिद्धारम्मणा धम्मा।

२२. (क) सनिदस्सनसप्पटिघा धम्मा।

(ख) अनिदस्सनसप्पटिघा धम्मा।

(ग) अनिदस्सनअप्पटिघा [अनिदस्सनाप्पटिघा (स्या०)] धम्मा।

तिकमातिका।

२. दुकमातिका

हेतुगोच्छकं

१. (क) हेतू धम्मा।

(ख) न हेतू धम्मा।

२. (क) सहेतुका धम्मा।

(ख) अहेतुका धम्मा।

३. (क) हेतुसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) हेतुविप्पयुत्ता धम्मा।

४. (क) हेतू चेव धम्मा सहेतुका च।

(ख) सहेतुका चेव धम्मा न च हेतू।

५. (क) हेतू चेव धम्मा हेतुसम्पयुत्ता च।

(ख) हेतुसम्पयुत्ता चेव धम्मा न च हेतू।

६. (क) न हेतू खो पन धम्मा सहेतुकापि।

(ख) अहेतुकापि।

हेतुगोच्छकं।

चूळन्तरदुकं

७. (क) सप्पच्चया धम्मा।

(ख) अप्पच्चया धम्मा।

८. (क) सङ्खता धम्मा।

(ख) असङ्खता धम्मा।

९. (क) सनिदस्सना धम्मा।

(ख) अनिदस्सना धम्मा।

१०. (क) सप्पटिघा धम्मा।

(ख) अप्पटिघा धम्मा।

११. (क) रूपिनो धम्मा।

(ख) अरूपिनो धम्मा।

१२. (क) लोकिया धम्मा।

(ख) लोकुत्तरा धम्मा।

१३. (क) केनचि विञ्ञेय्या धम्मा।

(ख) केनचि न विञ्ञेय्या धम्मा।

चूळन्तरदुकं।

आसवगोच्छकं

१४. (क) आसवा धम्मा।

(ख) नो आसवा धम्मा।

१५. (क) सासवा धम्मा।

(ख) अनासवा धम्मा।

१६. (क) आसवसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) आसवविप्पयुत्ता धम्मा।

१७. (क) आसवा चेव धम्मा सासवा च।

(ख) सासवा चेव धम्मा नो च आसवा।

१८. (क) आसवा चेव धम्मा आसवसम्पयुत्ता च।

(ख) आसवसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च आसवा।

१९. (क) आसवविप्पयुत्ता खो पन धम्मा सासवापि।

(ख) अनासवापि।

आसवगोच्छकं।

संयोजनगोच्छकं

२०. (क) संयोजना धम्मा।

(ख) नो संयोजना धम्मा।

२१. (क) संयोजनिया धम्मा।

(ख) असंयोजनिया धम्मा।

२२. (क) संयोजनसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) संयोजनविप्पयुत्ता धम्मा।

२३. (क) संयोजना चेव धम्मा संयोजनिया च।

(ख) संयोजनिया चेव धम्मा नो च संयोजना।

२४. (क) संयोजना चेव धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता च।

(ख) संयोजनसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च संयोजना।

२५. (क) संयोजनविप्पयुत्ता खो पन धम्मा संयोजनियापि।

(ख) असंयोजनियापि।

संयोजनगोच्छकं।

गन्थगोच्छकं

२६. (क) गन्था धम्मा।

(ख) नो गन्था धम्मा।

२७. (क) गन्थनिया धम्मा।

(ख) अगन्थनिया धम्मा।

२८. (क) गन्थसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) गन्थविप्पयुत्ता धम्मा।

२९. (क) गन्था चेव धम्मा गन्थनिया च।

(ख) गन्थनिया चेव धम्मा नो च गन्था।

३०. (क) गन्था चेव धम्मा गन्थसम्पयुत्ता च।

(ख) गन्थसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च गन्था।

३१. (क) गन्थविप्पयुत्ता खो पन धम्मा गन्थनियापि।

(ख) अगन्थनियापि।

गन्थगोच्छकं।

ओघगोच्छकं

३२. (क) ओघा धम्मा।

(ख) नो ओघा धम्मा।

३३. (क) ओघनिया धम्मा।

(ख) अनोघनिया धम्मा।

३४. (क) ओघसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) ओघविप्पयुत्ता धम्मा।

३५. (क) ओघा चेव धम्मा ओघनिया च।

(ख) ओघनिया चेव धम्मा नो च ओघा।

३६. (क) ओघा चेव धम्मा ओघसम्पयुत्ता च।

(ख) ओघसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च ओघा।

३७. (क) ओघविप्पयुत्ता खो पन धम्मा ओघनियापि।

(ख) अनोघनियापि।

ओघगोच्छकं।

योगगोच्छकं

३८. (क) योगा धम्मा।

(ख) नो योगा धम्मा।

३९. (क) योगनिया धम्मा।

(ख) अयोगनिया धम्मा।

४०. (क) योगसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) योगविप्पयुत्ता धम्मा।

४१. (क) योगा चेव धम्मा योगनिया च।

(ख) योगनिया चेव धम्मा नो च योगा।

४२. (क) योगा चेव धम्मा योगसम्पयुत्ता च।

(ख) योगसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च योगा।

४३. (क) योगविप्पयुत्ता खो पन धम्मा योगनियापि।

(ख) अयोगनियापि।

योगगोच्छकं।

नीवरणगोच्छकं

४४. (क) नीवरणा धम्मा।

(ख) नो नीवरणा धम्मा।

४५. (क) नीवरणिया धम्मा।

(ख) अनीवरणिया धम्मा।

४६. (क) नीवरणसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) नीवरणविप्पयुत्ता धम्मा।

४७. (क) नीवरणा चेव धम्मा नीवरणिया च।

(ख) नीवरणिया चेव धम्मा नो च नीवरणा।

४८. (क) नीवरणा चेव धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता च।

(ख) नीवरणसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च नीवरणा।

४९. (क) नीवरणविप्पयुत्ता खो पन धम्मा नीवरणियापि।

(ख) अनीवरणियापि।

नीवरणगोच्छकं।

परामासगोच्छकं

५०. (क) परामासा धम्मा।

(ख) नो परामासा धम्मा।

५१. (क) परामट्ठा धम्मा।

(ख) अपरामट्ठा धम्मा।

५२. (क) परामाससम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) परामासविप्पयुत्ता धम्मा।

५३. (क) परामासा चेव धम्मा परामट्ठा च।

(ख) परामट्ठा चेव धम्मा नो च परामासा।

५४. (क) परामासविप्पयुत्ता खो पन धम्मा परामट्ठापि।

(ख) अपरामट्ठापि।

परामासगोच्छकं।

महन्तरदुकं

५५. (क) सारम्मणा धम्मा।

(ख) अनारम्मणा धम्मा।

५६. (क) चित्ता धम्मा।

(ख) नो चित्ता धम्मा।

५७. (क) चेतसिका धम्मा।

(ख) अचेतसिका धम्मा।

५८. (क) चित्तसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) चित्तविप्पयुत्ता धम्मा।

५९. (क) चित्तसंसट्ठा धम्मा।

(ख) चित्तविसंसट्ठा धम्मा।

६०. (क) चित्तसमुट्ठाना धम्मा।

(ख) नो चित्तसमुट्ठाना धम्मा।

६१. (क) चित्तसहभुनो धम्मा।

(ख) नो चित्तसहभुनो धम्मा।

६२. (क) चित्तानुपरिवत्तिनो धम्मा।

(ख) नो चित्तानुपरिवत्तिनो धम्मा।

६३. (क) चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना धम्मा।

(ख) नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना धम्मा।

६४. (क) चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो धम्मा।

(ख) नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो धम्मा।

६५. (क) चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो धम्मा।

(ख) नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो धम्मा।

६६. (क) अज्झत्तिका धम्मा।

(ख) बाहिरा धम्मा।

६७. (क) उपादा धम्मा।

(ख) नो उपादा धम्मा।

६८. (क) उपादिण्णा [उपादिन्ना (सी॰ स्या॰)] धम्मा।

(ख) अनुपादिण्णा धम्मा।

महन्तरदुकं।

उपादानगोच्छकं

६९. (क) उपादाना धम्मा।

(ख) नो उपादाना धम्मा।

७०. (क) उपादानिया धम्मा।

(ख) अनुपादानिया धम्मा।

७१. (क) उपादानसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) उपादानविप्पयुत्ता धम्मा।

७२. (क) उपादाना चेव धम्मा उपादानिया च।

(ख) उपादानिया चेव धम्मा नो च उपादाना।

७३. (क) उपादाना चेव धम्मा उपादानसम्पयुत्ता च।

(ख) उपादानसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च उपादाना।

७४. (क) उपादानविप्पयुत्ता खो पन धम्मा उपादानियापि।

(ख) अनुपादानियापि।

उपादानगोच्छकं।

किलेसगोच्छकं

७५. (क) किलेसा धम्मा।

(ख) नो किलेसा धम्मा।

७६. (क) संकिलेसिका धम्मा।

(ख) असंकिलेसिका धम्मा।

७७. (क) संकिलिट्ठा धम्मा।

(ख) असंकिलिट्ठा धम्मा।

७८. (क) किलेससम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) किलेसविप्पयुत्ता धम्मा।

७९. (क) किलेसा चेव धम्मा संकिलेसिका च।

(ख) संकिलेसिका चेव धम्मा नो च किलेसा।

८०. (क) किलेसा चेव धम्मा संकिलिट्ठा च।

(ख) संकिलिट्ठा चेव धम्मा नो च किलेसा।

८१. (क) किलेसा चेव धम्मा किलेससम्पयुत्ता च।

(ख) किलेससम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च किलेसा।

८२. (क) किलेसविप्पयुत्ता खो पन धम्मा संकिलेसिकापि।

(ख) असंकिलेसिकापि।

किलेसगोच्छकं।

पिट्ठिदुकं

८३. (क) दस्सनेन पहातब्बा धम्मा।

(ख) न दस्सनेन पहातब्बा धम्मा।

८४. (क) भावनाय पहातब्बा धम्मा।

(ख) न भावनाय पहातब्बा धम्मा।

८५. (क) दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा।

(ख) न दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा।

८६. (क) भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा।

(ख) न भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा।

८७. (क) सवितक्का धम्मा।

(ख) अवितक्का धम्मा।

८८. (क) सविचारा धम्मा।

(ख) अविचारा धम्मा।

८९. (क) सप्पीतिका धम्मा।

(ख) अप्पीतिका धम्मा।

९०. (क) पीतिसहगता धम्मा।

(ख) न पीतिसहगता धम्मा।

९१. (क) सुखसहगता धम्मा।

(ख) न सुखसहगता धम्मा।

९२. (क) उपेक्खासहगता धम्मा।

(ख) न उपेक्खासहगता धम्मा।

९३. (क) कामावचरा धम्मा।

(ख) न कामावचरा धम्मा।

९४. (क) रूपावचरा धम्मा।

(ख) न रूपावचरा धम्मा।

९५. (क) अरूपावचरा धम्मा।

(ख) न अरूपावचरा धम्मा।

९६. (क) परियापन्ना धम्मा।

(ख) अपरियापन्ना धम्मा।

९७. (क) निय्यानिका धम्मा।

(ख) अनिय्यानिका धम्मा।

९८. (क) नियता धम्मा।

(ख) अनियता धम्मा।

९९. (क) सउत्तरा धम्मा।

(ख) अनुत्तरा धम्मा।

१००. (क) सरणा धम्मा।

(ख) अरणा धम्मा।

पिट्ठिदुकं।

अभिधम्मदुकमातिका।

सुत्तन्तिकदुकमातिका

१०१. (क) विज्जाभागिनो धम्मा।

(ख) अविज्जाभागिनो धम्मा।

१०२. (क) विज्जूपमा धम्मा।

(ख) वजिरूपमा धम्मा।

१०३. (क) बाला धम्मा।

(ख) पण्डिता धम्मा।

१०४. (क) कण्हा धम्मा।

(ख) सुक्का धम्मा।

१०५. (क) तपनीया धम्मा।

(ख) अतपनीया धम्मा।

१०६. (क) अधिवचना धम्मा।

(ख) अधिवचनपथा धम्मा।

१०७. (क) निरुत्ति धम्मा।

(ख) निरुत्तिपथा धम्मा।

१०८. (क) पञ्ञत्ति धम्मा।

(ख) पञ्ञत्तिपथा धम्मा।

१०९. (क) नामञ्च।

(ख) रूपञ्च।

११०. (क) अविज्जा च।

(ख) भवतण्हा च।

१११. (क) भवदिट्ठि च।

(ख) विभवदिट्ठि च।

११२. (क) सस्सतदिट्ठि च।

(ख) उच्छेददिट्ठि च।

११३. (क) अन्तवा दिट्ठि च।

(ख) अनन्तवा दिट्ठि च।

११४. (क) पुब्बन्तानुदिट्ठि च।

(ख) अपरन्तानुदिट्ठि च।

११५. (क) अहिरिकञ्च।

(ख) अनोत्तप्पञ्च।

११६. (क) हिरी च।

(ख) ओत्तप्पञ्च।

११७. (क) दोवचस्सता च।

(ख) पापमित्तता च।

११८. (क) सोवचस्सता च।

(ख) कल्याणमित्तता च।

११९. (क) आपत्तिकुसलता च।

(ख) आपत्तिवुट्ठानकुसलता च।

१२०. (क) समापत्तिकुसलता च।

(ख) समापत्तिवुट्ठानकुसलता च।

१२१. (क) धातुकुसलता च।

(ख) मनसिकारकुसलता च।

१२२. (क) आयतनकुसलता च।

(ख) पटिच्चसमुप्पादकुसलता च।

१२३. (क) ठानकुसलता च।

(ख) अट्ठानकुसलता च।

१२४. (क) अज्जवो च।

(ख) मद्दवो च।

१२५. (क) खन्ति च।

(ख) सोरच्चञ्च।

१२६. (क) साखल्यञ्च।

(ख) पटिसन्थारो च [पटिसन्धारो च (क०)]।

१२७. (क) इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता च।

(ख) भोजने अमत्तञ्ञुता च।

१२८. (क) इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता च।

(ख) भोजने मत्तञ्ञुता च।

१२९. (क) मुट्ठसच्चञ्च।

(ख) असम्पजञ्ञञ्च।

१३०. (क) सति च।

(ख) सम्पजञ्ञञ्च।

१३१. (क) पटिसङ्खानबलञ्च।

(ख) भावनाबलञ्च।

१३२. (क) समथो च।

(ख) विपस्सना च।

१३३. (क) समथनिमित्तञ्च।

(ख) पग्गाहनिमित्तञ्च।

१३४. (क) पग्गाहो च।

(ख) अविक्खेपो च।

१३५. (क) सीलविपत्ति च।

(ख) दिट्ठिविपत्ति च।

१३६. (क) सीलसम्पदा च।

(ख) दिट्ठिसम्पदा च।

१३७. (क) सीलविसुद्धि च।

(ख) दिट्ठिविसुद्धि च।

१३८. (क) दिट्ठिविसुद्धि खो पन।

(ख) यथादिट्ठिस्स च पधानं।

१३९. (क) संवेगो च संवेजनियेसु ठानेसु।

(ख) संविग्गस्स च योनिसो पधानं।

१४०. (क) असन्तुट्ठिता च कुसलेसु धम्मेसु।

(ख) अप्पटिवानिता च पधानस्मिं।

१४१. (क) विज्जा च।

(ख) विमुत्ति च।

१४२. (क) खये ञाणं।

(ख) अनुप्पादे ञाणन्ति।

सुत्तन्तिकदुकमातिका [सुत्तन्तमातिका (स्या॰)]।

मातिका निट्ठिता।

१. चित्तुप्पादकण्डं

कामावचरकुसलं

पदभाजनी

१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं [विरियिन्द्रियं (सी॰ स्या॰)] होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं [विरियबलं (सी॰ स्या॰)] होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, पञ्ञाबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अमोहो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, सम्मादिट्ठि होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि [कायप्पस्सद्धि (स्या॰)] होति, चित्तपस्सद्धि [चित्तप्पस्सद्धि (स्या॰)] होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता [कायुज्जुकता (सी॰ क॰)] होति, चित्तुजुकता [चित्तुज्जुकता (सी॰ क॰)] होति, सति होति, सम्पजञ्ञं होति, समथो होति, विपस्सना होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

२. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

३. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

५. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं [सञ्चेतयितत्तं (स्या०)] – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

६. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

७. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

८. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

९. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये पीति होति।

१०. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

११. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

१२. कतमं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति।

१३. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो [विरियारम्भो (सी० स्या०)] निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही [उस्सोळ्हि (सी०)] थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

१४. कतमं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति।

१५. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति।

१६. कतमं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति।

१७. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

१८. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

१९. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना [इरीयना (सी०)] वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति।

२०. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

२१. कतमो तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति।

२२. कतमो तस्मिं समये सम्मावायामो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – अयं तस्मिं समये सम्मावायामो होति।

२३. कतमा तस्मिं समये सम्मासति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – अयं तस्मिं समये सम्मासति होति।

२४. कतमो तस्मिं समये सम्मासमाधि होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये सम्मासमाधि होति।

२५. कतमं तस्मिं समये सद्धाबलं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धाबलं होति।

२६. कतमं तस्मिं समये वीरियबलं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियबलं होति।

२७. कतमं तस्मिं समये सतिबलं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं तस्मिं समये सतिबलं होति।

२८. कतमं तस्मिं समये समाधिबलं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिबलं होति।

२९. कतमं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति।

३०. कतमं तस्मिं समये हिरिबलं होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये हिरिबलं होति।

३१. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति।

३२. कतमो तस्मिं समये अलोभो होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अलोभो होति।

३३. कतमो तस्मिं समये अदोसो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं [अदूसना अदूसितत्तं (स्या०)] अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अदोसो होति?

३४. कतमो तस्मिं समये अमोहो होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि अमोहो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अमोहो होति।

३५. कतमा तस्मिं समये अनभिज्झा होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अनभिज्झा होति।

३६. कतमो तस्मिं समये अब्यापादो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अब्यापादो होति।

३७. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

३८. कतमा तस्मिं समये हिरी होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – अयं तस्मिं समये हिरी होति।

३९. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पं होति।

४०. कतमा तस्मिं समये कायपस्सद्धि होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स पस्सद्धि पटिपस्सद्धि [पटिप्पस्सद्धि (सी॰ स्या॰)] पस्सम्भना पटिपस्सम्भना [पटिप्पस्सम्भना (सी॰ स्या॰)] पटिपस्सम्भितत्तं [पटिप्पस्सम्भितत्तं (सी॰ स्या॰)] – अयं तस्मिं समये कायपस्सद्धि होति।

४१. कतमा तस्मिं समये चित्तपस्सद्धि होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स पस्सद्धि पटिपस्सद्धि पस्सम्भना पटिपस्सम्भना पटिपस्सम्भितत्तं – अयं तस्मिं समये चित्तपस्सद्धि होति।

४२. कतमा तस्मिं समये कायलहुता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – अयं तस्मिं समये कायलहुता होति।

४३. कतमा तस्मिं समये चित्तलहुता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – अयं तस्मिं समये चित्तलहुता होति।

४४. कतमा तस्मिं समये कायमुदुता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – अयं तस्मिं समये कायमुदुता होति।

४५. कतमा तस्मिं समये चित्तमुदुता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – अयं तस्मिं समये चित्तमुदुता होति।

४६. कतमा तस्मिं समये कायकम्मञ्ञता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – अयं तस्मिं समये कायकम्मञ्ञता होति।

४७. कतमा तस्मिं समये चित्तकम्मञ्ञता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – अयं तस्मिं समये चित्तकम्मञ्ञता होति।

४८. कतमा तस्मिं समये कायपागुञ्ञता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स पगुणता पगुणत्तं पगुणभावो – अयं तस्मिं समये कायपागुञ्ञता होति।

४९. कतमा तस्मिं समये चित्तपागुञ्ञता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स पगुणता पगुणत्तं पगुणभावो – अयं तस्मिं समये चित्तपागुञ्ञता होति।

५०. कतमा तस्मिं समये कायुजुकता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता – अयं तस्मिं समये कायुजुकता होति।

५१. कतमा तस्मिं समये चित्तुजुकता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता – अयं तस्मिं समये चित्तुजुकता होति।

५२. कतमा तस्मिं समये सति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – अयं तस्मिं समये सति होति।

५३. कतमं तस्मिं समये सम्पजञ्ञं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये सम्पजञ्ञं होति।

५४. कतमो तस्मिं समये समथो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये समथो होति।

५५. कतमा तस्मिं समये विपस्सना होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं तस्मिं समये विपस्सना होति।

५६. कतमो तस्मिं समये पग्गाहो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – अयं तस्मिं समये पग्गाहो होति।

५७. कतमो तस्मिं समये अविक्खेपो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये अविक्खेपो होति।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

पदभाजनीयं।

पठमभाणवारो।

कोट्ठासवारो

५८. तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, पञ्चङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

५९. कतमे तस्मिं समये चत्तारो खन्धा होन्ति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो।

६०. कतमो तस्मिं समये वेदनाक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदनाक्खन्धो होति।

६१. कतमो तस्मिं समये सञ्ञाक्खन्धो होति? या तस्मिं समये सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञाक्खन्धो होति।

६२. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा [थपेत्वा (क॰)] वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति।

६३. कतमो तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धो होति।

इमे तस्मिं समये चत्तारो खन्धा होन्ति।

६४. कतमानि तस्मिं समये द्वायतनानि होन्ति? मनायतनं धम्मायतनं।

६५. कतमं तस्मिं समये मनायतनं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनायतनं होति।

६६. कतमं तस्मिं समये धम्मायतनं होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इदं तस्मिं समये

धम्मायतनं होति।

इमानि तस्मिं समये द्वायतनानि होन्ति।

६७. कतमा तस्मिं समये द्वे धातुयो होन्ति? मनोविञ्ञाणधातु, धम्मधातु।

६८. कतमा तस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु होति।

६९. कतमा तस्मिं समये धम्मधातु होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – अयं तस्मिं समये धम्मधातु होति।

इमा तस्मिं समये द्वे धातुयो होन्ति।

७०. कतमे तस्मिं समये तयो आहारा होन्ति? फस्साहारो, मनोसञ्चेतनाहारो, विञ्ञाणाहारो।

७१. कतमो तस्मिं समये फस्साहारो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्साहारो होति।

७२. कतमो तस्मिं समये मनोसञ्चेतनाहारो होति? या तस्मिं समये चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये मनोसञ्चेतनाहारो होति।

७३. कतमो तस्मिं समये विञ्ञाणाहारो होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये विञ्ञाणाहारो होति।

इमे तस्मिं समये तयो आहारा होन्ति।

७४. कतमानि तस्मिं समये अट्ठिन्द्रियानि होन्ति? सद्धिन्द्रियं, वीरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं, मनिन्द्रियं, सोमनस्सिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं।

७५. कतमं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति।

७६. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

७७. कतमं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति।

७८. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति।

७९. कतमं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति।

८०. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

८१. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

८२. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति।

इमानि तस्मिं समये अट्ठिन्द्रियानि होन्ति।

८३. कतमं तस्मिं समये पञ्चङ्गिकं झानं होति? वितक्को, विचारो, पीति, सुखं, चित्तस्सेकग्गता।

८४. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

८५. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

८६. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये पीति होति।

८७. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

८८. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

इदं तस्मिं समये पञ्चङ्गिकं झानं होति।

८९. कतमो तस्मिं समये पञ्चङ्गिको मग्गो होति? सम्मादिट्ठि, सम्मासङ्कप्पो, सम्मावायामो, सम्मासति,

सम्मासमाधि।

९०. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

९१. कतमो तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति।

९२. कतमो तस्मिं समये सम्मावायामो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – अयं तस्मिं समये सम्मावायामो होति।

९३. कतमा तस्मिं समये सम्मासति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – अयं तस्मिं समये सम्मासति होति।

९४. कतमो तस्मिं समये सम्मासमाधि होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये सम्मासमाधि होति।

अयं तस्मिं समये पञ्चङ्गिको मग्गो होति।

९५. कतमानि तस्मिं समये सत्त बलानि होन्ति? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं, हिरिबलं, ओत्तप्पबलं।

९६. कतमं तस्मिं समये सद्धाबलं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धाबलं होति।

९७. कतमं तस्मिं समये वीरियबलं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियबलं होति।

९८. कतमं तस्मिं समये सतिबलं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं तस्मिं समये सतिबलं होति।

९९. कतमं तस्मिं समये समाधिबलं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिबलं होति।

१००. कतमं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति।

१०१. कतमं तस्मिं समये हिरिबलं होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये हिरिबलं होति।

१०२. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति।

इमानि तस्मिं समये सत्त बलानि होन्ति।

१०३. कतमे तस्मिं समये तयो हेतू होन्ति? अलोभो, अदोसो, अमोहो।

१०४. कतमो तस्मिं समये अलोभो होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अलोभो होति।

१०५. कतमो तस्मिं समये अदोसो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अदोसो होति।

१०६. कतमो तस्मिं समये अमोहो होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना...पे॰... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं तस्मिं समये अमोहो होति।

इमे तस्मिं समये तयो हेतू होन्ति।

१०७. कतमो तस्मिं समये एको फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये एको फस्सो होति।

१०८. कतमा तस्मिं समये एका वेदना होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये एका वेदना होति।

१०९. कतमा तस्मिं समये एका सञ्ञा होति? या तस्मिं समये सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये एका सञ्ञा होति।

११०. कतमा तस्मिं समये एका चेतना होति? या तस्मिं समये चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये एका चेतना होति।

१११. कतमं तस्मिं समये एकं चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं

विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये एकं चित्तं होति।

११२. कतमो तस्मिं समये एको वेदनाक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये एको वेदनाक्खन्धो होति।

११३. कतमो तस्मिं समये एको सञ्ञाक्खन्धो होति? या तस्मिं समये सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये एको सञ्ञाक्खन्धो होति।

११४. कतमो तस्मिं समये एको सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये एको सङ्खारक्खन्धो होति।

११५. कतमो तस्मिं समये एको विञ्ञाणक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये एको विञ्ञाणक्खन्धो होति।

११६. कतमं तस्मिं समये एकं मनायतनं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये एकं मनायतनं होति।

११७. कतमं तस्मिं समये एकं मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये एकं मनिन्द्रियं होति।

११८. कतमा तस्मिं समये एका मनोविञ्ञाणधातु होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये एका मनोविञ्ञाणधातु होति।

११९. कतमं तस्मिं समये एकं धम्मायतनं होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इदं तस्मिं समये एकं धम्मायतनं होति।

१२०. कतमा तस्मिं समये एका धम्मधातु होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – अयं तस्मिं समये एका धम्मधातु होति।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

कोट्ठासवारो।

सुञ्ञतवारो

१२१. तस्मिं खो पन समये धम्मा होन्ति, खन्धा होन्ति, आयतनानि होन्ति, धातुयो होन्ति, आहारा होन्ति, इन्द्रियानि होन्ति, झानं होति, मग्गो होति, बलानि होन्ति, हेतू होन्ति, फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वेदनाक्खन्धो होति, सञ्ञाक्खन्धो होति, सङ्खारक्खन्धो होति, विञ्ञाणक्खन्धो होति, मनायतनं होति, मनिन्द्रियं होति, मनोविञ्ञाणधातु होति, धम्मायतनं होति, धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

१२२. कतमे तस्मिं समये धम्मा होन्ति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे तस्मिं समये धम्मा होन्ति।

१२३. कतमे तस्मिं समये खन्धा होन्ति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे तस्मिं समये खन्धा होन्ति।

१२४. कतमानि तस्मिं समये आयतनानि होन्ति? मनायतनं, धम्मायतनं – इमानि तस्मिं समये आयतनानि होन्ति।

१२५. कतमा तस्मिं समये धातुयो होन्ति? मनोविञ्ञाणधातु, धम्मधातु – इमा तस्मिं समये धातुयो होन्ति।

१२६. कतमे तस्मिं समये आहारा होन्ति? फस्साहारो, मनोसञ्चेतनाहारो, विञ्ञाणाहारो – इमे तस्मिं समये आहारा होन्ति।

१२७. कतमानि तस्मिं समये इन्द्रियानि होन्ति? सद्धिन्द्रियं, वीरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं, मनिन्द्रियं, सोमनस्सिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं – इमानि तस्मिं समये इन्द्रियानि होन्ति।

१२८. कतमं तस्मिं समये झानं होति? वितक्को, विचारो, पीति, सुखं, चित्तस्सेकग्गता – इदं तस्मिं समये झानं होति।

१२९. कतमो तस्मिं समये मग्गो होति? सम्मादिट्ठि, सम्मासङ्कप्पो, सम्मावायामो, सम्मासति, सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये मग्गो होति।

१३०. कतमानि तस्मिं समये बलानि होन्ति? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं, हिरिबलं, ओत्तप्पबलं – इमानि तस्मिं समये बलानि होन्ति।

१३१. कतमे तस्मिं समये हेतू होन्ति? अलोभो, अदोसो, अमोहो – इमे तस्मिं समये हेतू होन्ति।

१३२. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

१३३. कतमा तस्मिं समये वेदना होति…पे०… अयं तस्मिं समये वेदना होति।

१३४. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति…पे०… अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

१३५. कतमा तस्मिं समये चेतना होति...पे०... अयं तस्मिं समये चेतना होति?

१३६. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति...पे०... इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

१३७. कतमो तस्मिं समये वेदनाक्खन्धो होति...पे०... अयं तस्मिं समये वेदनाक्खन्धो होति।

१३८. कतमो तस्मिं समये सञ्ञाक्खन्धो होति...पे०... अयं तस्मिं समये सञ्ञाक्खन्धो होति।

१३९. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति।

१४०. कतमो तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धो होति...पे०... अयं तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धो होति।

१४१. कतमं तस्मिं समये मनायतनं होति...पे०... इदं तस्मिं समये मनायतनं होति।

१४२. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति...पे०... इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

१४३. कतमा तस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु होति...पे०... अयं तस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु होति।

१४४. कतमं तस्मिं समये धम्मायतनं होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इदं तस्मिं समये धम्मायतनं होति।

१४५. कतमा तस्मिं समये धम्मधातु होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – अयं तस्मिं समये धम्मधातु होति।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

सुञ्ञतवारो।

पठमं चित्तं।

१४६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा...पे०... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

दुतियं चित्तं।

१४७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं

होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, सत्तिन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, छ बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे॰… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

१४८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अनभिज्झा अब्यापादो हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

ततियं चित्तं।

१४९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा…पे॰… धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

चतुत्थं चित्तं।

१५०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, पञ्ञाबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अमोहो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, सम्मादिट्ठि होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति,

चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, सम्पजञ्ञं होति, समथो होति, विपस्सना होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

१५१. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

१५२. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति...पे॰...।

१५३. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति...पे॰...।

१५४. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति...पे॰... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे॰...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, पञ्चङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे॰... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे॰...।

१५५. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

पञ्चमं चित्तं।

१५६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा...पे॰... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

छट्ठं चित्तं।

१५७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, सत्तिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, छ बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे॰… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

१५८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अनभिज्झा अब्यापादो हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति समथो पग्गाहो अविक्खेपो।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

सत्तमं चित्तं।

१५९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा…पे॰… धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

अट्ठमं चित्तं।

अट्ठ कामावचरमहाकुसलचित्तानि।

दुतियभाणवारो।

रूपावचरकुसलं

चतुक्कनयो

१६०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं [पठमज्झानं (सी॰)] उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१६१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं [दुतियज्झानं (सी॰)] उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति…पे॰… पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, तिवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे॰… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

१६२. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो…पे॰… पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१६३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरति सतो च सम्पजानो सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेति, यं तं अरिया आचिक्खन्ति – ''उपेक्खको सतिमा सुखविहारी''ति ततियं झानं [ततियज्झानं (सी॰)] उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति…पे॰… पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, दुवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे॰… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

१६४. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो...पे०... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१६५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं [चतुत्थज्झानं (सी०)] उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति...पे०... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, दुवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

१६६. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो...पे०... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

चतुक्कनयो।

पञ्चकनयो

१६७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं – तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१६८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अवितक्कं विचारमत्तं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति...पे०... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एकं

धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

१६९. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो…पे॰… पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१७०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे॰… ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति…पे॰… पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, तिवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे॰… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

१७१. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो…पे॰… पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१७२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति पीतिया च विरागा…पे॰… चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति…पे॰… पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, दुवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे॰… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे॰…।

१७३. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो…पे॰… पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि

अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१७४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सुखस्स च पहाना…पे०… पञ्चमं झानं [पञ्चमज्झानं (सी०)] उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति…पे०… पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे०…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, दुवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे०…।

१७५. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो…पे०… पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

पञ्चकनयो।

चतस्सो पटिपदा

१७६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं [दुक्खापटिपदं (बहूसु)] दन्धाभिञ्ञं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१७७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१७८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं [सुखापटिपदं (बहूसु)] दन्धाभिञ्ञं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१७९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा

कुसला…पे॰…।

१८०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे॰… दुतियं झानं…पे॰… ततियं झानं…पे॰… चतुत्थं झानं…पे॰… पठमं झानं…पे॰… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं पथवीकसिणं…पे॰… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं पथवीकसिणं…पे॰… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं पथवीकसिणं…पे॰… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं पथवीकसिणं – तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

चतस्सो पटिपदा।

चत्तारि आरम्मणानि

१८१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१८२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं – तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१८३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१८४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१८५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे॰… दुतियं झानं…पे॰… ततियं झानं…पे॰… चतुत्थं झानं…पे॰… पठमं झानं…पे॰… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे॰… परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं…पे॰… अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे॰… अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

चत्तारि आरम्मणानि।

सोळसक्खत्तुकं

१८६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

१८७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज

विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१८८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१८९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि …पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

१९९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२००. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२०१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२०२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे०… दुतियं झानं…पे०… ततियं झानं…पे०… चतुत्थं झानं…पे०… पठमं झानं…पे०… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं – तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

सोळसक्खत्तुकं।

अट्ठकसिणं सोळसक्खत्तुकं

२०३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज

विहरति आपोकसिणं...पे०... तेजोकसिणं...पे०... वायोकसिणं...पे०... नीलकसिणं...पे०... पीतकसिणं...पे०... लोहितकसिणं...पे०... ओदातकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

अट्ठकसिणं सोळसक्खत्तुकं।

अभिभायतनानि परित्तानि

२०४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२०५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

चतस्सो पटिपदा

२०६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२०७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२०८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२०९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं ...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो

होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

चतस्सो पटिपदा।

द्वे आरम्मणानि

२११. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं परित्तारम्मणं...पे०... अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

द्वे आरम्मणानि।

अट्ठक्खत्तुकं

२१४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२२०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२२१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२२२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

अट्ठक्खत्तुकं।

इदम्पि अट्ठक्खत्तुकं

२२३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि सुवण्णदुब्बण्णानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२२४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि सुवण्णदुब्बण्णानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

इदम्पि अट्ठक्खत्तुकं।

अप्पमाणानि

२२५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

२२६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे॰… दुतियं झानं…पे॰… ततियं झानं…पे॰… चतुत्थं झानं…पे॰… पठमं झानं…पे॰… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

चतस्सो पटिपदा

२२७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

२२८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

२२९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

२३०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे॰… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

२३१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे॰… दुतियं झानं…पे॰… ततियं झानं…पे॰… चतुत्थं झानं…पे॰… पठमं झानं…पे॰… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं…पे॰… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं…पे॰… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं…पे॰… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰… अविक्खेपो होति…पे॰… इमे धम्मा कुसला।

चतस्सो पटिपदा।

द्वे आरम्मणानि

२३२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२३३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२३४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे०… दुतियं झानं…पे०… ततियं झानं…पे०… चतुत्थं झानं…पे०… पठमं झानं…पे०… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं अप्पमाणारम्मणं…पे०… अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

द्वे आरम्मणानि।

अपरम्पि अट्ठक्खत्तुकं

२३५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२३६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२३७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२३८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२३९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२४०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति

अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२४१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२४२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२४३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे०… दुतियं झानं…पे०… ततियं झानं…पे०… चतुत्थं झानं…पे०… पठमं झानं…पे०… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं…पे०… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं…पे०… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं…पे०… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं…पे०… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

अपरम्पि अट्ठक्खत्तुकं।

इदम्पि अट्ठक्खत्तुकं

२४४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि सुवण्णदुब्बण्णानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२४५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि सुवण्णदुब्बण्णानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे०… दुतियं झानं…पे०… ततियं झानं…पे०… चतुत्थं झानं…पे०… पठमं झानं…पे०… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

इदम्पि अट्ठक्खत्तुकं।

२४६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति नीलानि नीलवण्णानि नीलनिदस्सनानि नीलनिभासानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०…

पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२४७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति पीतानि पीतवण्णानि पीतनिदस्सनानि पीतनिभासानि…पे०… लोहितकानि लोहितकवण्णानि लोहितकनिदस्सनानि लोहितकनिभासानि…पे०… ओदातानि ओदातवण्णानि ओदातनिदस्सनानि ओदातनिभासानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

इमानिपि अभिभायतनानि सोळसक्खत्तुकानि।

तीणि विमोक्खानि सोळसक्खत्तुकानि

२४८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति रूपी रूपानि पस्सति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२४९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२५०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सुभन्ति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

इमानिपि तीणि विमोक्खानि सोळसक्खत्तुकानि।

चत्तारि ब्रह्मविहारझानानि सोळसक्खत्तुकानि

२५१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२५२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा…पे०… दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२५३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति पीतिया च विरागा…पे०… ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२५४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

२५५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अवितक्कं विचारमत्तं समाधिजं पीतिसुखं

दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति पीतिया च विरागा...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति करुणासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति करुणासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२६०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति मुदितासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२६१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति मुदितासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२६२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

चत्तारि ब्रह्मविहारझानानि [ब्रह्मविहारज्झानानि (सी० स्या०)] सोळसक्खत्तुकानि।

असुभझानं सोळसक्खत्तुकं

२६३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति उद्धुमातकसञ्ञासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२६४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति विनीलकसञ्ञासहगतं...पे०... विपुब्बकसञ्ञासहगतं...पे०... विच्छिद्दकसञ्ञासहगतं...पे०... विक्खायितकसञ्ञासहगतं...पे०... विक्खित्तकसञ्ञासहगतं...पे०... हतविक्खित्तकसञ्ञासहगतं...पे०... लोहितकसञ्ञासहगतं...पे०... पुळवकसञ्ञासहगतं [पुळुवकसञ्ञासहगतं (क०)] ...पे०... अट्ठिकसञ्ञासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

असुभझानं [असुभज्झानं (सी॰ स्या॰)] सोळसक्खत्तुकं।

रूपावचरकुसलं।

अरूपावचरकुसलं

चत्तारि अरूपझानानि [अरूपज्झानानि (सी॰ स्या॰)] सोळसक्खत्तुकानि

२६५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे॰... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

२६६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे॰... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

२६७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे॰... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

२६८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे॰... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

चत्तारि अरूपझानानि सोळसक्खत्तुकानि।

अरूपावचरकुसलं।

तेभूमककुसलं

कामावचरकुसलं

२६९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं हीनं...पे॰... मज्झिमं...पे॰... पणीतं...पे॰... छन्दाधिपतेय्यं...पे॰... वीरियाधिपतेय्यं...पे॰... चित्ताधिपतेय्यं...पे॰... वीमंसाधिपतेय्यं...पे॰... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे॰... मज्झिमं...पे॰... पणीतं...पे॰... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे॰... मज्झिमं...पे॰... पणीतं...पे॰... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे॰... मज्झिमं...पे॰... पणीतं...पे॰... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे॰... मज्झिमं...पे॰... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

२७०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं

ससङ्खारेन...पे०... सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं...पे०... सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं ससङ्खारेन...पे०... उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं...पे०... उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं ससङ्खारेन...पे०... उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं...पे०... उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं ससङ्खारेन हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

कामावचरकुसलं।

रूपावचरकुसलं

२७१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२७२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

रूपावचरकुसलं।

अरूपावचरकुसलं

२७३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२७४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं

हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति... पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२७५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं... पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२७६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं... पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

अरूपावचरकुसलं।

लोकुत्तरकुसलं

सुद्धिकपटिपदा

२७७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावाचा होति, सम्माकम्मन्तो होति, सम्माआजीवो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, पञ्ञाबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अमोहो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, सम्मादिट्ठि होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, सम्पजञ्ञं होति, समथो होति, विपस्सना होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा — इमे धम्मा कुसला।

२७८. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

२७९. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

२८०. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

२८१. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

२८२. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

२८३. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

२८४. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

२८५. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स पीतिसम्बोज्झङ्गो – अयं तस्मिं समये पीति होति।

२८६. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

२८७. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

२८८. कतमं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति।

२८९. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो वीरियसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

२९०. कतमं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति सतिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति।

२९१. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति।

२९२. कतमं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति।

२९३. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

२९४. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

२९५. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति।

२९६. कतमं तस्मिं समये अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं होति? या तेसं धम्मानं अनञ्ञातानं अदिट्ठानं अप्पत्तानं अविदितानं असच्छिकतानं सच्छिकिरियाय पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं होति।

२९७. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

२९८. कतमो तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो

अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति।

२९९. कतमा तस्मिं समये सम्मावाचा होति? या तस्मिं समये चतूहि वचीदुच्चरितेहि आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो सम्मावाचा मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मावाचा होति।

३००. कतमो तस्मिं समये सम्माकम्मन्तो होति? या तस्मिं समये तीहि कायदुच्चरितेहि आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो सम्माकम्मन्तो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्माकम्मन्तो होति।

३०१. कतमो तस्मिं समये सम्माआजीवो होति? या तस्मिं समये मिच्छाआजीवा आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो सम्माआजीवो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्माआजीवो होति।

३०२. कतमो तस्मिं समये सम्मावायामो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो वीरियसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मावायामो होति।

३०३. कतमा तस्मिं समये सम्मासति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति सतिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मासति होति।

३०४. कतमो तस्मिं समये सम्मासमाधि होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मासमाधि होति।

३०५. कतमं तस्मिं समये सद्धाबलं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धाबलं होति।

३०६. कतमं तस्मिं समये वीरियबलं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो वीरियसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये वीरियबलं होति।

३०७. कतमं तस्मिं समये सतिबलं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति सतिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये सतिबलं होति।

३०८. कतमं तस्मिं समये समाधिबलं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो

अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये समाधिबलं होति।

३०९. कतमं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति।

३१०. कतमं तस्मिं समये हिरिबलं होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये हिरिबलं होति।

३११. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति।

३१२. कतमो तस्मिं समये अलोभो होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अलोभो होति।

३१३. कतमो तस्मिं समये अदोसो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अदोसो होति।

३१४. कतमो तस्मिं समये अमोहो होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये अमोहो होति।

३१५. कतमा तस्मिं समये अनभिज्झा होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अनभिज्झा होति।

३१६. कतमो तस्मिं समये अब्यापादो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अब्यापादो होति।

३१७. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

३१८. कतमा तस्मिं समये हिरी होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – अयं तस्मिं समये हिरी होति।

३१९. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पं होति।

३२०. कतमा तस्मिं समये कायपस्सद्धि होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स पस्सद्धि पटिपस्सद्धि पस्सम्भना पटिपस्सम्भना पटिपस्सम्भितत्तं पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गो – अयं तस्मिं समये कायपस्सद्धि होति।

३२१. कतमा तस्मिं समये चित्तपस्सद्धि होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स पस्सद्धि पटिपस्सद्धि पस्सम्भना पटिपस्सम्भना पटिपस्सम्भितत्तं पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गो – अयं तस्मिं समये चित्तपस्सद्धि होति।

३२२. कतमा तस्मिं समये कायलहुता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – अयं तस्मिं समये कायलहुता होति।

३२३. कतमा तस्मिं समये चित्तलहुता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – अयं तस्मिं समये चित्तलहुता होति।

३२४. कतमा तस्मिं समये कायमुदुता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – अयं तस्मिं समये कायमुदुता होति।

३२५. कतमा तस्मिं समये चित्तमुदुता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – अयं तस्मिं समये चित्तमुदुता होति।

३२६. कतमा तस्मिं समये कायकम्मञ्ञता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – अयं तस्मिं समये कायकम्मञ्ञता होति।

३२७. कतमा तस्मिं समये चित्तकम्मञ्ञता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – अयं तस्मिं समये चित्तकम्मञ्ञता होति।

३२८. कतमा तस्मिं समये कायपागुञ्ञता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स पगुणता पगुणत्तं पगुणभावो – अयं तस्मिं समये कायपागुञ्ञता होति।

३२९. कतमा तस्मिं समये चित्तपागुञ्ञता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स पगुणता पगुणत्तं पगुणभावो – अयं तस्मिं समये चित्तपागुञ्ञता होति।

३३०. कतमा तस्मिं समये कायुजुकता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स

उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता – अयं तस्मिं समये कायुजुकता होति।

३३१. कतमा तस्मिं समये चित्तुजुकता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता – अयं तस्मिं समये चित्तुजुकता होति।

३३२. कतमा तस्मिं समये सति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति सतिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सति होति।

३३३. कतमं तस्मिं समये सम्पजञ्ञं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये सम्पजञ्ञं होति।

३३४. कतमो तस्मिं समये समथो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये समथो होति।

३३५. कतमा तस्मिं समये विपस्सना होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये विपस्सना होति।

३३६. कतमो तस्मिं समये पग्गाहो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो वीरियसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये पग्गाहो होति।

३३७. कतमो तस्मिं समये अविक्खेपो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, नविन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, अट्ठङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको

सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला…पे०… ।

३३८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावाचा सम्माकम्मन्तो सम्माआजीवो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

३३९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

३४०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

३४१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

३४२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा …पे०… दुतियं झानं…पे०… ततियं झानं…पे०… चतुत्थं झानं…पे०… पठमं झानं…पे०… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं…पे०… दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं…पे०… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

सुद्धिकपटिपदा।

सुञ्ञतं

३४३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला।

३४४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

सुञ्ञतं।

सुञ्ञतमूलकपटिपदा

३४५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३४६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३४७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३४८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३४९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

सुञ्ञतमूलकपटिपदा।

अप्पणिहितं

३५०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

अप्पणिहितं।

अप्पणिहितमूलकपटिपदा

३५२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

अप्पणिहितमूलकपटिपदा।

वीसति महानया

३५७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं मग्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सतिपट्ठानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सम्मप्पधानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इद्धिपादं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इन्द्रियं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बलं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बोज्झङ्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सच्चं भावेति...पे०... लोकुत्तरं समथं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धम्मं भावेति...पे०...

लोकुत्तरं खन्धं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आयतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धातुं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आहारं भावेति...पे०... लोकुत्तरं फस्सं भावेति...पे०... लोकुत्तरं वेदनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सञ्ञं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चेतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चित्तं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

वीसति महानया।

अधिपति

३५८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३६०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं मग्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सतिपट्ठानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सम्मप्पधानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इद्धिपादं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इन्द्रियं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बलं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बोज्झङ्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सच्चं भावेति...पे०... लोकुत्तरं समथं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धम्मं भावेति...पे०... लोकुत्तरं खन्धं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आयतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धातुं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आहारं भावेति...पे०... लोकुत्तरं फस्सं भावेति...पे०... लोकुत्तरं वेदनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सञ्ञं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चेतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चित्तं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

अधिपति।

पठमो मग्गो।

३६१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं कामरागब्यापादानं तनुभावाय दुतियाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

दुतियो मग्गो।

३६२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं कामरागब्यापादानं अनवसेसप्पहानाय ततियाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

ततियो मग्गो।

३६३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं रूपरागअरूपरागमानउद्धच्चअविज्जाय अनवसेसप्पहानाय चतुत्थाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला...पे०...।

३६४. कतमं तस्मिं समये अञ्ञिन्द्रियं होति? या तेसं धम्मानं ञातानं दिट्ठानं पत्तानं विदितानं सच्छिकतानं सच्छिकिरियाय पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं, इदं तस्मिं समये अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

चतुत्थो मग्गो।

लोकुत्तरं चित्तं।

द्वादस अकुसलानि

३६५. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छादिट्ठि होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, मोहो होति, अभिज्झा होति, मिच्छादिट्ठि होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

३६६. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

३६७. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

३६८. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

३६९. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

३७०. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

३७१. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना मिच्छासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

३७२. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

३७३. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये पीति होति।

३७४. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

३७५. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

३७६. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं मिच्छावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

३७७. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति?

३७८. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

३७९. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

३८०. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना

पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति।

३८१. कतमा तस्मिं समये मिच्छादिट्ठि होति? या तस्मिं समये दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो [पटिग्गाहो (सी॰ स्या॰)] अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो [विपरियेसगाहो (क॰)] – अयं तस्मिं समये मिच्छादिट्ठि होति।

३८२. कतमो तस्मिं समये मिच्छासङ्कप्पो होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना मिच्छासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये मिच्छासङ्कप्पो होति।

३८३. कतमो तस्मिं समये मिच्छावायामो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं मिच्छावायामो – अयं तस्मिं समये मिच्छावायामो होति।

३८४. कतमो तस्मिं समये मिच्छासमाधि होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – अयं तस्मिं समये मिच्छासमाधि होति।

३८५. कतमं तस्मिं समये वीरियबलं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं मिच्छावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियबलं होति।

३८६. कतमं तस्मिं समये समाधिबलं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिबलं होति।

३८७. कतमं तस्मिं समये अहिरिकबलं होति? यं तस्मिं समये न हिरीयति हिरियितब्बेन न हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये अहिरिकबलं होति।

३८८. कतमं तस्मिं समये अनोत्तप्पबलं होति? यं तस्मिं समये न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन न ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये अनोत्तप्पबलं होति।

३८९. कतमो तस्मिं समये लोभो होति? यो तस्मिं समये लोभो लुब्भना लुब्भितत्तं सारागो सारज्जना सारज्जितत्तं अभिज्झा लोभो अकुसलमूलं – अयं तस्मिं समये लोभो होति।

३९०. कतमो तस्मिं समये मोहो होति? यं तस्मिं समये अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो असंगाहना अपरियोगाहना असमपेक्खना अपच्चवेक्खना अपच्चक्खकम्मं दुम्मेज्झं बाल्यं असम्पजञ्ञं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – अयं तस्मिं समये मोहो होति।

३९१. कतमा तस्मिं समये अभिज्झा होति? यो तस्मिं समये लोभो लुब्भना लुब्भितत्तं सारागो सारज्जना सारज्जितत्तं

अभिज्झा लोभो अकुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अभिज्झा होति।

३९२. कतमा तस्मिं समये मिच्छादिट्ठि होति? या तस्मिं समये दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं तस्मिं समये मिच्छादिट्ठि होति।

३९३. कतमं तस्मिं समये अहिरिकं होति? यं तस्मिं समये न हिरीयति हिरियितब्बेन न हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये अहिरिकं होति।

३९४. कतमं तस्मिं समये अनोत्तप्पं होति? यं तस्मिं समये न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन न ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये अनोत्तप्पं होति।

३९५. कतमो तस्मिं समये समथो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – अयं तस्मिं समये समथो होति।

३९६. कतमो तस्मिं समये पग्गाहो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं मिच्छावायामो – अयं तस्मिं समये पग्गाहो होति।

३९७. कतमो तस्मिं समये अविक्खेपो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – अयं तस्मिं समये अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला…पे०…।

३९८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छादिट्ठि मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो मोहो अभिज्झा मिच्छादिट्ठि अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अकुसला।

३९९. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा…पे०… धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अकुसला।

४००. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, मोहो होति, अभिज्झा होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला…पे०…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, तिवङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला…पे०…।

४०१. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो मोहो अभिज्झा अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अकुसला।

४०२. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा…पे०… धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अकुसला।

४०३. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छादिट्ठि होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, मोहो होति, अभिज्झा होति, मिच्छादिट्ठि होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

४०४. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४०५. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं

नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति…पे०…।

४०६. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति…पे०…।

४०७. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति…पे०… ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला…पे०…।

४०८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छादिट्ठि मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो मोहो अभिज्झा मिच्छादिट्ठि अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अकुसला।

४०९. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा…पे०… धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अकुसला।

४१०. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, मोहो होति, अभिज्झा होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला…पे०…।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, तिवङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला…पे०…।

४११. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो मोहो अभिज्झा अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

४१२. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा...पे०... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

४१३. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति दोमनस्ससहगतं पटिघसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, दुक्खं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, दोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, दोसो होति, मोहो होति, ब्यापादो होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

४१४. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४१५. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं असातं चेतसिकं दुक्खं चेतोसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति...पे०...।

४१६. कतमं तस्मिं समये दुक्खं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं असातं चेतसिकं दुक्खं चेतोसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं तस्मिं समये दुक्खं होति...पे०...।

४१७. कतमं तस्मिं समये दोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं असातं चेतसिकं दुक्खं चेतोसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं तस्मिं समये दोमनस्सिन्द्रियं होति...पे०...।

४१८. कतमो तस्मिं समये दोसो होति? यो तस्मिं समये दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये दोसो होति...पे०...।

४१९. कतमो तस्मिं समये ब्यापादो होति? यो तस्मिं समये दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये ब्यापादो होति...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, तिवङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला…पे०…।

४२०. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं दोसो मोहो ब्यापादो अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अकुसला।

४२१. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति दोमनस्ससहगतं पटिघसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा…पे०… धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अकुसला।

४२२. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं विचिकिच्छासम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, वीरियबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, विचिकिच्छा होति, मोहो होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, पग्गाहो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

४२३. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति…पे०…।

४२४. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति…पे०…।

४२५. कतमा तस्मिं समये विचिकिच्छा होति? या तस्मिं समये कङ्खा कङ्खायना कङ्खायितत्तं विमति विचिकिच्छा द्वेळ्हकं द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो आसप्पना परिसप्पना अपरियोगाहना थम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो – अयं तस्मिं समये विचिकिच्छा होति…पे०… ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, चत्तारि इन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, दुवङ्गिको मग्गो होति, तीणि बलानि होन्ति, एको हेतु होति, एको फस्सो होति…पे०… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे

धम्मा अकुसला…पे॰…।

४२६. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो वीरियबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं विचिकिच्छा मोहो अहिरिकं अनोत्तप्पं पग्गाहो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं — अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे॰… इमे धम्मा अकुसला।

४२७. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं उद्धच्चसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा…पे॰… यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, उद्धच्चं होति, मोहो होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा — इमे धम्मा अकुसला।

४२८. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं — अयं तस्मिं समये फस्सो होति…पे॰…।

४२९. कतमं तस्मिं समये उद्धच्चं होति? यं तस्मिं समये चित्तस्स उद्धच्चं अवूपसमो चेतसो विक्खेपो भन्तत्तं चित्तस्स — इदं तस्मिं समये उद्धच्चं होति …पे॰… ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा — इमे धम्मा अकुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, तिवङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, एको हेतु होति, एको फस्सो होति…पे॰… एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा — इमे धम्मा अकुसला…पे॰…।

४३०. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं उद्धच्चं मोहो अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं — अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे॰… इमे धम्मा अकुसला।

द्वादस अकुसलचित्तानि।

अब्याकतविपाको

कुसलविपाकपञ्चविञ्ञाणानि

४३१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं चक्खुविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं रूपारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

४३२. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४३३. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४३४. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४३५. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

४३६. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४३७. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति।

४३८. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४३९. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

४४०. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति।

४४१. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका चक्खुविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन

तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता…पे०…।

४४२. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

४४३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सोतविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं सद्दारम्मणं…पे०… घानविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं गन्धारम्मणं…पे०… जिव्हाविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं रसारम्मणं…पे०… कायविञ्ञाणं उप्पन्नं होति सुखसहगतं फोट्ठब्बारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, सुखिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

४४४. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४४५. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जाकायविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं कायिकं सातं कायिकं सुखं कायसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं कायसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४४६. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जाकायविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४४७. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जाकायविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

४४८. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जाकायविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४४९. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये कायिकं सातं कायिकं सुखं कायसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं कायसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

४५०. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४५१. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जाकायविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

४५२. कतमं तस्मिं समये सुखिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये कायिकं सातं कायिकं सुखं कायसम्फस्सजं सातं सुखं

वेदयितं कायसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखिन्द्रियं होति।

४५३. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एका कायविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता…पे०…।

४५४. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

कुसलविपाकानि पञ्चविञ्ञाणानि।

कुसलविपाकमनोधातु

४५५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोधातु उप्पन्ना होति उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा…पे०… फोट्ठब्बारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

४५६. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४५७. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४५८. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४५९. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

४६०. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४६१. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

४६२. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

४६३. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति।

४६४. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४६५. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

४६६. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति।

४६७. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका मनोधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

४६८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

कुसलविपाका मनोधातु।

कुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातुसोमनस्ससहगता

४६९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति सोमनस्ससहगता रूपारम्मणा वा...पे०... धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि

पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

४७०. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४७१. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४७२. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४७३. कतमा तस्मिं समये चेतना होति। या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

४७४. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४७५. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

४७६. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

४७७. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये पीति होति।

४७८. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

४७९. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४८०. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

४८१. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

४८२. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना

पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता…पे०…।

४८३. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

कुसलविपाका मनोविञ्ञाणधातु सोमनस्ससहगता।

कुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातुउपेक्खासहगता

४८४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा…पे०… धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

४८५. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४८६. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४८७. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४८८. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

४८९. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४९०. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

४९१. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

४९२. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति।

४९३. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४९४. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

४९५. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति।

४९६. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता…पे०…।

४९७. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

कुसलविपाका उपेक्खासहगता मनोविञ्ञाणधातु।

अट्ठमहाविपाका

४९८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति सोमनस्ससहगता ञाणसम्पयुत्ता…पे०… सोमनस्ससहगता ञाणसम्पयुत्ता ससङ्खारेन…पे०… सोमनस्ससहगता ञाणविप्पयुत्ता…पे०… सोमनस्ससहगता ञाणविप्पयुत्ता ससङ्खारेन…पे०… उपेक्खासहगता ञाणसम्पयुत्ता…पे०… उपेक्खासहगता ञाणसम्पयुत्ता ससङ्खारेन…पे०… उपेक्खासहगता ञाणविप्पयुत्ता…पे०… उपेक्खासहगता ञाणविप्पयुत्ता ससङ्खारेन रूपारम्मणा वा…पे०… धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति …पे०… इमे धम्मा अब्याकता…पे०… अलोभो अब्याकतमूलं…पे०… अदोसो अब्याकतमूलं…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

अट्ठमहाविपाका।

रूपावचरविपाका

४९९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव रूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५००. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव रूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सुखस्स च पहाना...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

रूपावचरविपाका।

अरूपावचरविपाका

५०१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव अरूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव अरूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव अरूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव अरूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

अरूपावचरविपाका।

लोकुत्तरविपाक-पठममग्गविपाका

सुद्धिकपटिपदा

५०५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय

पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

सुद्धिकपटिपदा।

सुद्धिकसुञ्ञतं

५१०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५११. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५१२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५१३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे०... सुञ्ञतन्ति विपाको...पे०... सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे०... अनिमित्तन्ति विपाको...पे०... सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे०... अप्पणिहितन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

सुद्धिकसुञ्ञतं।

सुञ्ञतपटिपदा

५१४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५१५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५१६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५१७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे॰... दुतियं झानं...पे॰... ततियं झानं...पे॰... चतुत्थं झानं...पे॰... पठमं झानं...पे॰... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५१८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे॰... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं ...पे॰... दुतियं झानं...पे॰... ततियं झानं...पे॰... चतुत्थं झानं...पे॰... पठमं झानं...पे॰... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

सुञ्ञतपटिपदा।

सुद्धिकअप्पणिहितं

५१९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... अप्पणिहितन्ति विपाको...पे०... अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... अनिमित्तन्ति विपाको...पे०... अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... सुञ्ञतन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

सुद्धिकअप्पणिहितं।

अप्पणिहितपटिपदा

५२३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता

भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं... पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

अप्पणिहितपटिपदा।

वीसति महानया

५२८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं मग्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सतिपट्ठानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सम्मप्पधानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इद्धिपादं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इन्द्रियं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बलं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बोज्झङ्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सच्चं भावेति...पे०... लोकुत्तरं समथं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धम्मं भावेति...पे०... लोकुत्तरं खन्धं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आयतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धातुं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आहारं भावेति...पे०... लोकुत्तरं फस्सं भावेति...पे०... लोकुत्तरं वेदनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सञ्ञं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चेतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चित्तं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०...

पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे॰... अनिमित्तं ...पे॰... अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

वीसति महानया।

छन्दाधिपतेय्यसुद्धिकपटिपदा

५२९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५३०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५३१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५३२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे॰... दुतियं झानं...पे॰... ततियं झानं...पे॰... चतुत्थं झानं...पे॰... पठमं झानं...पे॰... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५३३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं...पे॰... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं...पे॰... दुतियं झानं...पे॰... ततियं झानं...पे॰... चतुत्थं झानं...पे॰... पठमं झानं...पे॰... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं

खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

छन्दाधिपतेय्यसुद्धिकपटिपदा।

छन्दाधिपतेय्यसुद्धिकसुञ्ञता

५३४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५३५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५३६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५३७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे॰... दुतियं झानं...पे॰... ततियं झानं...पे॰... चतुत्थं झानं...पे॰... पठमं झानं...पे॰... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे॰... सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे॰... सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे॰... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

छन्दाधिपतेय्यसुद्धिकसुञ्ञता।

५३८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं

छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

५३९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

५४०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

५४१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा…पे०… दुतियं झानं…पे०… ततियं झानं…पे०… चतुत्थं झानं…पे०… पठमं झानं…पे०… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं…पे०… दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

५४२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं…पे०… सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं…पे०… दुतियं झानं…पे०… ततियं झानं…पे०… चतुत्थं झानं…पे०… पठमं झानं …पे०… पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं…पे०… सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

५४३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि…पे०… पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति…पे०… अविक्खेपो होति…पे०… इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता

विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स

झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५५०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५५१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५५२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं मग्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सतिपट्ठानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सम्मप्पधानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इद्धिपादं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इन्द्रियं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बलं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बोज्झङ्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सच्चं भावेति...पे०... लोकुत्तरं समथं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धम्मं भावेति...पे०... लोकुत्तरं खन्धं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आयतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धातुं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आहारं भावेति...पे०... लोकुत्तरं फस्सं भावेति...पे०... लोकुत्तरं वेदनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सञ्ञं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चेतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चित्तं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे०... अनिमित्तं...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

पठममग्गविपाको।

दुतियादिमग्गविपाको

५५३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं कामरागब्यापादानं तनुभावाय दुतियाय भूमिया पत्तिया...पे०... कामरा गब्यापादानं अनवसेसप्पहानाय ततियाय भूमिया पत्तिया...पे०... रूपरागअरूपरागमानउद्धच्चअविज्जाय अनवसेसप्पहानाय चतुत्थाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञाताविन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

५५४. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...।

५५५. कतमं तस्मिं समये अञ्ञाताविन्द्रियं होति? या तेसं अञ्ञातावीनं धम्मानं अञ्ञा पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये अञ्ञाताविन्द्रियं होति...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

दुतियादिमग्गविपाको।

लोकुत्तरविपाको।

अकुसलविपाकअब्याकतं

अकुसलविपाकपञ्चविञ्ञाणानि

५५६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं चक्खुविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं रूपारम्मणं...पे०... सोतविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं सद्दारम्मणं...पे०... घानविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं गन्धारम्मणं ...पे०... जिव्हाविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं रसारम्मणं...पे०... कायविञ्ञाणं उप्पन्नं होति दुक्खसहगतं फोट्ठब्बारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, दुक्खं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, दुक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

५५७. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

५५८. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जाकायविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं कायिकं असातं कायिकं दुक्खं कायसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं कायसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति...

पे०...।

५५९. कतमं तस्मिं समये दुक्खं होति? यं तस्मिं समये कायिकं असातं कायिकं दुक्खं कायसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं कायसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं तस्मिं समये दुक्खं होति...पे०...।

५६०. कतमं तस्मिं समये दुक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये कायिकं असातं कायिकं दुक्खं कायसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं कायसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं तस्मिं समये दुक्खिन्द्रियं होति...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका कायविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

५६१. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

अकुसलविपाकपञ्चविञ्ञाणानि।

अकुसलविपाकमनोधातु

५६२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोधातु उप्पन्ना होति उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा...पे०... फोट्ठब्बारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका मनोधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

५६३. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

अकुसलविपाका मनोधातु।

अकुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातु

५६४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा...पे०... धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

५६५. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

अकुसलविपाका मनोविञ्ञाणधातु।

विपाका अब्याकता।

अहेतुककिरियाअब्याकतं

किरियामनोधातु

५६६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये मनोधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा...पे०... फोट्ठब्बारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका मनोधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

५६७. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

किरिया मनोधातु।

किरियामनोविञ्ञाणधातुसोमनस्ससहगता

५६८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका सोमनस्ससहगता रूपारम्मणा वा…पे०… धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

५६९. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति…पे०…।

५७०. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

५७१. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

५७२. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति…पे०… ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति…पे०… एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता…पे०…।

५७३. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति…पे०… इमे धम्मा अब्याकता।

किरिया मनोविञ्ञाणधातु सोमनस्ससहगता।

किरियामनोविञ्ञाणधातुउपेक्खासहगता

५७४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा…पे०… धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये

अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे॰...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे॰... एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे॰...।

५७५. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

किरिया मनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता।

अहेतुका किरिया अब्याकता।

सहेतुककामावचरकिरिया

५७६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका सोमनस्ससहगता ञाणसम्पयुत्ता...पे॰... सोमनस्ससहगता ञाणसम्पयुत्ता ससङ्खारेन...पे॰... सोमनस्ससहगता ञाणविप्पयुत्ता...पे॰... सोमनस्ससहगता ञाणविप्पयुत्ता ससङ्खारेन...पे॰... उपेक्खासहगता ञाणसम्पयुत्ता...पे॰... उपेक्खासहगता ञाणसम्पयुत्ता ससङ्खारेन...पे॰... उपेक्खासहगता ञाणविप्पयुत्ता...पे॰... उपेक्खासहगता ञाणविप्पयुत्ता ससङ्खारेन रूपारम्मणा वा...पे॰... धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति ...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता...पे॰... अलोभो अब्याकतमूलं...पे॰... अदोसो अब्याकतमूलं...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

सहेतुका कामावचरकिरिया।

रूपावचरकिरिया

५७७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये रूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं विविच्चेव कामेहि...पे॰... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

५७८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये रूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं वितक्कविचारानं वूपसमा...पे॰... दुतियं झानं...पे॰... ततियं झानं...पे॰... चतुत्थं झानं...पे॰... पठमं झानं...पे॰... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति...पे॰... इमे धम्मा अब्याकता।

रूपावचरकिरिया।

अरूपावचरकिरिया

५७९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५८०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५८१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५८२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता...पे०... अलोभो अब्याकतमूलं...पे०... अदोसो अब्याकतमूलं...पे०... अमोहो अब्याकतमूलं...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

अरूपावचरकिरिया।

किरिया अब्याकता।

चित्तुप्पादकण्डं निट्ठितं।

२. रूपकण्डं

उद्देसो

५८३. कतमे धम्मा अब्याकता? कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका कामावचरा रूपावचरा अरूपावचरा अपरियापन्ना वेदनाक्खन्धो सञ्ञाक्खन्धो सङ्खारक्खन्धो विञ्ञाणक्खन्धो, ये च धम्मा किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अब्याकता।

मातिका

एककं

५८४. तत्थ कतमं सब्बं रूपं? चत्तारो च महाभूता, चतुन्नञ्च महाभूतानं उपादाय रूपं – इदं वुच्चति सब्बं रूपं। सब्बं रूपं न हेतु, अहेतुकं, हेतुविप्पयुत्तं, सप्पच्चयं, सङ्खतं, रूपं [रूपियं (सी॰)], लोकियं, सासवं, संयोजनियं, गन्थनियं, ओघनियं, योगनियं, नीवरणियं, परामट्ठं, उपादानियं, संकिलेसिकं, अब्याकतं, अनारम्मणं, अचेतसिकं, चित्तविप्पयुत्तं, नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मं, असंकिलिट्ठसंकिलेसिकं, न सवितक्कसविचारं, न अवितक्कविचारमत्तं, अवितक्कअविचारं, न पीतिसहगतं, न सुखसहगतं, न उपेक्खासहगतं, नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बं, नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुकं, नेव आचयगामि न अपचयगामि, नेवसेक्खनासेक्खं, परित्तं, कामावचरं, न रूपावचरं, न अरूपावचरं, परियापन्नं, नो अपरियापन्नं, अनियतं, अनिय्यानिकं, उप्पन्नं, छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यं, अनिच्चं, जराभिभूतं।

एवं एकविधेन रूपसङ्गहो।

एककं।

दुकं

दुविधेन रूपसङ्गहो –

अत्थि रूपं उपादा, अत्थि रूपं नो उपादा।

अत्थि रूपं उपादिण्णं, अत्थि रूपं अनुपादिण्णं।

अत्थि रूपं उपादिण्णुपादानियं, अत्थि रूपं अनुपादिण्णुपादानियं।

अत्थि रूपं सनिदस्सनं, अत्थि रूपं अनिदस्सनं।

अत्थि रूपं सप्पटिघं, अत्थि रूपं अप्पटिघं।

अत्थि रूपं इन्द्रियं, अत्थि रूपं न इन्द्रियं।

अत्थि रूपं महाभूतं, अत्थि रूपं न महाभूतं।

अत्थि रूपं विञ्ञत्ति, अत्थि रूपं न विञ्ञत्ति।

अत्थि रूपं चित्तसमुट्ठानं, अत्थि रूपं न चित्तसमुट्ठानं।

अत्थि रूपं चित्तसहभु, अत्थि रूपं न चित्तसहभु।

अत्थि रूपं चित्तानुपरिवत्ति, अत्थि रूपं न चित्तानुपरिवत्ति।

अत्थि रूपं अज्झत्तिकं, अत्थि रूपं बाहिरं।

अत्थि रूपं ओळारिकं, अत्थि रूपं सुखुमं।

अत्थि रूपं दूरे, अत्थि रूपं सन्तिके।

अत्थि रूपं चक्खुसम्फस्सस्स वत्थु, अत्थि रूपं चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु। अत्थि रूपं चक्खुसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय...पे०... चक्खुविञ्ञाणस्स वत्थु, अत्थि रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु।

अत्थि रूपं सोतसम्फस्सस्स...पे०... घानसम्फस्सस्स...पे०... जिव्हासम्फस्सस्स...पे०... कायसम्फस्सस्स वत्थु, अत्थि रूपं कायसम्फस्सस्स न वत्थु। अत्थि रूपं कायसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय ...पे०... कायविञ्ञाणस्स वत्थु, अत्थि रूपं कायविञ्ञाणस्स न वत्थु।

अत्थि रूपं चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं, अत्थि रूपं चक्खुसम्फस्सस्स नारम्मणं। अत्थि रूपं चक्खुसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय...पे०... चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणं, अत्थि रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स नारम्मणं।

अत्थि रूपं सोतसम्फस्सस्स...पे०... घानसम्फस्सस्स...पे०... जिव्हासम्फस्सस्स...पे०... कायसम्फस्सस्स आरम्मणं, अत्थि रूपं कायसम्फस्सस्स नारम्मणं। अत्थि रूपं कायसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय...पे०... कायविञ्ञाणस्स आरम्मणं, अत्थि रूपं कायविञ्ञाणस्स नारम्मणं।

अत्थि रूपं चक्खायतनं, अत्थि रूपं न चक्खायतनं। अत्थि रूपं सोतायतनं...पे०... घानायतनं...पे०... जिव्हायतनं...पे०... कायायतनं, अत्थि रूपं न कायायतनं।

अत्थि रूपं रूपायतनं, अत्थि रूपं न रूपायतनं। अत्थि रूपं सद्दायतनं...पे०... गन्धायतनं...पे०... रसायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं, अत्थि रूपं न फोट्ठब्बायतनं।

अत्थि रूपं चक्खुधातु, अत्थि रूपं न चक्खुधातु। अत्थि रूपं सोतधातु...पे०... घानधातु...पे०... जिव्हाधातु...पे०... कायधातु, अत्थि रूपं न कायधातु।

अत्थि रूपं रूपधातु, अत्थि रूपं न रूपधातु। अत्थि रूपं सद्दधातु...पे०... गन्धधातु...पे०... रसधातु...पे०... फोट्ठब्बधातु, अत्थि रूपं न फोट्ठब्बधातु।

अत्थि रूपं चक्खुन्द्रियं, अत्थि रूपं न चक्खुन्द्रियं। अत्थि रूपं सोतिन्द्रियं...पे०... घानिन्द्रियं...पे०... जिव्हिन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं, अत्थि रूपं न कायिन्द्रियं।

अत्थि रूपं इत्थिन्द्रियं, अत्थि रूपं न इत्थिन्द्रियं।

अत्थि रूपं पुरिसिन्द्रियं, अत्थि रूपं न पुरिसिन्द्रियं।

अत्थि रूपं जीवितिन्द्रियं, अत्थि रूपं न जीवितिन्द्रियं।

अत्थि रूपं कायविञ्ञत्ति, अत्थि रूपं न कायविञ्ञत्ति।

अत्थि रूपं वचीविञ्ञत्ति, अत्थि रूपं न वचीविञ्ञत्ति।

अत्थि रूपं आकासधातु, अत्थि रूपं न आकासधातु।

अत्थि रूपं आपोधातु, अत्थि रूपं न आपोधातु।

अत्थि रूपं रूपस्स लहुता, अत्थि रूपं रूपस्स न लहुता।

अत्थि रूपं रूपस्स मुदुता, अत्थि रूपं रूपस्स न मुदुता।

अत्थि रूपं रूपस्स कम्मञ्ञता, अत्थि रूपं रूपस्स न कम्मञ्ञता।

अत्थि रूपं रूपस्स उपचयो, अत्थि रूपं रूपस्स न उपचयो।

अत्थि रूपं रूपस्स सन्तति, अत्थि रूपं रूपस्स न सन्तति।

अत्थि रूपं रूपस्स जरता, अत्थि रूपं रूपस्स न जरता।

अत्थि रूपं रूपस्स अनिच्चता, अत्थि रूपं रूपस्स न अनिच्चता।

अत्थि रूपं कबळीकारो आहारो, अत्थि रूपं न कबळीकारो आहारो।

एवं दुविधेन रूपसङ्गहो।

दुकं।

तिकं

तिविधेन रूपसङ्गहो –

५८५. यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं उपादा। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि उपादा, अत्थि नो उपादा।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं उपादिण्णं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि उपादिण्णं, अत्थि अनुपादिण्णं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं उपादिण्णुपादानियं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि उपादिण्णुपादानियं, अत्थि अनुपादिण्णुपादानियं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अनिदस्सनं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि सनिदस्सनं, अत्थि अनिदस्सनं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं सप्पटिघं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि सप्पटिघं, अत्थि अप्पटिघं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं इन्द्रियं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि इन्द्रियं, अत्थि न इन्द्रियं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न महाभूतं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न विञ्ञत्ति। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि विञ्ञत्ति, अत्थि न विञ्ञत्ति।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न चित्तसमुट्ठानं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि चित्तसमुट्ठानं, अत्थि न चित्तसमुट्ठानं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न चित्तसहभु। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि चित्तसहभु, अत्थि न चित्तसहभु।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न चित्तानुपरिवत्ति। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि चित्तानुपरिवत्ति, अत्थि न चित्तानुपरिवत्ति।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं ओळारिकं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं सन्तिके। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके।

यं तं रूपं बाहिरं, तं चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स वत्थु, अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु।

यं तं रूपं बाहिरं, तं चक्खुसम्फस्सजाय वेदनाय...पे॰... सञ्ञाय...पे॰... चेतनाय...पे॰... चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि चक्खुविञ्ञाणस्स वत्थु, अत्थि चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु।

यं तं रूपं बाहिरं, तं सोतसम्फस्सस्स...पे॰... घानसम्फस्सस्स...पे॰... जिव्हासम्फस्सस्स...पे॰... कायसम्फस्सस्स न वत्थु। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि कायसम्फस्सस्स वत्थु, अत्थि कायसम्फस्सस्स न वत्थु। यं तं रूपं बाहिरं, तं कायसम्फस्सजाय वेदनाय...पे॰... सञ्ञाय...पे॰... चेतनाय...पे॰... कायविञ्ञाणस्स न वत्थु। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि कायविञ्ञाणस्स वत्थु, अत्थि कायविञ्ञाणस्स न वत्थु।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं चक्खुसम्फस्सस्स नारम्मणं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं, अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स नारम्मणं। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं चक्खुसम्फस्सजाय वेदनाय...पे॰... सञ्ञाय...पे॰... चेतनाय...पे॰... चक्खुविञ्ञाणस्स नारम्मणं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणं, अत्थि चक्खुविञ्ञाणस्स नारम्मणं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं सोतसम्फस्सस्स...पे॰... घानसम्फस्सस्स...पे॰... जिव्हासम्फस्सस्स...पे॰... कायसम्फस्सस्स नारम्मणं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि कायसम्फस्सस्स आरम्मणं, अत्थि कायसम्फस्सस्स नारम्मणं। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं कायसम्फस्सजाय वेदनाय...पे॰... सञ्ञाय...पे॰... चेतनाय...पे॰... कायविञ्ञाणस्स नारम्मणं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि कायविञ्ञाणस्स आरम्मणं, अत्थि कायविञ्ञाणस्स नारम्मणं।

यं तं रूपं बाहिरं, तं न चक्खायतनं। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि चक्खायतनं, अत्थि न चक्खायतनं। यं तं रूपं

बाहिरं, तं न सोतायतनं...पे०... न घानायतनं...पे०... न जिव्हायतनं...पे०... न कायायतनं। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि कायायतनं, अत्थि न कायायतनं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न रूपायतनं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपायतनं, अत्थि न रूपायतनं। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न सद्दायतनं...पे०... न गन्धायतनं...पे०... न रसायतनं...पे०... न फोट्ठब्बायतनं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि फोट्ठब्बायतनं, अत्थि न फोट्ठब्बायतनं।

यं तं रूपं बाहिरं, तं न चक्खुधातु। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि चक्खुधातु, अत्थि न चक्खुधातु। यं तं रूपं बाहिरं, तं न सोतधातु...पे०... न घानधातु...पे०... न जिव्हाधातु...पे०... न कायधातु। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि कायधातु, अत्थि न कायधातु।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न रूपधातु। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपधातु, अत्थि न रूपधातु। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न सद्दधातु...पे०... न गन्धधातु...पे०... न रसधातु...पे०... न फोट्ठब्बधातु। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि फोट्ठब्बधातु, अत्थि न फोट्ठब्बधातु।

यं तं रूपं बाहिरं, तं न चक्खुन्द्रियं। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि चक्खुन्द्रियं, अत्थि न चक्खुन्द्रियं। यं तं रूपं बाहिरं, तं न सोतिन्द्रियं...पे०... न घानिन्द्रियं...पे०... न जिव्हिन्द्रियं...पे०... न कायिन्द्रियं। यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं अत्थि कायिन्द्रियं, अत्थि न कायिन्द्रियं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न इत्थिन्द्रियं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि इत्थिन्द्रियं, अत्थि न इत्थिन्द्रियं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न पुरिसिन्द्रियं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि पुरिसिन्द्रियं, अत्थि न पुरिसिन्द्रियं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न जीवितिन्द्रियं। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि जीवितिन्द्रियं, अत्थि न जीवितिन्द्रियं।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न कायविञ्ञत्ति। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि कायविञ्ञत्ति, अत्थि न कायविञ्ञत्ति।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न वचीविञ्ञत्ति। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि वचीविञ्ञत्ति, अत्थि न वचीविञ्ञत्ति।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न आकासधातु। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि आकासधातु, अत्थि न आकासधातु।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न आपोधातु। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि आपोधातु, अत्थि न आपोधातु।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं रूपस्स न लहुता। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपस्स लहुता, अत्थि रूपस्स न लहुता।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं रूपस्स न मुदुता। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपस्स मुदुता, अत्थि रूपस्स न मुदुता।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं रूपस्स न कम्मञ्ञता। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपस्स कम्मञ्ञता, अत्थि रूपस्स न कम्मञ्ञता।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं रूपस्स न उपचयो। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपस्स उपचयो, अत्थि रूपस्स न उपचयो।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं रूपस्स न सन्तति। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपस्स सन्तति, अत्थि रूपस्स न सन्तति।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं रूपस्स न जरता। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपस्स जरता, अत्थि रूपस्स न जरता।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं रूपस्स न अनिच्चता। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि रूपस्स अनिच्चता, अत्थि रूपस्स न अनिच्चता।

यं तं रूपं अज्झत्तिकं, तं न कबळीकारो आहारो। यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि कबळीकारो आहारो, अत्थि न कबळीकारो आहारो।

एवं तिविधेन रूपसङ्गहो।

तिकं।

चतुक्कं

चतुब्बिधेन रूपसङ्गहो –

५८६. यं तं रूपं उपादा, तं अत्थि उपादिण्णं, अत्थि अनुपादिण्णं। यं तं रूपं नो उपादा, तं अत्थि उपादिण्णं, अत्थि अनुपादिण्णं।

यं तं रूपं उपादा, तं अत्थि उपादिण्णुपादानियं, अत्थि अनुपादिण्णुपादानियं। यं तं रूपं नो उपादा, तं अत्थि उपादिण्णुपादानियं, अत्थि अनुपादिण्णुपादानियं।

यं तं रूपं उपादा, तं अत्थि सप्पटिघं, अत्थि अप्पटिघं। यं तं रूपं नो उपादा, तं अत्थि सप्पटिघं, अत्थि अप्पटिघं।

यं तं रूपं उपादा, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं नो उपादा, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं उपादा, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके। यं तं रूपं नो उपादा, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके।

यं तं रूपं उपादिण्णं, तं अत्थि सनिदस्सनं, अत्थि अनिदस्सनं। यं तं रूपं अनुपादिण्णं, तं अत्थि सनिदस्सनं, अत्थि अनिदस्सनं।

यं तं रूपं उपादिण्णं, तं अत्थि सप्पटिघं अत्थि अप्पटिघं। यं तं रूपं अनुपादिण्णं, तं अत्थि सप्पटिघं, अत्थि अप्पटिघं।

यं तं रूपं उपादिण्णं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं। यं तं रूपं अनुपादिण्णं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं।

यं तं रूपं उपादिण्णं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं अनुपादिण्णं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं उपादिण्णं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके। यं तं रूपं अनुपादिण्णं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके।

यं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि सनिदस्सनं, अत्थि अनिदस्सनं। यं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि सनिदस्सनं, अत्थि अनिदस्सनं।

यं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि सप्पटिघं, अत्थि अप्पटिघं। यं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि सप्पटिघं, अत्थि अप्पटिघं।

यं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं। यं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं।

यं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके। यं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके।

यं तं रूपं सप्पटिघं, तं अत्थि इन्द्रियं, अत्थि न इन्द्रियं। यं तं रूपं अप्पटिघं, तं अत्थि इन्द्रियं, अत्थि न इन्द्रियं।

यं तं रूपं सप्पटिघं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं। यं तं रूपं अप्पटिघं, तं अत्थि महाभूतं, अत्थि न महाभूतं।

यं तं रूपं इन्द्रियं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं न इन्द्रियं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं इन्द्रियं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके। यं तं रूपं न इन्द्रियं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके।

यं तं रूपं महाभूतं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं। यं तं रूपं न महाभूतं, तं अत्थि ओळारिकं, अत्थि सुखुमं।

यं तं रूपं महाभूतं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके। यं तं रूपं न महाभूतं, तं अत्थि दूरे, अत्थि सन्तिके।

दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातं रूपं।

एवं चतुब्बिधेन रूपसङ्गहो।

चतुक्कं।

पञ्चकं

पञ्चविधेन रूपसङ्गहो –

५८७. पथवीधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायोधातु, यञ्च रूपं उपादा।

एवं पञ्चविधेन रूपसङ्गहो।

पञ्चकं।

छक्कं

छब्बिधेन रूपसङ्गहो –

५८८. चक्खुविञ्ञेय्यं रूपं, सोतविञ्ञेय्यं रूपं, घानविञ्ञेय्यं रूपं, जिव्हाविञ्ञेय्यं रूपं, कायविञ्ञेय्यं रूपं, मनोविञ्ञेय्यं रूपं।

एवं छब्बिधेन रूपसङ्गहो।

छक्कं।

सत्तकं

सत्तविधेन रूपसङ्गहो –

५८९. चक्खुविञ्ञेय्यं रूपं, सोतविञ्ञेय्यं रूपं, घानविञ्ञेय्यं रूपं, जिव्हाविञ्ञेय्यं रूपं, कायविञ्ञेय्यं रूपं, मनोधातुविञ्ञेय्यं रूपं, मनोविञ्ञाणधातुविञ्ञेय्यं रूपं।

एवं सत्तविधेन रूपसङ्गहो।

सत्तकं।

अट्ठकं

अट्ठविधेन रूपसङ्गहो –

५९०. चक्खुविञ्ञेय्यं रूपं, सोतविञ्ञेय्यं रूपं, घानविञ्ञेय्यं रूपं, जिव्हाविञ्ञेय्यं रूपं, कायविञ्ञेय्यं रूपं, अत्थि सुखसम्फस्सं, अत्थि दुक्खसम्फस्सं, मनोधातुविञ्ञेय्यं रूपं, मनोविञ्ञाणधातुविञ्ञेय्यं रूपं।

एवं अट्ठविधेन रूपसङ्गहो।

अट्ठकं।

नवकं

नवविधेन रूपसङ्गहो –

५९१. चक्खुन्द्रियं, सोतिन्द्रियं, घानिन्द्रियं, जिव्हिन्द्रियं कायिन्द्रियं, इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं, यञ्च रूपं न इन्द्रियं।

एवं नवविधेन रूपसङ्गहो।

नवकं।

दसकं

दसविधेन रूपसङ्गहो –

५९२. चक्खुन्द्रियं, सोतिन्द्रियं, घानिन्द्रियं, जिव्हिन्द्रियं कायिन्द्रियं, इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं, न इन्द्रियं रूपं अत्थि सप्पटिघं, अत्थि अप्पटिघं।

एवं दसविधेन रूपसङ्गहो।

दसकं।

एकादसकं

एकादसविधेन रूपसङ्गहो –

५९३. चक्खायतनं, सोतायतनं, घानायतनं, जिव्हायतनं, कायायतनं, रूपायतनं, सद्दायतनं, गन्धायतनं, रसायतनं, फोट्ठब्बायतनं, यञ्च रूपं अनिदस्सनअप्पटिघं [अनिदस्सनं अप्पटिघं (सी॰ स्या॰)] धम्मायतनपरियापन्नं।

एवं एकादसविधेन रूपसङ्गहो।

एकादसकं।

मातिका।

रूपविभत्ति

एककनिद्देसो

५९४. सब्बं रूपं न हेतुमेव, अहेतुकमेव, हेतुविप्पयुत्तमेव, सप्पच्चयमेव, सङ्खतमेव, रूपमेव, लोकियमेव,

सासवमेव, संयोजनियमेव, गन्थनियमेव, ओघनियमेव, योगनियमेव, नीवरणियमेव, परामट्ठमेव, उपादानियमेव, संकिलेसिकमेव, अब्याकतमेव, अनारम्मणमेव, अचेतसिकमेव, चित्तविप्पयुत्तमेव, नेवविपाकनविपाकधम्मधम्ममेव, असंकिलिट्ठसंकिलेसिकमेव, न सवितक्कसविचारमेव, न अवितक्कविचारमत्तमेव, अवितक्कअविचारमेव, न पीतिसहगतमेव, न सुखसहगतमेव, न उपेक्खासहगतमेव, नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बमेव, नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुकमेव, नेव आचयगामि न अपचयगामिमेव, नेवसेक्खनासेक्खमेव, परित्तमेव, कामावचरमेव, न रूपावचरमेव, न अरूपावचरमेव, परियापन्नमेव, नो अपरियापन्नमेव, अनियतमेव, अनिय्यानिकमेव, उप्पन्नं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यमेव, अनिच्चमेव, जराभिभूतमेव।

एवं एकविधेन रूपसङ्गहो।

एककनिद्देसो।

दुकनिद्देसो

उपादाभाजनीयं

५९५. कतमं तं रूपं उपादा? चक्खायतनं, सोतायतनं, घानायतनं, जिव्हायतनं, कायायतनं, रूपायतनं, सद्दायतनं, गन्धायतनं, रसायतनं, इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं, कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति, आकासधातु, रूपस्स लहुता, रूपस्स मुदुता, रूपस्स कम्मञ्ञता, रूपस्स उपचयो, रूपस्स सन्तति, रूपस्स जरता, रूपस्स अनिच्चता, कबळीकारो आहारो।

५९६. कतमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु [चक्खुं (सी॰ स्या॰)] चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, येन चक्खुना अनिदस्सनेन सप्पटिघेन रूपं सनिदस्सनं सप्पटिघं पस्सि वा पस्सति वा पस्सिस्सति वा पस्से वा, चक्खुं पेतं चक्खायतनं पेतं चक्खुधातु पेसा चक्खुन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं नेत्तं पेतं नयनं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामोपेसो – इदं तं रूपं चक्खायतनं।

५९७. कतमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यम्हि चक्खुम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि रूपं सनिदस्सनं सप्पटिघं पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, चक्खुं पेतं चक्खायतनं पेतं चक्खुधातु पेसा चक्खुन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं नेत्तं पेतं नयनं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं चक्खायतनं।

५९८. कतमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं चक्खु अनिदस्सनं सप्पटिघं रूपम्हि सनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, चक्खुं पेतं चक्खायतनं पेतं चक्खुधातु पेसा चक्खुन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं नेत्तं पेतं नयनं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं चक्खायतनं।

५९९. कतमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं चक्खुं निस्साय रूपं आरब्भ चक्खुसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे॰…

यं चक्खुं निस्साय रूपं आरब्भ चक्खुसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं चक्खुं निस्साय रूपारम्मणो चक्खुसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं चक्खुं निस्साय रूपारम्मणा चक्खुसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, चक्खुं पेतं चक्खायतनं पेतं चक्खुधातु पेसा चक्खुन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं नेत्तं पेतं नयनं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं चक्खायतनं।

६००. कतमं तं रूपं सोतायतनं? यं सोतं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, येन सोतेन अनिदस्सनेन सप्पटिघेन सद्दं अनिदस्सनं सप्पटिघं सुणि वा सुणाति वा सुणिस्सति वा सुणे वा, सोतं पेतं सोतायतनं पेतं सोतधातु पेसा सोतिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं सोतायतनं।

६०१. कतमं तं रूपं सोतायतनं? यं सोतं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यम्हि सोतम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि सद्दो अनिदस्सनो सप्पटिघो पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, सोतं पेतं सोतायतनं पेतं सोतधातु पेसा सोतिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं सोतायतनं।

६०२. कतमं तं रूपं सोतायतनं? यं सोतं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं सोतं अनिदस्सनं सप्पटिघं सद्दम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, सोतं पेतं सोतायतनं पेतं सोतधातु पेसा सोतिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं सोतायतनं।

६०३. कतमं तं रूपं सोतायतनं? यं सोतं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं सोतं निस्साय सद्दं आरब्भ सोतसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं सोतं निस्साय सद्दं आरब्भ सोतसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... सोतविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं सोतं निस्साय सद्दारम्मणो सोतसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं सोतं निस्साय सद्दारम्मणा सोतसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... सोतविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, सोतं पेतं सोतायतनं पेतं सोतधातु पेसा सोतिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं सोतायतनं।

६०४. कतमं तं रूपं घानायतनं? यं घानं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, येन घानेन अनिदस्सनेन सप्पटिघेन गन्धं अनिदस्सनं सप्पटिघं घायि वा घायति वा घायिस्सति वा घाये वा, घानं पेतं घानायतनं पेतं घानधातु पेसा घानिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं घानायतनं।

६०५. कतमं तं रूपं घानायतनं? यं घानं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो

सप्पटिघो, यम्हि घानम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि गन्धो अनिदस्सनो सप्पटिघो पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, घानं पेतं घानायतनं पेतं घानधातु पेसा घानिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं घानायतनं।

६०६. कतमं तं रूपं घानायतनं? यं घानं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं घानं अनिदस्सनं सप्पटिघं गन्धम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, घानं पेतं घानायतनं पेतं घानधातु पेसा घानिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामोपेसो – इदं तं रूपं घानायतनं।

६०७. कतमं तं रूपं घानायतनं? यं घानं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं घानं निस्साय गन्धं आरब्भ घानसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं घानं निस्साय गन्धं आरब्भ घानसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... घानविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं घानं निस्साय गन्धारम्मणो घानसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं घानं निस्साय गन्धारम्मणा घानसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... घानविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, घानं पेतं घानायतनं पेतं घानधातु पेसा घानिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं घानायतनं।

६०८. कतमं तं रूपं जिव्हायतनं? या जिव्हा चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, याय जिव्हाय अनिदस्सनाय सप्पटिघाय रसं अनिदस्सनं सप्पटिघं सायि वा सायति वा सायिस्सति वा साये वा, जिव्हा पेसा जिव्हायतनं पेतं जिव्हाधातु पेसा जिव्हिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं जिव्हायतनं।

६०९. कतमं तं रूपं जिव्हायतनं? या जिव्हा चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, याय जिव्हाय अनिदस्सनाय सप्पटिघाय रसो अनिदस्सनो सप्पटिघो पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, जिव्हा पेसा जिव्हायतनं पेतं जिव्हाधातु पेसा जिव्हिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं जिव्हायतनं।

६१०. कतमं तं रूपं जिव्हायतनं? या जिव्हा चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, या जिव्हा अनिदस्सना सप्पटिघा रसम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, जिव्हा पेसा जिव्हायतनं पेतं जिव्हाधातु पेसा जिव्हिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं जिव्हायतनं।

६११. कतमं तं रूपं जिव्हायतनं? या जिव्हा चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं जिव्हं निस्साय रसं आरब्भ जिव्हासम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं जिव्हं निस्साय रसं आरब्भ जिव्हासम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... जिव्हाविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं जिव्हं निस्साय रसारम्मणो जिव्हासम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा

उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं जिव्हं निस्साय रसारम्मणा जिव्हासम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... जिव्हाविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, जिव्हा पेसा जिव्हायतनं पेतं जिव्हाधातु पेसा जिव्हिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं जिव्हायतनं।

६१२. कतमं तं रूपं कायायतनं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, येन कायेन अनिदस्सनेन सप्पटिघेन फोट्ठब्बं अनिदस्सनसप्पटिघं फुसि वा फुसति वा फुसिस्सति वा फुसे वा, कायो पेसो कायायतनं पेतं कायधातु पेसा कायिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं कायायतनं।

६१३. कतमं तं रूपं कायायतनं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यम्हि कायम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि फोट्ठब्बो अनिदस्सनो सप्पटिघो पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, कायो पेसो कायायतनं पेतं कायधातु पेसा कायिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं कायायतनं।

६१४. कतमं तं रूपं कायायतनं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यो कायो अनिदस्सनो सप्पटिघो फोट्ठब्बम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, कायो पेसो कायायतनं पेतं कायधातु पेसा कायिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं कायायतनं।

६१५. कतमं तं रूपं कायायतनं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं कायं निस्साय फोट्ठब्बं आरब्भ कायसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं कायं निस्साय फोट्ठब्बं आरब्भ कायसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... कायविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं कायं निस्साय फोट्ठब्बारम्मणो कायसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं कायं निस्साय फोट्ठब्बारम्मणा कायसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... कायविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, कायो पेसो कायायतनं पेतं कायधातु पेसा कायिन्द्रियं पेतं लोको पेसो द्वारा पेसा समुद्दो पेसो पण्डरं पेतं खेत्तं पेतं वत्थुं पेतं ओरिमं तीरं पेतं सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं कायायतनं।

६१६. कतमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं नीलं पीतकं लोहितकं ओदातं काळकं मञ्जिट्ठकं [मञ्जेट्ठकं (सी० स्या०)] हरि हरिवण्णं अम्बङ्कुरवण्णं दीघं रस्सं अणुं थूलं वट्टं परिमण्डलं चतुरंसं [चतुरस्सं (सी० क०)] छळंसं अट्ठंसं सोळसंसं निन्नं थलं छाया आतपो आलोको अन्धकारो अब्भा महिका धूमो रजो चन्दमण्डलस्स वण्णनिभा सूरियमण्डलस्स [सुरियमण्डलस्स (सी० स्या०)] वण्णनिभा तारकरूपानं वण्णनिभा आदासमण्डलस्स वण्णनिभा मणिसङ्खमुत्तावेळुरियस्स वण्णनिभा जातरूपरजतस्स वण्णनिभा, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं, यं रूपं सनिदस्सनं सप्पटिघं चक्खुना अनिदस्सनेन सप्पटिघेन पस्सि वा पस्सति वा पस्सिस्सति वा पस्से वा, रूपं पेतं रूपायतनं पेतं रूपधातु पेसा – इदं तं रूपं रूपायतनं।

६१७. कतमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं नीलं पीतकं लोहितकं ओदातं काळकं मञ्जिट्ठकं हरि हरिवण्णं अम्बङ्कुरवण्णं दीघं रस्सं अणुं थूलं वट्टं परिमण्डलं चतुरंसं छळंसं अट्ठंसं सोळसंसं निन्नं थलं छाया आतपो आलोको अन्धकारो अब्भा महिका धूमो रजो चन्दमण्डलस्स वण्णनिभा सूरियमण्डलस्स वण्णनिभा तारकरूपानं वण्णनिभा आदासमण्डलस्स वण्णनिभा मणिसङ्खमुत्तावेळुरियस्स वण्णनिभा जातरूपरजतस्स वण्णनिभा, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं, यम्हि रूपम्हि सनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि चक्खुं अनिदस्सनं सप्पटिघं पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, रूपं पेतं रूपायतनं पेतं रूपधातु पेसा — इदं तं रूपं रूपायतनं।

६१८. कतमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं नीलं पीतकं लोहितकं ओदातं काळकं मञ्जिट्ठकं हरि हरिवण्णं अम्बङ्कुरवण्णं दीघं रस्सं अणुं थूलं वट्टं परिमण्डलं चतुरंसं छळंसं अट्ठंसं सोळसंसं निन्नं थलं छाया आतपो आलोको अन्धकारो अब्भा महिका धूमो रजो चन्दमण्डलस्स वण्णनिभा सूरियमण्डलस्स वण्णनिभा तारकरूपानं वण्णनिभा आदासमण्डलस्स वण्णनिभा मणिसङ्खमुत्तावेळुरियस्स वण्णनिभा जातरूपरजतस्स वण्णनिभा, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं, यं रूपं सनिदस्सनं सप्पटिघं चक्खुम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, रूपं पेतं रूपायतनं पेतं रूपधातु पेसा — इदं तं रूपं रूपायतनं।

६१९. कतमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं नीलं पीतकं लोहितकं ओदातं काळकं मञ्जिट्ठकं हरि हरिवण्णं अम्बङ्कुरवण्णं दीघं रस्सं अणुं थूलं वट्टं परिमण्डलं चतुरंसं छळंसं अट्ठंसं सोळसंसं निन्नं थलं छाया आतपो आलोको अन्धकारो अब्भा महिका धूमो रजो चन्दमण्डलस्स वण्णनिभा सूरियमण्डलस्स वण्णनिभा तारकरूपानं वण्णनिभा आदासमण्डलस्स वण्णनिभा मणिसङ्खमुत्तावेळुरियस्स वण्णनिभा जातरूपरजतस्स वण्णनिभा, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं, यं रूपं आरब्भ चक्खुं निस्साय चक्खुसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे०… यं रूपं आरब्भ चक्खुं निस्साय चक्खुसम्फस्सजा वेदना…पे०… सञ्ञा…पे०… चेतना…पे०… चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे०… यं रूपारम्मणो चक्खुं निस्साय चक्खुसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे०… यं रूपारम्मणा चक्खुं निस्साय चक्खुसम्फस्सजा वेदना…पे०… सञ्ञा…पे०… चेतना…पे०… चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, रूपं पेतं रूपायतनं पेतं रूपधातु पेसा — इदं तं रूपं रूपायतनं।

६२०. कतमं तं रूपं सद्दायतनं? यो सद्दो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो भेरिसद्दो मुदिङ्गसद्दो सङ्खसद्दो पणवसद्दो गीतसद्दो वादितसद्दो सम्मसद्दो पाणिसद्दो सत्तानं निग्घोससद्दो धातूनं सन्निघातसद्दो वातसद्दो उदकसद्दो मनुस्ससद्दो अमनुस्ससद्दो, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि सद्दो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं सद्दं अनिदस्सनं सप्पटिघं सोतेन अनिदस्सनेन सप्पटिघेन सुणि वा सुणाति वा सुणिस्सति वा सुणे वा, सद्दो पेसो सद्दायतनं पेतं सद्दधातु पेसा — इदं तं रूपं सद्दायतनं।

६२१. कतमं तं रूपं सद्दायतनं? यो सद्दो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो भेरिसद्दो मुदिङ्गसद्दो सङ्खसद्दो पणवसद्दो गीतसद्दो वादितसद्दो सम्मसद्दो पाणिसद्दो सत्तानं निग्घोससद्दो धातूनं सन्निघातसद्दो वातसद्दो उदकसद्दो

मनुस्ससद्दो अमनुस्ससद्दो, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि सद्दो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यम्हि सद्दम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि सोतं अनिदस्सनं सप्पटिघं पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, सद्दो पेसो सद्दायतनं पेतं सद्दधातु पेसा – इदं तं रूपं सद्दायतनं।

६२२. कतमं तं रूपं सद्दायतनं? यो सद्दो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो भेरिसद्दो मुदिङ्गसद्दो सङ्खसद्दो पणवसद्दो गीतसद्दो वादितसद्दो सम्मसद्दो पाणिसद्दो सत्तानं निग्घोससद्दो धातूनं सन्निघातसद्दो वातसद्दो उदकसद्दो मनुस्ससद्दो अमनुस्ससद्दो, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि सद्दो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यो सद्दो अनिदस्सनो सप्पटिघो सोतम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, सद्दो पेसो सद्दायतनं पेतं सद्दधातु पेसा – इदं तं रूपं सद्दायतनं।

६२३. कतमं तं रूपं सद्दायतनं? यो सद्दो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो भेरिसद्दो मुदिङ्गसद्दो सङ्खसद्दो पणवसद्दो गीतसद्दो वादितसद्दो सम्मसद्दो पाणिसद्दो सत्तानं निग्घोससद्दो धातूनं सन्निघातसद्दो वातसद्दो उदकसद्दो मनुस्ससद्दो अमनुस्ससद्दो, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि सद्दो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं सद्दं आरब्भ सोतं निस्साय सोतसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे०… यं सद्दं आरब्भ सोतं निस्साय सोतसम्फस्सजा वेदना…पे०… सञ्ञा…पे०… चेतना…पे०… सोतविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे०… यं सद्दारम्मणो सोतं निस्साय सोतसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे०… यं सद्दारम्मणा सोतं निस्साय सोतसम्फस्सजा वेदना…पे०… सञ्ञा…पे०… चेतना…पे०… सोतविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, सद्दो पेसो सद्दायतनं पेतं सद्दधातु पेसा – इदं तं रूपं सद्दायतनं।

६२४. कतमं तं रूपं गन्धायतनं? यो गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो मूलगन्धो सारगन्धो तचगन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलगन्धो आमकगन्धो विस्सगन्धो सुगन्धो दुग्गन्धो, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं गन्धं अनिदस्सनं सप्पटिघं घानेन अनिदस्सनेन सप्पटिघेन घायि वा घायति वा घायिस्सति वा घाये वा, गन्धो पेसो गन्धायतनं पेतं गन्धधातु पेसा – इदं तं रूपं गन्धायतनं।

६२५. कतमं तं रूपं गन्धायतनं? यो गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो मूलगन्धो सारगन्धो तचगन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलगन्धो आमकगन्धो विस्सगन्धो सुगन्धो दुग्गन्धो, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यम्हि गन्धम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि घानं अनिदस्सनं सप्पटिघं पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, गन्धो पेसो गन्धायतनं पेतं गन्धधातु पेसा – इदं तं रूपं गन्धायतनं।

६२६. कतमं तं रूपं गन्धायतनं? यो गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो मूलगन्धो सारगन्धो तचगन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलगन्धो आमकगन्धो विस्सगन्धो सुगन्धो दुग्गन्धो, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यो गन्धो अनिदस्सनो सप्पटिघो घानम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, गन्धो पेसो गन्धायतनं पेतं गन्धधातु पेसा – इदं तं रूपं गन्धायतनं।

६२७. कतमं तं रूपं गन्धायतनं? यो गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो मूलगन्धो सारगन्धो तचगन्धो पत्तगन्धो पुप्फगन्धो फलगन्धो आमकगन्धो विस्सगन्धो सुगन्धो दुग्गन्धो, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि गन्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं गन्धं आरब्भ घानं निस्साय घानसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा

उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं गन्धं आरब्भ घानं निस्साय घानसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... घानविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं गन्धारम्मणो घानं निस्साय घानसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं गन्धारम्मणा घानं निस्साय घानसम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... घानविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, गन्धो पेसो गन्धायतनं पेतं गन्धधातु पेसा – इदं तं रूपं गन्धायतनं।

६२८. कतमं तं रूपं रसायतनं? यो रसो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो मूलरसो खन्धरसो तचरसो पत्तरसो पुप्फरसो फलरसो अम्बिलं मधुरं तित्तकं कटुकं लोणिकं खारिकं लम्बिलं [लपिलकं (सी०)] कसावो सादु असादु, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि रसो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं रसं अनिदस्सनं सप्पटिघं जिव्हाय अनिदस्सनाय सप्पटिघाय सायि वा सायति वा सायिस्सति वा साये वा, रसो पेसो रसायतनं पेतं रसधातु पेसा – इदं तं रूपं रसायतनं।

६२९. कतमं तं रूपं रसायतनं? यो रसो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो मूलरसो खन्धरसो तचरसो पत्तरसो पुप्फरसो फलरसो अम्बिलं मधुरं तित्तकं कटुकं लोणिकं खारिकं लम्बिलं कसावो सादु असादु, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि रसो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यम्हि रसम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि जिव्हा अनिदस्सना सप्पटिघा पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, रसो पेसो रसायतनं पेतं रसधातु पेसा – इदं तं रूपं रसायतनं।

६३०. कतमं तं रूपं रसायतनं? यो रसो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो मूलरसो खन्धरसो तचरसो पत्तरसो पुप्फरसो फलरसो अम्बिलं मधुरं तित्तकं कटुकं लोणिकं खारिकं लम्बिलं कसावो सादु असादु, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि रसो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यो रसो अनिदस्सनो सप्पटिघो जिव्हाय अनिदस्सनाय सप्पटिघाय पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, रसो पेसो रसायतनं पेतं रसधातु पेसा – इदं तं रूपं रसायतनं।

६३१. कतमं तं रूपं रसायतनं? यो रसो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो मूलरसो खन्धरसो तचरसो पत्तरसो पुप्फरसो फलरसो अम्बिलं मधुरं तित्तकं कटुकं लोणिकं खारिकं लम्बिलं कसावो सादु असादु, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि रसो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय अनिदस्सनो सप्पटिघो, यं रसं आरब्भ जिव्हं निस्साय जिव्हासम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं रसं आरब्भ जिव्हं निस्साय जिव्हासम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... जिव्हाविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं रसारम्मणो जिव्हं निस्साय जिव्हासम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा...पे०... यं रसारम्मणा जिव्हं निस्साय जिव्हासम्फस्सजा वेदना...पे०... सञ्ञा...पे०... चेतना...पे०... जिव्हाविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, रसो पेसो रसायतनं पेतं रसधातु पेसा – इदं तं रूपं रसायतनं।

६३२. कतमं तं रूपं इत्थिन्द्रियं? यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो [इत्थित्तं इत्थीभावो (स्या०)] – इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियं।

६३३. कतमं तं रूपं पुरिसिन्द्रियं? यं पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं पुरिसनिमित्तं पुरिसकुत्तं पुरिसाकप्पो पुरिसत्तं पुरिसभावो

— इदं तं रूपं पुरिसिन्द्रियं।

६३४. कतमं तं रूपं जीवितिन्द्रियं? यो तेसं रूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं — इदं तं रूपं जीवितिन्द्रियं।

६३५. कतमं तं रूपं कायविञ्ञत्ति? या कुसलचित्तस्स वा अकुसलचित्तस्स वा अब्याकतचित्तस्स वा अभिक्कमन्तस्स वा पटिक्कमन्तस्स वा आलोकेन्तस्स वा विलोकेन्तस्स वा समिञ्जेन्तस्स वा पसारेन्तस्स वा कायस्स थम्भना सन्थम्भना सन्थम्भितत्तं विञ्ञत्ति विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं — इदं तं रूपं कायविञ्ञत्ति।

६३६. कतमं तं रूपं वचीविञ्ञत्ति? या कुसलचित्तस्स वा अकुसलचित्तस्स वा अब्याकतचित्तस्स वा वाचा गिरा ब्यप्पथो उदीरणं घोसो घोसकम्मं वाचा वचीभेदो — अयं वुच्चति वाचा। या ताय वाचाय विञ्ञत्ति विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं — इदं तं रूपं वचीविञ्ञत्ति।

६३७. कतमं तं रूपं आकासधातु? यो आकासो आकासगतं अघं अघगतं विवरो विवरगतं असम्फुट्ठं चतूहि महाभूतेहि — इदं तं रूपं आकासधातु।

६३८. कतमं तं रूपं रूपस्स लहुता? या रूपस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता — इदं तं रूपं रूपस्स लहुता।

६३९. कतमं तं रूपं रूपस्स मुदुता? या रूपस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता — इदं तं रूपं रूपस्स मुदुता।

६४०. कतमं तं रूपं रूपस्स कम्मञ्ञता? या रूपस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो — इदं तं रूपं रूपस्स कम्मञ्ञता।

६४१. कतमं तं रूपं रूपस्स उपचयो? यो आयतनानं आचयो, सो रूपस्स उपचयो — इदं तं रूपं रूपस्स उपचयो।

६४२. कतमं तं रूपं रूपस्स सन्तति? यो रूपस्स उपचयो, सा रूपस्स सन्तति — इदं तं रूपं रूपस्स सन्तति।

६४३. कतमं तं रूपं रूपस्स जरता? या रूपस्स जरा जीरणता खण्डिच्चं पालिच्चं वलित्तचता आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाको — इदं तं रूपं रूपस्स जरता।

६४४. कतमं तं रूपं रूपस्स अनिच्चता? यो रूपस्स खयो वयो भेदो परिभेदो अनिच्चता अन्तरधानं — इदं तं रूपं रूपस्स अनिच्चता।

६४५. कतमं तं रूपं कबळीकारो आहारो? ओदनो कुम्मासो सत्तु मच्छो मंसं खीरं दधि सप्पि नवनीतं तेलं मधु फाणितं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं यम्हि यम्हि जनपदे तेसं तेसं सत्तानं मुखासियं दन्तविखादनं गलज्झोहरणीयं कुच्छिवित्थम्भनं, याय ओजाय सत्ता यापेन्ति — इदं तं रूपं कबळीकारो आहारो।

इदं तं रूपं उपादा।

उपादाभाजनीयं।

रूपकण्डे पठमभाणवारो।

६४६. कतमं तं रूपं नो उपादा? फोट्ठब्बायतनं, आपोधातु।

६४७. कतमं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं? पथवीधातु तेजोधातु वायोधातु कक्खळं मुदुकं सण्हं फरुसं सुखसम्फस्सं दुक्खसम्फस्सं गरुकं लहुकं, यं फोट्ठब्बं अनिदस्सनं सप्पटिघं कायेन अनिदस्सनेन सप्पटिघेन फुसि वा फुसति वा फुसिस्सति वा फुसे वा फोट्ठब्बो पेसो फोट्ठब्बायतनं पेतं फोट्ठब्बधातु पेसा – इदं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं।

६४८. कतमं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं? पथवीधातु तेजोधातु वायोधातु कक्खळं मुदुकं सण्हं फरुसं सुखसम्फस्सं दुक्खसम्फस्सं गरुकं लहुकं, यम्हि फोट्ठब्बम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि कायो अनिदस्सनो सप्पटिघो पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, फोट्ठब्बो पेसो फोट्ठब्बायतनं पेतं फोट्ठब्बधातु पेसा – इदं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं।

६४९. कतमं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं? पथवीधातु तेजोधातु वायोधातु कक्खळं मुदुकं सण्हं फरुसं सुखसम्फस्सं दुक्खसम्फस्सं गरुकं लहुकं, यो फोट्ठब्बो अनिदस्सनो सप्पटिघो कायम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि पटिहञ्ञि वा पटिहञ्ञति वा पटिहञ्ञिस्सति वा पटिहञ्ञे वा, फोट्ठब्बो पेसो फोट्ठब्बायतनं पेतं फोट्ठब्बधातु पेसा – इदं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं।

६५०. कतमं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं? पथवीधातु तेजोधातु वायोधातु कक्खळं मुदुकं सण्हं फरुसं सुखसम्फस्सं दुक्खसम्फस्सं गरुकं लहुकं, यं फोट्ठब्बं आरब्भ कायं निस्साय कायसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे॰… यं फोट्ठब्बं आरब्भ कायं निस्साय कायसम्फस्सजा वेदना…पे॰… सञ्ञा…पे॰… चेतना…पे॰… कायविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे॰… यं फोट्ठब्बारम्मणो कायं निस्साय कायसम्फस्सो उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा…पे॰… यं फोट्ठब्बारम्मणा कायं निस्साय कायसम्फस्सजा वेदना…पे॰… सञ्ञा…पे॰… चेतना…पे॰… कायविञ्ञाणं उप्पज्जि वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा उप्पज्जे वा, फोट्ठब्बो पेसो फोट्ठब्बायतनं पेतं फोट्ठब्बधातु पेसा – इदं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं।

६५१. कतमं तं रूपं आपोधातु? यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बन्धनत्तं रूपस्स – इदं तं रूपं आपोधातु।

इदं तं रूपं नो उपादा।

६५२. कतमं तं रूपं उपादिण्णं? चक्खायतनं सोतायतनं घानायतनं जिव्हायतनं कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णं।

६५३. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं।

६५४. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं।

६५५. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता, रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं।

६५६. कतमं तं रूपं सनिदस्सनं? रूपायतनं – इदं तं रूपं सनिदस्सनं।

६५७. कतमं तं रूपं अनिदस्सनं? चक्खायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनिदस्सनं।

६५८. कतमं तं रूपं सप्पटिघं? चक्खायतनं सोतायतनं घानायतनं जिव्हायतनं कायायतनं रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं सप्पटिघं।

६५९. कतमं तं रूपं अप्पटिघं? इत्थिन्द्रियं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अप्पटिघं।

६६०. कतमं तं रूपं इन्द्रियं? चक्खुन्द्रियं सोतिन्द्रियं घानिन्द्रियं जिव्हिन्द्रियं कायिन्द्रियं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं इन्द्रियं।

६६१. कतमं तं रूपं न इन्द्रियं? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न इन्द्रियं।

६६२. कतमं तं रूपं महाभूतं? फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं महाभूतं।

६६३. कतमं तं रूपं न महाभूतं? चक्खायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न महाभूतं।

६६४. कतमं तं रूपं विञ्ञत्ति? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति – इदं तं रूपं विञ्ञत्ति।

६६५. कतमं तं रूपं न विञ्ञत्ति? चक्खायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न विञ्ञत्ति।

६६६. कतमं तं रूपं चित्तसमुट्ठानं? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं चित्तजं चित्तहेतुकं चित्तसमुट्ठानं रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं चित्तसमुट्ठानं।

६६७. कतमं तं रूपं न चित्तसमुट्ठानं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न चित्तजं न चित्तहेतुकं न चित्तसमुट्ठानं रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न चित्तसमुट्ठानं।

६६८. कतमं तं रूपं चित्तसहभु? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति – इदं तं रूपं चित्तसहभु।

६६९. कतमं तं रूपं न चित्तसहभु? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न चित्तसहभु।

६७०. कतमं तं रूपं चित्तानुपरिवत्ति? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति – इदं तं रूपं चित्तानुपरिवत्ति।

६७१. कतमं तं रूपं न चित्तानुपरिवत्ति? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न चित्तानुपरिवत्ति।

६७२. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं।

६७३. कतमं तं रूपं बाहिरं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं।

६७४. कतमं तं रूपं ओळारिकं? चक्खायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं ओळारिकं।

६७५. कतमं तं रूपं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं सुखुमं।

६७६. कतमं तं रूपं दूरे? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं दूरे।

६७७. कतमं तं रूपं सन्तिके? चक्खायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं सन्तिके।

६७८. कतमं तं रूपं चक्खुसम्फस्सस्स वत्थु? चक्खायतनं – इदं तं रूपं चक्खुसम्फस्सस्स वत्थु।

६७९. कतमं तं रूपं चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु? सोतायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु।

६८०. कतमं तं रूपं चक्खुसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय ...पे०... चक्खुविञ्ञाणस्स वत्थु? चक्खायतनं – इदं तं रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स वत्थु।

६८१. कतमं तं रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु? सोतायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु।

६८२. कतमं तं रूपं सोतसम्फस्सस्स...पे०... घानसम्फस्सस्स...पे०... जिव्हासम्फस्सस्स...पे०... कायसम्फस्सस्स वत्थु? कायायतनं – इदं तं रूपं कायसम्फस्सस्स वत्थु।

६८३. कतमं तं रूपं कायसम्फस्सस्स न वत्थु? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं कायसम्फस्सस्स न वत्थु।

६८४. कतमं तं रूपं कायसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय...पे०... कायविञ्ञाणस्स वत्थु? कायायतनं – इदं तं रूपं कायविञ्ञाणस्स वत्थु।

६८५. कतमं तं रूपं कायविञ्ञाणस्स न वत्थु? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं कायविञ्ञाणस्स न वत्थु।

६८६. कतमं तं रूपं चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं? रूपायतनं – इदं तं रूपं चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं।

६८७. कतमं तं रूपं चक्खुसम्फस्सस्स न आरम्मणं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं चक्खुसम्फस्सस्स न आरम्मणं।

६८८. कतमं तं रूपं चक्खुसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय...पे०... चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणं? रूपायतनं – इदं तं रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणं।

६८९. कतमं तं रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स न आरम्मणं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स न आरम्मणं।

६९०. कतमं तं रूपं सोतसम्फस्सस्स...पे०... घानसम्फस्सस्स ...पे०... जिव्हासम्फस्सस्स...पे०... कायसम्फस्सस्स आरम्मणं? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं कायसम्फस्सस्स आरम्मणं।

६९१. कतमं तं रूपं कायसम्फस्सस्स न आरम्मणं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं कायसम्फस्सस्स न आरम्मणं।

६९२. कतमं तं रूपं कायसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय...पे०... कायविञ्ञाणस्स आरम्मणं? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं कायविञ्ञाणस्स आरम्मणं।

६९३. कतमं तं रूपं कायविञ्ञाणस्स न आरम्मणं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं कायविञ्ञाणस्स न आरम्मणं।

६९४. कतमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे०... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं चक्खायतनं।

६९५. कतमं तं रूपं न चक्खायतनं? सोतायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न चक्खायतनं।

६९६. कतमं तं रूपं सोतायतनं...पे०... घानायतनं...पे०... जिव्हायतनं...पे०... कायायतनं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे०... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं कायायतनं।

६९७. कतमं तं रूपं न कायायतनं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न कायायतनं।

६९८. कतमं तं रूपं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा...पे०... रूपधातु पेसा – इदं तं रूपं रूपायतनं।

६९९. कतमं तं रूपं न रूपायतनं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न रूपायतनं।

७००. कतमं तं रूपं सद्दायतनं...पे०... गन्धायतनं ...पे०... रसायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं? पथवीधातु...पे०... फोट्ठब्बधातु पेसा – इदं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं।

७०१. कतमं तं रूपं न फोट्ठब्बायतनं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न फोट्ठब्बायतनं।

७०२. कतमं तं रूपं चक्खुधातु? चक्खायतनं – इदं तं रूपं चक्खुधातु।

७०३. कतमं तं रूपं न चक्खुधातु? सोतायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न चक्खुधातु।

७०४. कतमं तं रूपं सोतधातु...पे०... घानधातु...पे०... जिव्हाधातु...पे०... कायधातु? कायायतनं – इदं तं रूपं कायधातु।

७०५. कतमं तं रूपं न कायधातु? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न कायधातु।

७०६. कतमं तं रूपं रूपधातु? रूपायतनं – इदं तं रूपं रूपधातु।

७०७. कतमं तं रूपं न रूपधातु? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न रूपधातु।

७०८. कतमं तं रूपं सद्दधातु...पे०... गन्धधातु...पे०... रसधातु...पे०... फोट्ठब्बधातु? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं फोट्ठब्बधातु।

७०९. कतमं तं रूपं न फोट्ठब्बधातु? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न फोट्ठब्बधातु।

७१०. कतमं तं रूपं चक्खुन्द्रियं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे०... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं चक्खुन्द्रियं।

७११. कतमं तं रूपं न चक्खुन्द्रियं? सोतायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न चक्खुन्द्रियं।

७१२. कतमं तं रूपं सोतिन्द्रियं...पे०... घानिन्द्रियं...पे०... जिव्हिन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे०... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं कायिन्द्रियं।

७१३. कतमं तं रूपं न कायिन्द्रियं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न कायिन्द्रियं।

७१४. कतमं तं रूपं इत्थिन्द्रियं? यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो – इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियं।

७१५. कतमं तं रूपं न इत्थिन्द्रियं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न इत्थिन्द्रियं।

७१६. कतमं तं रूपं पुरिसिन्द्रियं? यं पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं पुरिसनिमित्तं पुरिसकुत्तं पुरिसाकप्पो पुरिसत्तं पुरिसभावो – इदं तं रूपं पुरिसिन्द्रियं।

७१७. कतमं तं रूपं न पुरिसिन्द्रियं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न पुरिसिन्द्रियं।

७१८. कतमं तं रूपं जीवितिन्द्रियं? यो तेसं रूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं जीवितिन्द्रियं।

७१९. कतमं तं रूपं न जीवितिन्द्रियं? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न जीवितिन्द्रियं।

७२०. कतमं तं रूपं कायविञ्ञत्ति? या कुसलचित्तस्स वा अकुसलचित्तस्स वा अब्याकतचित्तस्स वा अभिक्कमन्तस्स वा पटिक्कमन्तस्स वा आलोकेन्तस्स वा विलोकेन्तस्स वा समिञ्जेन्तस्स वा पसारेन्तस्स वा कायस्स थम्भना सन्थम्भना सन्थम्भितत्तं विञ्ञत्ति विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं – इदं तं रूपं कायविञ्ञत्ति।

७२१. कतमं तं रूपं न कायविञ्ञत्ति? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न कायविञ्ञत्ति।

७२२. कतमं तं रूपं वचीविञ्ञत्ति? या कुसलचित्तस्स वा अकुसलचित्तस्स वा अब्याकतचित्तस्स वा वाचा गिरा ब्यप्पथो उदीरणं घोसो घोसकम्मं वाचा वचीभेदो, अयं वुच्चति वाचा। या ताय वाचाय विञ्ञत्ति विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं – इदं तं रूपं वचीविञ्ञत्ति।

७२३. कतमं तं रूपं न वचीविञ्ञत्ति? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न वचीविञ्ञत्ति।

७२४. कतमं तं रूपं आकासधातु? यो आकासो आकासगतं अघं अघगतं विवरो विवरगतं असम्फुट्ठं चतूहि महाभूतेहि – इदं तं रूपं आकासधातु।

७२५. कतमं तं रूपं न आकासधातु? चक्खायतनं ...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न आकासधातु।

७२६. कतमं तं रूपं आपोधातु? यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बन्धनत्तं रूपस्स – इदं तं रूपं आपोधातु।

७२७. कतमं तं रूपं न आपोधातु? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न आपोधातु।

७२८. कतमं तं रूपं रूपस्स लहुता? या रूपस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – इदं तं रूपं रूपस्स लहुता।

७२९. कतमं तं रूपं रूपस्स न लहुता? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं रूपस्स न लहुता।

७३०. कतमं तं रूपं रूपस्स मुदुता? या रूपस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – इदं तं रूपं रूपस्स मुदुता।

७३१. कतमं तं रूपं रूपस्स न मुदुता? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं रूपस्स न मुदुता।

७३२. कतमं तं रूपं रूपस्स कम्मञ्ञता? या रूपस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – इदं तं रूपं रूपस्स कम्मञ्ञता।

७३३. कतमं तं रूपं रूपस्स न कम्मञ्ञता? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं रूपस्स न कम्मञ्ञता।

७३४. कतमं तं रूपं रूपस्स उपचयो? यो आयतनानं आचयो, सो रूपस्स उपचयो – इदं तं रूपं रूपस्स उपचयो।

७३५. कतमं तं रूपं रूपस्स न उपचयो? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं रूपस्स न उपचयो।

७३६. कतमं तं रूपं रूपस्स सन्तति? यो रूपस्स उपचयो, सा रूपस्स सन्तति – इदं तं रूपं रूपस्स सन्तति।

७३७. कतमं तं रूपं रूपस्स न सन्तति? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं रूपस्स न सन्तति।

७३८. कतमं तं रूपं रूपस्स जरता? या रूपस्स जरा जीरणता खण्डिच्चं पालिच्चं वलित्तचता आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाको – इदं तं रूपं रूपस्स जरता।

७३९. कतमं तं रूपं रूपस्स न जरता? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं रूपस्स न जरता।

७४०. कतमं तं रूपं रूपस्स अनिच्चता? यो रूपस्स खयो वयो भेदो परिभेदो अनिच्चता अन्तरधानं – इदं तं रूपं रूपस्स अनिच्चता।

७४१. कतमं तं रूपं रूपस्स न अनिच्चता? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं रूपस्स न अनिच्चता।

७४२. कतमं तं रूपं कबळीकारो आहारो? ओदनो कुम्मासो सत्तु मच्छो मंसं खीरं दधि सप्पि नवनीतं तेलं मधु फाणितं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं यम्हि यम्हि जनपदे तेसं तेसं सत्तानं मुखासियं दन्तविखादनं गलज्झोहरणीयं कुच्छिवित्थम्भनं, याय ओजाय सत्ता यापेन्ति – इदं तं रूपं कबळीकारो आहारो।

७४३. कतमं तं रूपं न कबळीकारो आहारो? चक्खायतनं...पे०... रूपस्स अनिच्चता – इदं तं रूपं न कबळीकारो आहारो।

एवं दुविधेन रूपसङ्गहो।

दुकनिद्देसो।

तिकनिद्देसो

७४४. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं उपादा? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं उपादा।

७४५. कतमं तं रूपं बाहिरं उपादा? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं उपादा।

७४६. कतमं तं रूपं बाहिरं नो उपादा? फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं बाहिरं नो उपादा।

७४७. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं उपादिण्णं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं उपादिण्णं।

७४८. कतमं तं रूपं बाहिरं उपादिण्णं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं उपादिण्णं।

७४९. कतमं तं रूपं बाहिरं अनुपादिण्णं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं अनुपादिण्णं।

७५०. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं उपादिण्णुपादानियं। चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं उपादिण्णुपादानियं।

७५१. कतमं तं रूपं बाहिरं उपादिण्णुपादानियं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं उपादिण्णुपादानियं।

७५२. कतमं तं रूपं बाहिरं अनुपादिण्णुपादानियं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं अनुपादिण्णुपादानियं।

७५३. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं अनिदस्सनं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं अनिदस्सनं।

७५४. कतमं तं रूपं बाहिरं सनिदस्सनं? रूपायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं सनिदस्सनं।

७५५. कतमं तं रूपं बाहिरं अनिदस्सनं? सद्दायतनं ...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं अनिदस्सनं।

७५६. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं सप्पटिघं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं सप्पटिघं।

७५७. कतमं तं रूपं बाहिरं सप्पटिघं? रूपायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं सप्पटिघं।

७५८. कतमं तं रूपं बाहिरं अप्पटिघं? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं अप्पटिघं।

७५९. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं इन्द्रियं? चक्खुन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं इन्द्रियं।

७६०. कतमं तं रूपं बाहिरं इन्द्रियं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं बाहिरं इन्द्रियं।

७६१. कतमं तं रूपं बाहिरं न इन्द्रियं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न इन्द्रियं।

७६२. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न महाभूतं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न महाभूतं।

७६३. कतमं तं रूपं बाहिरं महाभूतं? फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं बाहिरं महाभूतं।

७६४. कतमं तं रूपं बाहिरं न महाभूतं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न महाभूतं।

७६५. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न विञ्ञत्ति? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न विञ्ञत्ति?

७६६. कतमं तं रूपं बाहिरं विञ्ञत्ति? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति – इदं तं रूपं बाहिरं विञ्ञत्ति।

७६७. कतमं तं रूपं बाहिरं न विञ्ञत्ति? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न विञ्ञत्ति।

७६८. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न चित्तसमुट्ठानं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न चित्तसमुट्ठानं।

७६९. कतमं तं रूपं बाहिरं चित्तसमुट्ठानं? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं चित्तजं चित्तहेतुकं चित्तसमुट्ठानं रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं चित्तसमुट्ठानं।

७७०. कतमं तं रूपं बाहिरं न चित्तसमुट्ठानं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न चित्तजं न चित्तहेतुकं न चित्तसमुट्ठानं रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न चित्तसमुट्ठानं।

७७१. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न चित्तसहभु? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न चित्तसहभु।

७७२. कतमं तं रूपं बाहिरं चित्तसहभु? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति – इदं तं रूपं बाहिरं चित्तसहभु।

७७३. कतमं तं रूपं बाहिरं न चित्तसहभु? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न चित्तसहभु?

७७४. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न चित्तानुपरिवत्ति? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न चित्तानुपरिवत्ति।

७७५. कतमं तं रूपं बाहिरं चित्तानुपरिवत्ति? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति – इदं तं रूपं बाहिरं चित्तानुपरिवत्ति।

७७६. कतमं तं रूपं बाहिरं न चित्तानुपरिवत्ति? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न चित्तानुपरिवत्ति।

७७७. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं ओळारिकं? चक्खायतनं ...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं ओळारिकं।

७७८. कतमं तं रूपं बाहिरं ओळारिकं? रूपायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं ओळारिकं।

७७९. कतमं तं रूपं बाहिरं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं सुखुमं।

७८०. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं सन्तिके? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं सन्तिके।

७८१. कतमं तं रूपं बाहिरं दूरे? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं दूरे।

७८२. कतमं तं रूपं बाहिरं सन्तिके? रूपायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं सन्तिके।

७८३. कतमं तं रूपं बाहिरं चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु।

७८४. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुसम्फस्सस्स वत्थु? चक्खायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुसम्फस्सस्स वत्थु।

७८५. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु? सोतायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुसम्फस्सस्स न वत्थु।

७८६. कतमं तं रूपं बाहिरं चक्खुसम्फस्सजाय वेदनाय...पे०... सञ्ञाय...पे०... चेतनाय...पे०... चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु।

७८७. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुविञ्ञाणस्स वत्थु? चक्खायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुविञ्ञाणस्स वत्थु।

७८८. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु? सोतायतनं...पे॰... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुविञ्ञाणस्स न वत्थु?

७८९. कतमं तं रूपं बाहिरं सोतसम्फस्सस्स...पे॰... घानसम्फस्सस्स...पे॰... जिव्हासम्फस्सस्स...पे॰... कायसम्फस्सस्स न वत्थु? रूपायतनं...पे॰... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं कायसम्फस्सस्स न वत्थु।

७९०. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायसम्फस्सस्स वत्थु? कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायसम्फस्सस्स वत्थु।

७९१. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायसम्फस्सस्स न वत्थु? चक्खायतनं...पे॰... जिव्हायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायसम्फस्सस्स न वत्थु।

७९२. कतमं तं रूपं बाहिरं कायसम्फस्सजाय वेदनाय...पे॰... सञ्ञाय...पे॰... चेतनाय...पे॰... कायविञ्ञाणस्स न वत्थु? रूपायतनं...पे॰... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं कायविञ्ञाणस्स न वत्थु।

७९३. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायविञ्ञाणस्स वत्थु? कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायविञ्ञाणस्स वत्थु।

७९४. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायविञ्ञाणस्स न वत्थु? चक्खायतनं...पे॰... जिव्हायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायविञ्ञाणस्स न वत्थु।

७९५. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुसम्फस्सस्स न आरम्मणं? चक्खायतनं...पे॰... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुसम्फस्सस्स न आरम्मणं।

७९६. कतमं तं रूपं बाहिरं चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं? रूपायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं।

७९७. कतमं तं रूपं बाहिरं चक्खुसम्फस्सस्स न आरम्मणं? सद्दायतनं...पे॰... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं चक्खुसम्फस्सस्स न आरम्मणं।

७९८. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुसम्फस्सजाय वेदनाय...पे॰... सञ्ञाय...पे॰... चेतनाय...पे॰... चक्खुविञ्ञाणस्स न आरम्मणं? चक्खायतनं...पे॰... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुविञ्ञाणस्स न आरम्मणं।

७९९. कतमं तं रूपं बाहिरं चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणं? रूपायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणं।

८००. कतमं तं रूपं बाहिरं चक्खुविञ्ञाणस्स न आरम्मणं? सद्दायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं चक्खुविञ्ञाणस्स न आरम्मणं।

८०१. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं सोतसम्फस्सस्स…पे०… घानसम्फस्सस्स…पे०… जिव्हासम्फस्सस्स…पे०… कायसम्फस्सस्स न आरम्मणं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायसम्फस्सस्स न आरम्मणं।

८०२. कतमं तं रूपं बाहिरं कायसम्फस्सस्स आरम्मणं? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं कायसम्फस्सस्स आरम्मणं।

८०३. कतमं तं रूपं बाहिरं कायसम्फस्सस्स न आरम्मणं? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं कायसम्फस्सस्स न आरम्मणं।

८०४. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायसम्फस्सजाय वेदनाय…पे०… सञ्ञाय…पे०… चेतनाय…पे०… कायविञ्ञाणस्स न आरम्मणं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायविञ्ञाणस्स न आरम्मणं।

८०५. कतमं तं रूपं बाहिरं कायविञ्ञाणस्स आरम्मणं? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं कायविञ्ञाणस्स आरम्मणं।

८०६. कतमं तं रूपं बाहिरं कायविञ्ञाणस्स न आरम्मणं? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं कायविञ्ञाणस्स न आरम्मणं।

८०७. कतमं तं रूपं बाहिरं न चक्खायतनं? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न चक्खायतनं।

८०८. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो…पे०… सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खायतनं।

८०९. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न चक्खायतनं? सोतायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न चक्खायतनं।

८१०. कतमं तं रूपं बाहिरं न सोतायतनं…पे०… न घानायतनं…पे०… न जिव्हायतनं…पे०… न कायायतनं? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न कायायतनं।

८११. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायायतनं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो…पे०… सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायायतनं।

८१२. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न कायायतनं? चक्खायतनं…पे०… जिव्हायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न कायायतनं।

८१३. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न रूपायतनं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न रूपायतनं।

८१४. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपायतनं? यं रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय वण्णनिभा...पे०... रूपधातु पेसा – इदं तं रूपं बाहिरं रूपायतनं।

८१५. कतमं तं रूपं बाहिरं न रूपायतनं? सद्दायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न रूपायतनं।

८१६. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न सद्दायतनं...पे०... न गन्धायतनं...पे०... न रसायतनं...पे०... न फोट्ठब्बायतनं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न फोट्ठब्बायतनं।

८१७. कतमं तं रूपं बाहिरं फोट्ठब्बायतनं? पथवीधातु...पे०... फोट्ठब्बधातु पेसा – इदं तं रूपं बाहिरं फोट्ठब्बायतनं।

८१८. कतमं तं रूपं बाहिरं न फोट्ठब्बायतनं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न फोट्ठब्बायतनं।

८१९. कतमं तं रूपं बाहिरं न चक्खुधातु? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न चक्खुधातु।

८२०. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुधातु? चक्खायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुधातु।

८२१. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न चक्खुधातु? सोतायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न चक्खुधातु।

८२२. कतमं तं रूपं बाहिरं न सोतधातु...पे०... न घानधातु...पे०... न जिव्हाधातु...पे०... न कायधातु? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न कायधातु।

८२३. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायधातु? कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायधातु।

८२४. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न कायधातु? चक्खायतनं...पे०... जिव्हायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न कायधातु।

८२५. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न रूपधातु? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न रूपधातु।

८२६. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपधातु? रूपायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं रूपधातु।

८२७. कतमं तं रूपं बाहिरं न रूपधातु? सद्दायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न रूपधातु।

८२८. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न सद्दधातु...पे०... न गन्धधातु...पे०... न रसधातु ...पे०... न फोट्ठब्बधातु? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न फोट्ठब्बधातु।

८२९. कतमं तं रूपं बाहिरं फोट्ठब्बधातु? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं बाहिरं फोट्ठब्बधातु।

८३०. कतमं तं रूपं बाहिरं न फोट्ठब्बधातु? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न फोट्ठब्बधातु।

८३१. कतमं तं रूपं बाहिरं न चक्खुन्द्रियं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न चक्खुन्द्रियं।

८३२. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुन्द्रियं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे०... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं चक्खुन्द्रियं।

८३३. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न चक्खुन्द्रियं? सोतायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न चक्खुन्द्रियं।

८३४. कतमं तं रूपं बाहिरं न सोतिन्द्रियं...पे०... न घानिन्द्रियं...पे०... न जिव्हिन्द्रियं...पे०... न कायिन्द्रियं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न कायिन्द्रियं।

८३५. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं कायिन्द्रियं? यो कायो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे०... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं कायिन्द्रियं।

८३६. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न कायिन्द्रियं? चक्खायतनं...पे०... जिव्हायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न कायिन्द्रियं।

८३७. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न इत्थिन्द्रियं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न इत्थिन्द्रियं।

८३८. कतमं तं रूपं बाहिरं इत्थिन्द्रियं? यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो – इदं तं रूपं बाहिरं इत्थिन्द्रियं।

८३९. कतमं तं रूपं बाहिरं न इत्थिन्द्रियं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न इत्थिन्द्रियं।

८४०. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न पुरिसिन्द्रियं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न पुरिसिन्द्रियं।

८४१. कतमं तं रूपं बाहिरं पुरिसिन्द्रियं? यं पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं पुरिसनिमित्तं पुरिसकुत्तं पुरिसाकप्पो पुरिसत्तं पुरिसभावो – इदं तं रूपं बाहिरं पुरिसिन्द्रियं।

८४२. कतमं तं रूपं बाहिरं न पुरिसिन्द्रियं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न पुरिसिन्द्रियं।

८४३. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न जीवितिन्द्रियं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न जीवितिन्द्रियं।

८४४. कतमं तं रूपं बाहिरं जीवितिन्द्रियं? यो तेसं रूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं बाहिरं जीवितिन्द्रियं।

८४५. कतमं तं रूपं बाहिरं न जीवितिन्द्रियं? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न जीवितिन्द्रियं।

८४६. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न कायविञ्ञत्ति? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न कायविञ्ञत्ति।

८४७. कतमं तं रूपं बाहिरं कायविञ्ञत्ति? या कुसलचित्तस्स वा अकुसलचित्तस्स वा अब्याकतचित्तस्स वा अभिक्कमन्तस्स वा पटिक्कमन्तस्स वा आलोकेन्तस्स वा विलोकेन्तस्स वा समिञ्जेन्तस्स वा पसारेन्तस्स वा कायस्स थम्भना सन्थम्भना सन्थम्भितत्तं विञ्ञत्ति विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं – इदं तं रूपं बाहिरं कायविञ्ञत्ति।

८४८. कतमं तं रूपं बाहिरं न कायविञ्ञत्ति? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न कायविञ्ञत्ति।

८४९. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न वचीविञ्ञत्ति? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न वचीविञ्ञत्ति।

८५०. कतमं तं रूपं बाहिरं वचीविञ्ञत्ति? या कुसलचित्तस्स वा अकुसलचित्तस्स वा अब्याकतचित्तस्स वा वाचा गिरा ब्यप्पथो उदीरणं घोसो घोसकम्मं वाचा वचीभेदो, अयं वुच्चति वाचा। या ताय वाचाय विञ्ञत्ति विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं – इदं तं रूपं बाहिरं वचीविञ्ञत्ति।

८५१. कतमं तं रूपं बाहिरं न वचीविञ्ञत्ति? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न वचीविञ्ञत्ति।

८५२. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न आकासधातु? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न आकासधातु।

८५३. कतमं तं रूपं बाहिरं आकासधातु? यो आकासो आकासगतं अघं अघगतं विवरो विवरगतं असम्फुट्ठं चतूहि महाभूतेहि – इदं तं रूपं बाहिरं आकासधातु।

८५४. कतमं तं रूपं बाहिरं न आकासधातु? रूपायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न आकासधातु।

८५५. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न आपोधातु? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न आपोधातु।

८५६. कतमं तं रूपं बाहिरं आपोधातु? यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बन्धनत्तं रूपस्स – इदं तं रूपं बाहिरं आपोधातु।

८५७. कतमं तं रूपं बाहिरं न आपोधातु? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं न आपोधातु।

८५८. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न लहुता? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न लहुता।

८५९. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स लहुता? या रूपस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स लहुता।

८६०. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न लहुता? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न लहुता।

८६१. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न मुदुता? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न मुदुता।

८६२. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स मुदुता? या रूपस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स मुदुता।

८६३. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न मुदुता? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न मुदुता।

८६४. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न कम्मञ्ञता? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न कम्मञ्ञता।

८६५. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स कम्मञ्ञता? या रूपस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स कम्मञ्ञता।

८६६. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न कम्मञ्ञता? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न कम्मञ्ञता।

८६७. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न उपचयो? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न उपचयो।

८६८. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स उपचयो? यो आयतनानं आचयो, सो रूपस्स उपचयो – इदं तं रूपं बाहिरं

रूपस्स उपचयो।

८६९. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न उपचयो? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न उपचयो।

८७०. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न सन्तति? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न सन्तति।

८७१. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स सन्तति? यो रूपस्स उपचयो, सा रूपस्स सन्तति – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स सन्तति।

८७२. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न सन्तति? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न सन्तति।

८७३. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न जरता? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न जरता।

८७४. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स जरता? या रूपस्स जरा जीरणता खण्डिच्चं पालिच्चं वलित्तचता आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाको – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स जरता।

८७५. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न जरता? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न जरता।

८७६. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न अनिच्चता? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं रूपस्स न अनिच्चता।

८७७. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स अनिच्चता? यो रूपस्स खयो वयो भेदो परिभेदो अनिच्चता अन्तरधानं – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स अनिच्चता।

८७८. कतमं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न अनिच्चता? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं बाहिरं रूपस्स न अनिच्चता।

८७९. कतमं तं रूपं अज्झत्तिकं न कबळीकारो आहारो? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं – इदं तं रूपं अज्झत्तिकं न कबळीकारो आहारो।

८८०. कतमं तं रूपं बाहिरं कबळीकारो आहारो? ओदनो कुम्मासो सत्तु मच्छो मंसं खीरं दधि सप्पि नवनीतं तेलं मधु फाणितं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं यम्हि यम्हि जनपदे तेसं तेसं सत्तानं मुखासियं दन्तविखादनं गलज्झोहरणीयं कुच्छिवित्थम्भनं याय ओजाय सत्ता यापेन्ति – इदं तं रूपं बाहिरं कबळीकारो आहारो।

८८१. कतमं तं रूपं बाहिरं न कबळीकारो आहारो? रूपायतनं…पे०… रूपस्स अनिच्चता – इदं तं रूपं बाहिरं न कबळीकारो आहारो।

एवं तिविधेन रूपसङ्गहो।

तिकनिद्देसो।

चतुक्कं

८८२. कतमं तं रूपं उपादा उपादिण्णं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं, इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादा उपादिण्णं।

८८३. कतमं तं रूपं उपादा अनुपादिण्णं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादा अनुपादिण्णं।

८८४. कतमं तं रूपं नो उपादा उपादिण्णं? कम्मस्स कतत्ता फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं नो उपादा उपादिण्णं।

८८५. कतमं तं रूपं नो उपादा अनुपादिण्णं? न कम्मस्स कतत्ता फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं नो उपादा अनुपादिण्णं।

८८६. कतमं तं रूपं उपादा उपादिण्णुपादानियं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं, इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादा उपादिण्णुपादानियं।

८८७. कतमं तं रूपं उपादा अनुपादिण्णुपादानियं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादा अनुपादिण्णुपादानियं।

८८८. कतमं तं रूपं नो उपादा उपादिण्णुपादानियं? कम्मस्स कतत्ता फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं नो उपादा उपादिण्णुपादानियं।

८८९. कतमं तं रूपं नो उपादा अनुपादिण्णुपादानियं? न कम्मस्स कतत्ता फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं नो उपादा अनुपादिण्णुपादानियं।

८९०. कतमं तं रूपं उपादा सप्पटिघं? चक्खायतनं…पे०… रसायतनं – इदं तं रूपं उपादा सप्पटिघं।

८९१. कतमं तं रूपं उपादा अप्पटिघं? इत्थिन्द्रियं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादा अप्पटिघं।

८९२. कतमं तं रूपं नो उपादा सप्पटिघं? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं नो उपादा सप्पटिघं।

८९३. कतमं तं रूपं नो उपादा अप्पटिघं? आपोधातु – इदं तं रूपं नो उपादा अप्पटिघं।

८९४. कतमं तं रूपं उपादा ओळारिकं? चक्खायतनं…पे०… रसायतनं – इदं तं रूपं उपादा ओळारिकं।

८९५. कतमं तं रूपं उपादा सुखुमं इत्थिन्द्रियं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादा सुखुमं।

८९६. कतमं तं रूपं नो उपादा ओळारिकं? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं नो उपादा ओळारिकं।

८९७. कतमं तं रूपं नो उपादा सुखुमं? आपोधातु – इदं तं रूपं नो उपादा सुखुमं।

८९८. कतमं तं रूपं उपादा दूरे? इत्थिन्द्रियं…पे०… कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादा दूरे।

८९९. कतमं तं रूपं उपादा सन्तिके? चक्खायतनं…पे०… रसायतनं – इदं तं रूपं उपादा सन्तिके।

९००. कतमं तं रूपं नो उपादा दूरे? आपोधातु – इदं तं रूपं नो उपादा दूरे।

९०१. कतमं तं रूपं नो उपादा सन्तिके? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं नो उपादा सन्तिके।

९०२. कतमं तं रूपं उपादिण्णं सनिदस्सनं? कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं – इदं तं रूपं उपादिण्णं सनिदस्सनं।

९०३. कतमं तं रूपं उपादिण्णं अनिदस्सनं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं, इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णं अनिदस्सनं।

९०४. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं सनिदस्सनं? न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं सनिदस्सनं।

९०५. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं अनिदस्सनं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं अनिदस्सनं।

९०६. कतमं तं रूपं उपादिण्णं सप्पटिघं? चक्खायतनं…पे०… कायायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं उपादिण्णं सप्पटिघं।

९०७. कतमं तं रूपं उपादिण्णं अप्पटिघं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णं अप्पटिघं।

९०८. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं सप्पटिघं? सद्दायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं सप्पटिघं।

९०९. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं अप्पटिघं? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं अप्पटिघं।

९१०. कतमं तं रूपं उपादिण्णं महाभूतं? कम्मस्स कतत्ता फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं उपादिण्णं महाभूतं।

९११. कतमं तं रूपं उपादिण्णं न महाभूतं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णं न महाभूतं।

९१२. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं महाभूतं? न कम्मस्स कतत्ता फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं महाभूतं।

९१३. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं न महाभूतं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं न महाभूतं।

९१४. कतमं तं रूपं उपादिण्णं ओळारिकं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं उपादिण्णं ओळारिकं।

९१५. कतमं तं रूपं उपादिण्णं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णं सुखुमं।

९१६. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं ओळारिकं? सद्दायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं ओळारिकं।

९१७. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं सुखुमं? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं सुखुमं।

९१८. कतमं तं रूपं उपादिण्णं दूरे? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स

कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णं दूरे।

९१९. कतमं तं रूपं उपादिण्णं सन्तिके? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं उपादिण्णं सन्तिके।

९२०. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं दूरे? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं दूरे।

९२१. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णं सन्तिके? सद्दायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं सन्तिके।

९२२. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं सनिदस्सनं? कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं सनिदस्सनं।

९२३. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं अनिदस्सनं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं, इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं अनिदस्सनं।

९२४. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं सनिदस्सनं? न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं सनिदस्सनं।

९२५. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं अनिदस्सनं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं अनिदस्सनं।

९२६. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं सप्पटिघं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं सप्पटिघं।

९२७. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं अप्पटिघं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं अप्पटिघं।

९२८. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं सप्पटिघं? सद्दायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं सप्पटिघं।

९२९. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं अप्पटिघं? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता

रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं अप्पटिघं।

९३०. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं महाभूतं? कम्मस्स कतत्ता फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं महाभूतं।

९३१. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं न महाभूतं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं न महाभूतं।

९३२. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं महाभूतं? न कम्मस्स कतत्ता फोट्ठब्बायतनं आपोधातु – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं महाभूतं।

९३३. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं न महाभूतं? सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं न महाभूतं।

९३४. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं ओळारिकं? चक्खायतनं...पे०... कायायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं ओळारिकं।

९३५. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं सुखुमं।

९३६. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं ओळारिकं? सद्दायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं ओळारिकं।

९३७. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं सुखुमं? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं सुखुमं।

९३८. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं दूरे? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं दूरे।

९३९. कतमं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं सन्तिके चक्खायतनं...पे०... कायायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं उपादिण्णुपादानियं सन्तिके।

९४०. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं दूरे? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं दूरे।

९४१. कतमं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं सन्तिके? सद्दायतनं, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं अनुपादिण्णुपादानियं सन्तिके।

९४२. कतमं तं रूपं सप्पटिघं इन्द्रियं? चक्खुन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं – इदं तं रूपं सप्पटिघं इन्द्रियं।

९४३. कतमं तं रूपं सप्पटिघं न इन्द्रियं? रूपायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं सप्पटिघं न इन्द्रियं।

९४४. कतमं तं रूपं अप्पटिघं इन्द्रियं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं अप्पटिघं इन्द्रियं।

९४५. कतमं तं रूपं अप्पटिघं न इन्द्रियं? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अप्पटिघं न इन्द्रियं।

९४६. कतमं तं रूपं सप्पटिघं महाभूतं? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं सप्पटिघं महाभूतं।

९४७. कतमं तं रूपं सप्पटिघं न महाभूतं? चक्खायतनं...पे०... रसायतनं – इदं तं रूपं सप्पटिघं न महाभूतं।

९४८. कतमं तं रूपं अप्पटिघं महाभूतं? आपोधातु – इदं तं रूपं अप्पटिघं महाभूतं।

९४९. कतमं तं रूपं अप्पटिघं न महाभूतं? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अप्पटिघं न महाभूतं।

९५०. कतमं तं रूपं इन्द्रियं ओळारिकं? चक्खुन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं – इदं तं रूपं इन्द्रियं ओळारिकं।

९५१. कतमं तं रूपं इन्द्रियं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं इन्द्रियं सुखुमं।

९५२. कतमं तं रूपं न इन्द्रियं ओळारिकं? रूपायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं न इन्द्रियं ओळारिकं।

९५३. कतमं तं रूपं न इन्द्रियं सुखुमं? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न इन्द्रियं सुखुमं।

९५४. कतमं तं रूपं इन्द्रियं दूरे? इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं इन्द्रियं दूरे।

९५५. कतमं तं रूपं इन्द्रियं सन्तिके? चक्खुन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं – इदं तं रूपं इन्द्रियं सन्तिके।

९५६. कतमं तं रूपं न इन्द्रियं दूरे? कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न इन्द्रियं

दूरे।

९५७. कतमं तं रूपं न इन्द्रियं सन्तिके? रूपायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं न इन्द्रियं सन्तिके।

९५८. कतमं तं रूपं महाभूतं ओळारिकं? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं महाभूतं ओळारिकं।

९५९. कतमं तं रूपं महाभूतं सुखुमं? आपोधातु – इदं तं रूपं महाभूतं सुखुमं।

९६०. कतमं तं रूपं न महाभूतं ओळारिकं? चक्खायतनं...पे०... रसायतनं – इदं तं रूपं न महाभूतं ओळारिकं।

९६१. कतमं तं रूपं न महाभूतं सुखुमं? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न महाभूतं सुखुमं।

९६२. कतमं तं रूपं महाभूतं दूरे? आपोधातु – इदं तं रूपं महाभूतं दूरे।

९६३. कतमं तं रूपं महाभूतं सन्तिके? फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं महाभूतं सन्तिके।

९६४. कतमं तं रूपं न महाभूतं दूरे? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न महाभूतं दूरे।

९६५. कतमं तं रूपं न महाभूतं सन्तिके? चक्खायतनं...पे०... रसायतनं – इदं तं रूपं न महाभूतं सन्तिके।

९६६. रूपायतनं दिट्ठं, सद्दायतनं सुतं, गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मुतं, सब्बं रूपं मनसा विञ्ञातं रूपं।

एवं चतुब्बिधेन रूपसङ्गहो।

चतुक्कं।

पञ्चकं

९६७. कतमं तं रूपं पथवीधातु? यं कक्खळं खरगतं [खरिगतं (क०)] कक्खळत्तं कक्खळभावो अज्झत्तं वा बहिद्धा वा उपादिण्णं वा अनुपादिण्णं वा – इदं तं रूपं पथवीधातु।

९६८. कतमं तं रूपं आपोधातु? यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बन्धनत्तं रूपस्स अज्झत्तं वा बहिद्धा वा उपादिण्णं वा अनुपादिण्णं वा – इदं तं रूपं आपोधातु।

९६९. कतमं तं रूपं तेजोधातु? यं तेजो तेजोगतं उस्मा उस्मागतं उसुमं उसुमगतं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा उपादिण्णं वा अनुपादिण्णं वा – इदं तं रूपं तेजोधातु।

९७०. कतमं तं रूपं वायोधातु? यं वायो वायोगतं थम्भितत्तं रूपस्स अज्झत्तं वा बहिद्धा वा उपादिण्णं वा अनुपादिण्णं वा – इदं तं रूपं वायोधातु।

९७१. कतमं तं रूपं उपादा? चक्खायतनं...पे○... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं उपादा।

एवं पञ्चविधेन रूपसङ्गहो।

पञ्चकं।

छक्कं

९७२. रूपायतनं चक्खुविञ्ञेय्यं रूपं, सद्दायतनं सोतविञ्ञेय्यं रूपं, गन्धायतनं घानविञ्ञेय्यं रूपं, रसायतनं जिव्हाविञ्ञेय्यं रूपं, फोट्ठब्बायतनं कायविञ्ञेय्यं रूपं, सब्बं रूपं मनोविञ्ञेय्यं रूपं।

एवं छब्बिधेन रूपसङ्गहो।

छक्कं।

सत्तकं

९७३. रूपायतनं चक्खुविञ्ञेय्यं रूपं, सद्दायतनं सोतविञ्ञेय्यं रूपं, गन्धायतनं घानविञ्ञेय्यं रूपं, रसायतनं जिव्हाविञ्ञेय्यं रूपं, फोट्ठब्बायतनं कायविञ्ञेय्यं रूपं, रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मनोधातुविञ्ञेय्यं रूपं, सब्बं रूपं मनोविञ्ञाणधातुविञ्ञेय्यं रूपं।

एवं सत्तविधेन रूपसङ्गहो।

सत्तकं।

अट्ठकं

९७४. रूपायतनं चक्खुविञ्ञेय्यं रूपं, सद्दायतनं सोतविञ्ञेय्यं रूपं, गन्धायतनं घानविञ्ञेय्यं रूपं, रसायतनं जिव्हाविञ्ञेय्यं रूपं, मनापियो फोट्ठब्बो सुखसम्फस्सो कायविञ्ञेय्यं रूपं, अमनापियो फोट्ठब्बो दुक्खसम्फस्सो कायविञ्ञेय्यं रूपं, रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मनोधातुविञ्ञेय्यं रूपं, सब्बं रूपं मनोविञ्ञाणधातुविञ्ञेय्यं रूपं।

एवं अट्ठविधेन रूपसङ्गहो।

अट्ठकं।

नवकं

९७५. कतमं तं रूपं चक्खुन्द्रियं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे○... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं चक्खुन्द्रियं।

९७६. कतमं तं रूपं सोतिन्द्रियं...पे०... घानिन्द्रियं...पे०... जिव्हिन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं ...पे०... इत्थिन्द्रियं...पे०... पुरिसिन्द्रियं...पे०... जीवितिन्द्रियं? यो तेसं रूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं जीवितिन्द्रियं।

९७७. कतमं तं रूपं न इन्द्रियं? रूपायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न इन्द्रियं।

एवं नवविधेन रूपसङ्गहो।

नवकं।

दसकं

९७८. कतमं तं रूपं चक्खुन्द्रियं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे०... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं चक्खुन्द्रियं।

९७९. कतमं तं रूपं सोतिन्द्रियं...पे०... घानिन्द्रियं...पे०... जिव्हिन्द्रियं...पे०... कायिन्द्रियं...पे०... इत्थिन्द्रियं...पे०... पुरिसिन्द्रियं...पे०... जीवितिन्द्रियं? यो तेसं रूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तं रूपं जीवितिन्द्रियं।

९८०. कतमं तं रूपं न इन्द्रियं सप्पटिघं? रूपायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इदं तं रूपं न इन्द्रियं सप्पटिघं।

९८१. कतमं तं रूपं न इन्द्रियं अप्पटिघं? कायविञ्ञत्ति...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं न इन्द्रियं अप्पटिघं।

एवं दसविधेन रूपसङ्गहो।

दसकं।

एकादसकं

९८२. कतमं तं रूपं चक्खायतनं? यं चक्खु चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो...पे०... सुञ्ञो गामो पेसो – इदं तं रूपं चक्खायतनं।

९८३. कतमं तं रूपं सोतायतनं...पे०... घानायतनं...पे०... जिव्हायतनं...पे०... कायायतनं...पे०... रूपायतनं...पे०... सद्दायतनं...पे०... गन्धायतनं...पे०... रसायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं? पथवीधातु...पे०... फोट्ठब्बधातु पेसा – इदं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं।

९८४. कतमं तं रूपं अनिदस्सनं अप्पटिघं धम्मायतनपरियापन्नं? इत्थिन्द्रियं...पे०... कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनिदस्सनं अप्पटिघं धम्मायतनपरियापन्नं।

एवं एकादसविधेन रूपसङ्गहो।

एकादसकं।

अट्ठमभाणवारो।

रूपविभत्ति।

रूपकण्डं निट्ठितं।

३. निक्खेपकण्डं

तिकनिक्खेपं

९८५. कतमे धम्मा कुसला? तीणि कुसलमूलानि – अलोभो, अदोसो, अमोहो; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा कुसला।

९८६. कतमे धम्मा अकुसला? तीणि अकुसलमूलानि – लोभो, दोसो, मोहो; तदेकट्ठा च किलेसा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा अकुसला।

९८७. कतमे धम्मा अब्याकता? कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो; ये च धम्मा किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अब्याकता।

९८८. कतमे धम्मा सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता? सुखभूमियं कामावचरे, रूपावचरे, अपरियापन्ने, सुखं वेदनं ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता।

९८९. कतमे धम्मा दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता? दुक्खभूमियं कामावचरे, दुक्खं वेदनं ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता।

९९०. कतमे धम्मा अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता? अदुक्खमसुखभूमियं कामावचरे, रूपावचरे, अरूपावचरे, अपरियापन्ने, अदुक्खमसुखं वेदनं ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता।

९९१. कतमे धम्मा विपाका? कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा विपाका।

९९२. कतमे धम्मा विपाकधम्मधम्मा? कुसलाकुसला धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना;

वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा विपाकधम्मधम्मा।

९९३. कतमे धम्मा नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा? ये च धम्मा किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा।

९९४. कतमे धम्मा उपादिण्णुपादानिया? सासवा कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; यञ्च रूपं कम्मस्स कतत्ता – इमे धम्मा उपादिण्णुपादानिया।

९९५. कतमे धम्मा अनुपादिण्णुपादानिया? सासवा कुसलाकुसला धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; ये च धम्मा किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका; यञ्च रूपं न कम्मस्स कतत्ता – इमे धम्मा अनुपादिण्णुपादानिया।

९९६. कतमे धम्मा अनुपादिण्णअनुपादानिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनुपादिण्णअनुपादानिया।

९९७. कतमे धम्मा संकिलिट्ठसंकिलेसिका? तीणि अकुसलमूलानि – लोभो, दोसो, मोहो; तदेकट्ठा च किलेसा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा संकिलिट्ठसंकिलेसिका।

९९८. कतमे धम्मा असंकिलिट्ठसंकिलेसिका? सासवा कुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो, वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा असंकिलिट्ठसंकिलेसिका।

९९९. कतमे धम्मा असंकिलिट्ठअसंकिलेसिका? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा असंकिलिट्ठअसंकिलेसिका।

१०००. कतमे धम्मा सवितक्कसविचारा? सवितक्कसविचारभूमियं कामावचरे, रूपावचरे, अपरियापन्ने, वितक्कविचारे ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सवितक्कसविचारा।

१००१. कतमे धम्मा अवितक्कविचारमत्ता? अवितक्कविचारमत्तभूमियं रूपावचरे, अपरियापन्ने, विचारं ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा अवितक्कविचारमत्ता।

१००२. कतमे धम्मा अवितक्कअविचारा? अवितक्कअविचारभूमियं कामावचरे, रूपावचरे, अरूपावचरे, अपरियापन्ने; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अवितक्कअविचारा।

१००३. कतमे धम्मा पीतिसहगता? पीतिभूमियं कामावचरे, रूपावचरे, अपरियापन्ने, पीतिं ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा पीतिसहगता।

१००४. कतमे धम्मा सुखसहगता? सुखभूमियं कामावचरे, रूपावचरे, अपरियापन्ने, सुखं ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो

सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सुखसहगता।

१००५. कतमे धम्मा उपेक्खासहगता? उपेक्खाभूमियं कामावचरे, रूपावचरे, अरूपावचरे, अपरियापन्ने, उपेक्खं ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा उपेक्खासहगता।

१००६. कतमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा? तीणि संयोजनानि – सक्कायदिट्ठि, विचिकिच्छा, सीलब्बतपरामासो।

१००७. तत्थ कतमा सक्कायदिट्ठि? इध अस्सुतवा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावी अरियधम्मस्स अकोविदो अरियधम्मे अविनीतो सप्पुरिसानं अदस्सावी सप्पुरिसधम्मस्स अकोविदो सप्पुरिसधम्मे अविनीतो रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मिं वा अत्तानं। वेदनं अत्ततो समनुपस्सति, वेदनावन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा वेदनं, वेदनाय वा अत्तानं। सञ्ञं अत्ततो समनुपस्सति, सञ्ञावन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा सञ्ञं, सञ्ञाय वा अत्तानं। सङ्खारे अत्ततो समनुपस्सति, सङ्खारवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा सङ्खारे, सङ्खारेसु वा अत्तानं। विञ्ञाणं अत्ततो समनुपस्सति, विञ्ञाणवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा विञ्ञाणं, विञ्ञाणस्मिं वा अत्तानं। या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं [दिट्ठिविसूकायितं (सी॰)] दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पटिग्गाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति सक्कायदिट्ठि।

१००८. तत्थ कतमा विचिकिच्छा? सत्थरि कङ्खति विचिकिच्छति, धम्मे कङ्खति विचिकिच्छति, सङ्घे कङ्खति विचिकिच्छति, सिक्खाय कङ्खति विचिकिच्छति, पुब्बन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, अपरन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, पुब्बन्तापरन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु कङ्खति विचिकिच्छति। या एवरूपा कङ्खा कङ्खायना कङ्खायितत्तं विमति विचिकिच्छा द्वेळ्हकं द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो आसप्पना परिसप्पना अपरियोगाहना थम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो – अयं वुच्चति विचिकिच्छा।

१००९. तत्थ कतमो सीलब्बतपरामासो? इतो बहिद्धा समणब्राह्मणानं 'सीलेन सुद्धि, वतेन सुद्धि, सीलब्बतेन सुद्धी'ति या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पटिग्गाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति सीलब्बतपरामासो।

१०१०. इमानि तीणि संयोजनानि; तदेकट्ठा च किलेसा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा।

१०११. कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बा? अवसेसो लोभो, दोसो, मोहो; तदेकट्ठा च किलेसा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा भावनाय पहातब्बा।

१०१२. कतमे धम्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बा? कुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बा।

१०१३. कतमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका? तीणि संयोजनानि – सक्कायदिट्ठि, विचिकिच्छा, सीलब्बतपरामासो।

१०१४. तत्थ कतमा सक्कायदिट्ठि...पे॰... अयं वुच्चति सक्कायदिट्ठि।

१०१५. तत्थ कतमा विचिकिच्छा...पे॰... अयं वुच्चति विचिकिच्छा।

१०१६. तत्थ कतमो सीलब्बतपरामासो...पे॰... अयं वुच्चति सीलब्बतपरामासो।

१०१७. इमानि तीणि संयोजनानि; तदेकट्ठा च किलेसा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका। तीणि संयोजनानि – सक्कायदिट्ठि, विचिकिच्छा, सीलब्बतपरामासो – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा। तदेकट्ठो लोभो, दोसो, मोहो – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतू। तदेकट्ठा च किलेसा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका।

१०१८. कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतुका? अवसेसो लोभो, दोसो, मोहो – इमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतू। तदेकट्ठा च किलेसा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतुका।

१०१९. कतमे धम्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका।

१०२०. कतमे धम्मा आचयगामिनो? सासवा कुसलाकुसला धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा आचयगामिनो।

१०२१. कतमे धम्मा अपचयगामिनो? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना – इमे धम्मा अपचयगामिनो।

१०२२. कतमे धम्मा नेव आचयगामि न अपचयगामिनो? कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो; ये च धम्मा किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नेव आचयगामि न अपचयगामिनो।

१०२३. कतमे धम्मा सेक्खा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, हेट्ठिमानि च तीणि सामञ्ञफलानि – इमे धम्मा सेक्खा।

१०२४. कतमे धम्मा असेक्खा? उपरिट्ठिमं [उपरिमं (स्या॰)] अरहत्तफलं – इमे धम्मा असेक्खा।

१०२५. कतमे धम्मा नेवसेक्खनासेक्खा? ते धम्मे ठपेत्वा, अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; वेदनाक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नेवसेक्खनासेक्खा।

१०२६. कतमे धम्मा परित्ता? सब्बेव कामावचरा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा; रूपक्खन्धो...पे॰... विञ्ञाणक्खन्धो

— इमे धम्मा परित्ता।

१०२७. कतमे धम्मा महग्गता? रूपावचरा, अरूपावचरा, कुसलाब्याकता धम्मा; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो — इमे धम्मा महग्गता।

१०२८. कतमे धम्मा अप्पमाणा? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु — इमे धम्मा अप्पमाणा।

१०२९. कतमे धम्मा परित्तारम्मणा? परित्ते धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा — इमे धम्मा परित्तारम्मणा।

१०३०. कतमे धम्मा महग्गतारम्मणा? महग्गते धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा — इमे धम्मा महग्गतारम्मणा।

१०३१. कतमे धम्मा अप्पमाणारम्मणा? अप्पमाणे धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा — इमे धम्मा अप्पमाणारम्मणा।

१०३२. कतमे धम्मा हीना? तीणि अकुसलमूलानि — लोभो, दोसो, मोहो; तदेकट्ठा च किलेसा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं — इमे धम्मा हीना।

१०३३. कतमे धम्मा मज्झिमा? सासवा कुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, रूपक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो — इमे धम्मा मज्झिमा।

१०३४. कतमे धम्मा पणीता? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु — इमे धम्मा पणीता।

१०३५. कतमे धम्मा मिच्छत्तनियता? पञ्च कम्मानि आनन्तरिकानि, या च मिच्छादिट्ठिनियता — इमे धम्मा मिच्छत्तनियता।

१०३६. कतमे धम्मा सम्मत्तनियता? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना — इमे धम्मा सम्मत्तनियता।

१०३७. कतमे धम्मा अनियता? ते धम्मे ठपेत्वा, अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु — इमे धम्मा अनियता।

१०३८. कतमे धम्मा मग्गारम्मणा? अरियमग्गं आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा — इमे धम्मा मग्गारम्मणा।

१०३९. कतमे धम्मा मग्गहेतुका? अरियमग्गसमङ्गिस्स मग्गङ्गानि ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो — इमे धम्मा मग्गहेतुका। अरियमग्गसमङ्गिस्स सम्मादिट्ठि मग्गो चेव हेतु च, सम्मादिट्ठिं ठपेत्वा,

तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा मग्गहेतुका। अरियमग्गसमङ्गिस्स अलोभो, अदोसो, अमोहो – इमे धम्मा मग्गहेतू। तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा मग्गहेतुका।

१०४०. कतमे धम्मा मग्गाधिपतिनो? अरियमग्गं अधिपतिं करित्वा ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा मग्गाधिपतिनो। अरियमग्गसमङ्गिस्स वीमंसाधिपतेय्यं मग्गं भावयन्तस्स वीमंसं ठपेत्वा; तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा मग्गाधिपतिनो।

१०४१. कतमे धम्मा उप्पन्ना? ये धम्मा जाता भूता सञ्जाता निब्बत्ता अभिनिब्बत्ता पातुभूता उप्पन्ना समुप्पन्ना उट्ठिता समुट्ठिता उप्पन्ना उप्पन्नंसेन सङ्गहिता, रूपं [रूपा (बहूसु)], वेदना, सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं – इमे धम्मा उप्पन्ना।

१०४२. कतमे धम्मा अनुप्पन्ना? ये धम्मा अजाता अभूता असञ्जाता अनिब्बत्ता अनभिनिब्बत्ता अपातुभूता अनुप्पन्ना असमुप्पन्ना अनुट्ठिता असमुट्ठिता अनुप्पन्ना अनुप्पन्नंसेन सङ्गहिता, रूपं, वेदना, सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं – इमे धम्मा अनुप्पन्ना।

१०४३. कतमे धम्मा उप्पादिनो? कुसलाकुसलानं धम्मानं अविपक्कविपाकानं विपाका कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; यञ्च रूपं कम्मस्स कतत्ता उप्पज्जिस्सति – इमे धम्मा उप्पादिनो।

१०४४. कतमे धम्मा अतीता? ये धम्मा अतीता निरुद्धा विगता विपरिणता अत्थङ्गता अब्भत्थङ्गता उप्पज्जित्वा विगता अतीता अतीतंसेन सङ्गहिता, रूपं, वेदना, सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं – इमे धम्मा अतीता।

१०४५. कतमे धम्मा अनागता? ये धम्मा अजाता अभूता असञ्जाता अनिब्बत्ता अनभिनिब्बत्ता अपातुभूता अनुप्पन्ना असमुप्पन्ना अनुट्ठिता असमुट्ठिता अनागता अनागतंसेन सङ्गहिता, रूपं, वेदना, सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं – इमे धम्मा अनागता।

१०४६. कतमे धम्मा पच्चुप्पन्ना? ये धम्मा जाता भूता सञ्जाता निब्बत्ता अभिनिब्बत्ता पातुभूता उप्पन्ना समुप्पन्ना उट्ठिता समुट्ठिता पच्चुप्पन्ना पच्चुप्पन्नंसेन सङ्गहिता, रूपं, वेदना, सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं – इमे धम्मा पच्चुप्पन्ना।

१०४७. कतमे धम्मा अतीतारम्मणा? अतीते धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा अतीतारम्मणा।

१०४८. कतमे धम्मा अनागतारम्मणा? अनागते धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा अनागतारम्मणा।

१०४९. कतमे धम्मा पच्चुप्पन्नारम्मणा? पच्चुप्पन्ने धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा पच्चुप्पन्नारम्मणा।

१०५०. कतमे धम्मा अज्झत्ता? ये धम्मा तेसं तेसं सत्तानं अज्झत्तं पच्चत्तं नियता पाटिपुग्गलिका उपादिण्णा, रूपं, वेदना, सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं – इमे धम्मा अज्झत्ता।

१०५१. कतमे धम्मा बहिद्धा? ये धम्मा तेसं तेसं परसत्तानं परपुग्गलानं अज्झत्तं पच्चत्तं नियता पाटिपुग्गलिका उपादिण्णा, रूपं, वेदना, सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं – इमे धम्मा बहिद्धा।

१०५२. कतमे धम्मा अज्झत्तबहिद्धा? तदुभयं – इमे धम्मा अज्झत्तबहिद्धा।

१०५३. कतमे धम्मा अज्झत्तारम्मणा? अज्झत्ते धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा अज्झत्तारम्मणा।

१०५४. कतमे धम्मा बहिद्धारम्मणा? बहिद्धा धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा बहिद्धारम्मणा।

१०५५. कतमे धम्मा अज्झत्तबहिद्धारम्मणा? अज्झत्तबहिद्धा धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा अज्झत्तबहिद्धारम्मणा।

१०५६. कतमे धम्मा सनिदस्सनसप्पटिघा? रूपायतनं – इमे धम्मा सनिदस्सनसप्पटिघा।

१०५७. कतमे धम्मा अनिदस्सनसप्पटिघा? चक्खायतनं, सोतायतनं, घानायतनं, जिव्हायतनं, कायायतनं, सद्दायतनं, गन्धायतनं, रसायतनं, फोट्ठब्बायतनं – इमे धम्मा अनिदस्सनसप्पटिघा।

१०५८. कतमे धम्मा अनिदस्सनअप्पटिघा? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो; यञ्च रूपं अनिदस्सनं अप्पटिघं धम्मायतनपरियापन्नं; असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनिदस्सनअप्पटिघा।

तिकं।

दुकनिक्खेपं

हेतुगोच्छकं

१०५९. कतमे धम्मा हेतू? तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू, नव कामावचरहेतू छ रूपावचरहेतू, छ अरूपावचरहेतू, छ अपरियापन्नहेतू।

१०६०. तत्थ कतमे तयो कुसलहेतू? अलोभो, अदोसो, अमोहो।

१०६१. तत्थ कतमो अलोभो? यो अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं वुच्चति अलोभो।

१०६२. तत्थ कतमो अदोसो? यो अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं मेत्ति मेत्तायना मेत्तायितत्तं अनुद्दा अनुद्दायना अनुदायितत्तं हितेसिता अनुकम्पा अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं वुच्चति अदोसो।

१०६३. तत्थ कतमो अमोहो? दुक्खे ञाणं, दुक्खसमुदये ञाणं, दुक्खनिरोधे ञाणं, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय ञाणं, पुब्बन्ते ञाणं, अपरन्ते ञाणं, पुब्बन्तापरन्ते ञाणं, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु ञाणं, या एवरूपा पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति अमोहो।

इमे तयो कुसलहेतू।

१०६४. तत्थ कतमे तयो अकुसलहेतू? लोभो, दोसो, मोहो।

१०६५. तत्थ कतमो लोभो? यो रागो सारागो अनुनयो अनुरोधो नन्दी नन्दीरागो [नन्दिरागो (सी॰)] चित्तस्स सारागो इच्छा मुच्छा अज्झोसानं गेधो पलिगेधो सङ्गो पङ्को एजा माया जनिका सञ्जननी सिब्बिनी [सिब्बनी (सी॰)] जालिनी सरिता विसत्तिका सुत्तं विसटा आयूहिनी [आयूहनी (सी॰ स्या॰)] दुतिया पणिधि भवनेत्ति वनं वनथो सन्थवो सिनेहो अपेक्खा पटिबन्धु आसा आसिसना आसिसितत्तं [आसिंसना आसिंसितत्तं (सी॰ स्या॰)] रूपासा सद्दासा गन्धासा रसासा फोट्ठब्बासा लाभासा धनासा पुत्तासा जीवितासा जप्पा पजप्पा अभिजप्पा जप्पा जप्पना जप्पितत्तं लोलुप्पं लोलुप्पायना लोलुप्पायितत्तं पुच्छञ्जिकता [पुञ्चिकता (स्या॰) पुच्छिकता (सी॰)] साधुकम्यता अधम्मरागो विसमलोभो निकन्ति निकामना पत्थना पिहना सम्पत्थना कामतण्हा भवतण्हा विभवतण्हा रूपतण्हा अरूपतण्हा निरोधतण्हा रूपतण्हा सद्दतण्हा गन्धतण्हा रसतण्हा फोट्ठब्बतण्हा धम्मतण्हा ओघो योगो गन्थो उपादानं आवरणं नीवरणं छादनं बन्धनं उपक्किलेसो अनुसयो परियुट्ठानं लता वेविच्छं दुक्खमूलं दुक्खनिदानं दुक्खप्पभवो मारपासो मारबळिसं मारविसयो तण्हानदी तण्हाजालं तण्हागद्दुलं तण्हासमुद्दो अभिज्झा लोभो अकुसलमूलं – अयं वुच्चति लोभो।

१०६६. तत्थ कतमो दोसो? अनत्थं मे अचरीति आघातो जायति, अनत्थं मे चरतीति आघातो जायति, अनत्थं मे चरिस्सतीति आघातो जायति, पियस्स मे मनापस्स अनत्थं अचरि...पे॰... अनत्थं चरति...पे॰... अनत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अप्पियस्स मे अमनापस्स अत्थं अचरि...पे॰... अत्थं चरति...पे॰... अत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अट्ठाने वा पन आघातो जायति। यो एवरूपो चित्तस्स आघातो पटिघातो पटिघं पटिविरोधो कोपो पकोपो सम्पकोपो दोसो पदोसो सम्पदोसो चित्तस्स ब्यापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्झना कुज्झितत्तं दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – अयं वुच्चति दोसो।

१०६७. तत्थ कतमो मोहो? दुक्खे अञ्ञाणं, दुक्खसमुदये अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधे अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय अञ्ञाणं, पुब्बन्ते अञ्ञाणं, अपरन्ते अञ्ञाणं, पुब्बन्तापरन्ते अञ्ञाणं, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अञ्ञाणं, यं एवरूपं अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो असंगाहना अपरियोगाहना असमपेक्खना अपच्चवेक्खणा अपच्चक्खकम्मं दुम्मेज्झं बाल्यं असम्पजञ्ञं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – अयं वुच्चति मोहो।

इमे तयो अकुसलहेतू।

१०६८. तत्थ कतमे तयो अब्याकतहेतू? कुसलानं वा धम्मानं विपाकतो किरियाब्याकतेसु वा धम्मेसु अलोभो अदोसो अमोहो – इमे तयो अब्याकतहेतू।

१०६९. तत्थ कतमे नव कामावचरहेतू? तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू – इमे नव कामावचरहेतू।

१०७०. तत्थ कतमे छ रूपावचरहेतू? तयो कुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू – इमे छ रूपावचरहेतू।

१०७१. तत्थ कतमे छ अरूपावचरहेतू? तयो कुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू – इमे छ अरूपावचरहेतू।

१०७२. तत्थ कतमे छ अपरियापन्नहेतू? तयो कुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू – इमे छ अपरियापन्नहेतू।

१०७३. तत्थ कतमे तयो कुसलहेतू? अलोभो, अदोसो, अमोहो।

१०७४. तत्थ कतमो अलोभो? यो अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं वुच्चति अलोभो।

१०७५. तत्थ कतमो अदोसो? यो अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं...पे०... अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं वुच्चति अदोसो।

१०७६. तत्थ कतमो अमोहो? दुक्खे ञाणं, दुक्खसमुदये ञाणं, दुक्खनिरोधे ञाणं, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय ञाणं, पुब्बन्ते ञाणं, अपरन्ते ञाणं, पुब्बन्तापरन्ते ञाणं, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु ञाणं, या एवरूपा पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं वुच्चति अमोहो।

इमे तयो कुसलहेतू।

१०७७. तत्थ कतमे तयो अब्याकतहेतू? कुसलानं धम्मानं विपाकतो अलोभो अदोसो अमोहो – इमे तयो अब्याकतहेतू। इमे छ अपरियापन्नहेतू – इमे धम्मा हेतू।

१०७८. कतमे धम्मा न हेतू? ते धम्मे ठपेत्वा, अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा न हेतू।

१०७९. कतमे धम्मा सहेतुका? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सहेतुका वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सहेतुका।

१०८०. कतमे धम्मा अहेतुका? तेहि धम्मेहि ये धम्मा अहेतुका वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अहेतुका।

१०८१. कतमे धम्मा हेतुसम्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा हेतुसम्पयुत्ता।

१०८२. कतमे धम्मा हेतुविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा हेतुविप्पयुत्ता।

१०८३. कतमे धम्मा हेतू चेव सहेतुका च? लोभो मोहेन हेतु चेव सहेतुको च, मोहो लोभेन हेतु चेव सहेतुको च, दोसो मोहेन हेतु चेव सहेतुको च, मोहो दोसेन हेतु चेव सहेतुको च; अलोभो अदोसो अमोहो, ते अञ्ञमञ्ञं हेतू चेव सहेतुका च – इमे धम्मा हेतू चेव सहेतुका च।

१०८४. कतमे धम्मा सहेतुका चेव न च हेतू? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सहेतुका ते धम्मे ठपेत्वा, वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सहेतुका चेव न च हेतू।

१०८५. कतमे धम्मा हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता च? लोभो मोहेन हेतु चेव हेतुसम्पयुत्तो च, मोहो लोभेन हेतु चेव हेतुसम्पयुत्तो च, दोसो मोहेन हेतु चेव हेतुसम्पयुत्तो च, मोहो दोसेन हेतु चेव हेतुसम्पयुत्तो च; अलोभो अदोसो अमोहो, ते अञ्ञमञ्ञं हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता च – इमे धम्मा हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता च।

१०८६. कतमे धम्मा हेतुसम्पयुत्ता चेव न च हेतू? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता ते धम्मे ठपेत्वा, वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा हेतुसम्पयुत्ता चेव न च हेतू।

१०८७. कतमे धम्मा न हेतू सहेतुका? तेहि धम्मेहि ये धम्मा न हेतू सहेतुका वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा न हेतू सहेतुका।

१०८८. कतमे धम्मा न हेतू अहेतुका? तेहि धम्मेहि ये धम्मा न हेतू अहेतुका वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा न हेतू अहेतुका।

चूळन्तरदुकं

१०८९. कतमे धम्मा सप्पच्चया? पञ्चक्खन्धा – रूपक्खन्धो, वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सप्पच्चया।

१०९०. कतमे धम्मा अप्पच्चया? असङ्खता धातु – इमे धम्मा अप्पच्चया।

१०९१. कतमे धम्मा सङ्खता? येव ते धम्मा सप्पच्चया, तेव ते धम्मा सङ्खता।

१०९२. कतमे धम्मा असङ्खता? यो एव सो धम्मो अप्पच्चयो, सो एव सो धम्मो असङ्खतो।

१०९३. कतमे धम्मा सनिदस्सना? रूपायतनं – इमे धम्मा सनिदस्सना।

१०९४. कतमे धम्मा अनिदस्सना? चक्खायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं, वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो, यञ्च रूपं अनिदस्सनं अप्पटिघं धम्मायतनपरियापन्नं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनिदस्सना।

१०९५. कतमे धम्मा सप्पटिघा? चक्खायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इमे धम्मा सप्पटिघा।

१०९६. कतमे धम्मा अप्पटिघा? वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो, यञ्च रूपं अनिदस्सनं अप्पटिघं धम्मायतनपरियापन्नं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अप्पटिघा।

१०९७. कतमे धम्मा रूपिनो? चत्तारो च महाभूता चतुन्नञ्च महाभूतानं उपादाय रूपं – इमे धम्मा रूपिनो।

१०९८. कतमे धम्मा अरूपिनो? वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अरूपिनो।

१०९९. कतमे धम्मा लोकिया? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा लोकिया।

११००. कतमे धम्मा लोकुत्तरा? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा लोकुत्तरा।

११०१. कतमे धम्मा केनचि विञ्ञेय्या, केनचि न विञ्ञेय्या? ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा घानविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा घानविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा कायविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा कायविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा घानविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा घानविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा कायविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा कायविञ्ञेय्या न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा घानविञ्ञेय्या, न ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या, न ते धम्मा घानविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा घानविञ्ञेय्या, न ते धम्मा कायविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा कायविञ्ञेय्या, न ते धम्मा घानविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा घानविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा घानविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा घानविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा घानविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या, न ते धम्मा कायविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा कायविञ्ञेय्या, न ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या, न ते धम्मा घानविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा घानविञ्ञेय्या, न ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा कायविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा कायविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा कायविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा

सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा कायविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा कायविञ्ञेय्या, न ते धम्मा घानविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा घानविञ्ञेय्या, न ते धम्मा कायविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा कायविञ्ञेय्या, न ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या; ये वा पन ते धम्मा जिव्हाविञ्ञेय्या, न ते धम्मा कायविञ्ञेय्या। इमे धम्मा केनचि विञ्ञेय्या केनचि न विञ्ञेय्या।

आसवगोच्छकं

११०२. कतमे धम्मा आसवा? चत्तारो आसवा – कामासवो, भवासवो, दिट्ठासवो, अविज्जासवो।

११०३. तत्थ कतमो कामासवो? यो कामेसु कामच्छन्दो कामरागो कामनन्दी कामतण्हा कामसिनेहो कामपरिळाहो काममुच्छा कामज्झोसानं – अयं वुच्चति कामासवो।

११०४. तत्थ कतमो भवासवो? यो भवेसु भवछन्दो [भवच्छन्दो (सी॰ स्या॰)] भवरागो भवनन्दी भवतण्हा भवसिनेहो भवपरिळाहो भवमुच्छा भवज्झोसानं – अयं वुच्चति भवासवो।

११०५. तत्थ कतमो दिट्ठासवो? सस्सतो लोकोति वा, असस्सतो लोकोति वा, अन्तवा लोकोति वा, अनन्तवा लोकोति वा, तं जीवं तं सरीरन्ति वा, अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरन्ति वा, होति तथागतो परं मरणाति वा, न होति तथागतो परं मरणाति वा, होति च न च होति तथागतो परं मरणाति वा, नेव होति न न होति तथागतो परं मरणाति वा; या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पटिग्गाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति दिट्ठासवो। सब्बापि मिच्छादिट्ठि दिट्ठासवो।

११०६. तत्थ कतमो अविज्जासवो? दुक्खे अञ्ञाणं, दुक्खसमुदये अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधे अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय अञ्ञाणं, पुब्बन्ते अञ्ञाणं, अपरन्ते अञ्ञाणं, पुब्बन्तापरन्ते अञ्ञाणं, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अञ्ञाणंः यं एवरूपं अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो असंगाहना अपरियोगाहना असमपेक्खना अपच्चवेक्खणा अपच्चक्खकम्मं दुम्मेज्झं बाल्यं असम्पजञ्ञं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – अयं वुच्चति अविज्जासवो।

इमे धम्मा आसवा।

११०७. कतमे धम्मा नो आसवा? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो आसवा।

११०८. कतमे धम्मा सासवा? कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो… पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सासवा।

११०९. कतमे धम्मा अनासवा? अपरियापन्ना मग्गा च मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनासवा।

१११०. कतमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता।

११११. कतमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता।

१११२. कतमे धम्मा आसवा चेव सासवा च? तेयेव आसवा आसवा चेव सासवा च।

१११३. कतमे धम्मा सासवा चेव नो च आसवा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सासवा, ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सासवा चेव नो च आसवा।

१११४. कतमे धम्मा आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता च? कामासवो अविज्जासवेन आसवो चेव आसवसम्पयुत्तो च, अविज्जासवो कामासवेन आसवो चेव आसवसम्पयुत्तो च, भवासवो अविज्जासवेन आसवो चेव आसवसम्पयुत्तो च, अविज्जासवो भवासवेन आसवो चेव आसवसम्पयुत्तो च, दिट्ठासवो अविज्जासवेन आसवो चेव आसवसम्पयुत्तो च, अविज्जासवो दिट्ठासवेन आसवो चेव आसवसम्पयुत्तो च – इमे धम्मा आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता च।

१११५. कतमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता चेव नो च आसवा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मे ठपेत्वा वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता चेव नो च आसवा।

१११६. कतमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता सासवा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, रूपक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता सासवा।

१११७. कतमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता अनासवा? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता अनासवा।

निक्खेपकण्डे पठमभाणवारो।

संयोजनगोच्छकं

१११८. कतमे धम्मा संयोजना? दस संयोजनानि – कामरागसंयोजनं, पटिघसंयोजनं, मानसंयोजनं, दिट्ठिसंयोजनं, विचिकिच्छासंयोजनं, सीलब्बतपरामाससंयोजनं, भवरागसंयोजनं, इस्सासंयोजनं, मच्छरियसंयोजनं, अविज्जासंयोजनं।

१११९. तत्थ कतमं कामरागसंयोजनं? यो कामेसु कामच्छन्दो कामरागो कामनन्दी कामतण्हा कामसिनेहो कामपरिळाहो काममुच्छा कामज्झोसानं – इदं वुच्चति कामरागसंयोजनं।

११२०. तत्थ कतमं पटिघसंयोजनं? अनत्थं मे अचरीति आघातो जायति, अनत्थं मे चरतीति आघातो जायति, अनत्थं मे चरिस्सतीति आघातो जायति, पियस्स मे मनापस्स अनत्थं अचरि…पे०… अनत्थं चरति…पे०… अनत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अप्पियस्स मे अमनापस्स अत्थं अचरि…पे०… अत्थं चरति…पे०… अत्थं चरिस्सतीति

आघातो जायति, अट्ठाने वा पन आघातो जायति। यो एवरूपो चित्तस्स आघातो पटिघातो पटिघं पटिविरोधो कोपो पकोपो सम्पकोपो दोसो पदोसो सम्पदोसो चित्तस्स ब्यापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्झना कुज्झितत्तं दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – इदं वुच्चति पटिघसंयोजनं।

११२१. तत्थ कतमं मानसंयोजनं? सेय्योहमस्मीति मानो, सदिसोहमस्मीति मानो, हीनोहमस्मीति मानो। यो एवरूपो मानो मञ्ञना मञ्ञितत्तं उन्नति उन्नमो [उण्णति उण्णामो (स्या०)] धजो सम्पग्गाहो केतुकम्यता चित्तस्स – इदं वुच्चति मानसंयोजनं।

११२२. तत्थ कतमं दिट्ठिसंयोजनं? सस्सतो लोकोति वा, असस्सतो लोकोति वा, अन्तवा लोकोति वा, अनन्तवा लोकोति वा, तं जीवं तं सरीरन्ति वा, अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरन्ति वा, होति तथागतो परं मरणाति वा, न होति तथागतो परं मरणाति वा, होति च न च होति तथागतो परं मरणाति वा, नेव होति न न होति तथागतो परं मरणाति वा; या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पटिग्गाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – इदं वुच्चति दिट्ठिसंयोजनं। ठपेत्वा सीलब्बतपरामाससंयोजनं सब्बापि मिच्छादिट्ठि दिट्ठिसंयोजनं।

११२३. तत्थ कतमं विचिकिच्छासंयोजनं? सत्थरि कङ्खति विचिकिच्छति, धम्मे कङ्खति विचिकिच्छति, सङ्घे कङ्खति विचिकिच्छति, सिक्खाय कङ्खति विचिकिच्छति, पुब्बन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, अपरन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, पुब्बन्तापरन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु कङ्खति विचिकिच्छतिः या एवरूपा कङ्खा कङ्खायना कङ्खायितत्तं विमति विचिकिच्छा द्वेळ्हकं द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो आसप्पना परिसप्पना अपरियोगाहना थम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो – इदं वुच्चति विचिकिच्छासंयोजनं।

११२४. तत्थ कतमं सीलब्बतपरामाससंयोजनं? इतो बहिद्धा समणब्राह्मणानं सीलेन सुद्धि वतेन सुद्धि सीलब्बतेन सुद्धीति; या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – इदं वुच्चति सीलब्बतपरामाससंयोजनं।

११२५. तत्थ कतमं भवरागसंयोजनं? यो भवेसु भवछन्दो भवरागो भवनन्दी भवतण्हा भवसिनेहो भवपरिळाहो भवमुच्छा भवज्झोसानं – इदं वुच्चति भवरागसंयोजनं।

११२६. तत्थ कतमं इस्सासंयोजनं? या परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं [उस्सुया उस्सुयना उस्सुयितत्तं (क०)] – इदं वुच्चति इस्सासंयोजनं।

११२७. तत्थ कतमं मच्छरियसंयोजनं? पञ्च मच्छरियानि – आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, धम्ममच्छरियं। यं एवरूपं मच्छेरं मच्छरायना मच्छरायितत्तं वेविच्छं कदरियं कटुकञ्चुकता अग्गहितत्तं चित्तस्स – इदं वुच्चति मच्छरियसंयोजनं।

११२८. तत्थ कतमं अविज्जासंयोजनं? दुक्खे अञ्ञाणं, दुक्खसमुदये अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधे अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय अञ्ञाणं, पुब्बन्ते अञ्ञाणं, अपरन्ते अञ्ञाणं, पुब्बन्तापरन्ते अञ्ञाणं, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अञ्ञाणं॰ः यं एवरूपं अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो असंगाहना अपरियोगाहना असमपेक्खना अपच्चवेक्खणा अपच्चक्खकम्मं दुम्मेज्झं बाल्यं असम्पजञ्ञं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – इदं वुच्चति अविज्जासंयोजनं।

इमे धम्मा संयोजना।

११२९. कतमे धम्मा नो संयोजना? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो संयोजना।

११३०. कतमे धम्मा संयोजनिया? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा संयोजनिया।

११३१. कतमे धम्मा असंयोजनिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा असंयोजनिया।

११३२. कतमे धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता।

११३३. कतमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता।

११३४. कतमे धम्मा संयोजना चेव संयोजनिया च? तानेव संयोजनानि संयोजना चेव संयोजनिया च।

११३५. कतमे धम्मा संयोजनिया चेव नो च संयोजना? तेहि धम्मेहि ये धम्मा संयोजनिया, ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा संयोजनिया चेव नो च संयोजना।

११३६. कतमे धम्मा संयोजना चेव संयोजनसम्पयुत्ता च? कामरागसंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं कामरागसंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, पटिघसंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं पटिघसंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, मानसंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं मानसंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, दिट्ठिसंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं दिट्ठिसंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, विचिकिच्छासंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं विचिकिच्छासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च,

सीलब्बतपरामाससंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं सीलब्बतपरामाससंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, भवरागसंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं भवरागसंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, इस्सासंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं इस्सासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, मच्छरियसंयोजनं अविज्जासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, अविज्जासंयोजनं मच्छरियसंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च – इमे धम्मा संयोजना चेव संयोजनसम्पयुत्ता च।

११३७. कतमे धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता चेव नो च संयोजना? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मे ठपेत्वा वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता चेव नो च संयोजना।

११३८. कतमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता संयोजनिया? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता संयोजनिया।

११३९. कतमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता असंयोजनिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता असंयोजनिया।

गन्थगोच्छकं

११४०. कतमे धम्मा गन्था? चत्तारो गन्था – अभिज्झा कायगन्थो, ब्यापादो कायगन्थो, सीलब्बतपरामासो कायगन्थो, इदंसच्चाभिनिवेसो कायगन्थो।

११४१. तत्थ कतमो अभिज्झा कायगन्थो? यो रागो सारागो अनुनयो अनुरोधो नन्दी नन्दीरागो चित्तस्स सारागो इच्छा मुच्छा अज्झोसानं गेधो पलिगेधो सङ्गो पङ्को एजा माया जनिका सञ्जननी सिब्बिनी जालिनी सरिता विसत्तिका सुत्तं विसटा आयूहिनी दुतिया पणिधि भवनेत्ति वनं वनथो सन्थवो सिनेहो अपेक्खा पटिबन्धु आसा आसिसना आसिसितत्तं रूपासा सद्दासा गन्धासा रसासा फोट्ठब्बासा लाभासा धनासा पुत्तासा जीवितासा जप्पा पजप्पा अभिजप्पा जप्पा जप्पना जप्पितत्तं लोलुप्पं लोलुप्पायना लोलुप्पायितत्तं पुच्छञ्जिकता साधुकम्यता अधम्मरागो विसमलोभो निकन्ति निकामना पत्थना पिहना सम्पत्थना कामतण्हा भवतण्हा विभवतण्हा रूपतण्हा अरूपतण्हा निरोधतण्हा रूपतण्हा सद्दतण्हा गन्धतण्हा रसतण्हा फोट्ठब्बतण्हा धम्मतण्हा ओघो योगो गन्थो उपादानं आवरणं नीवरणं छादनं बन्धनं उपक्किलेसो अनुसयो परियुट्ठानं लता वेविच्छं दुक्खमूलं दुक्खनिदानं दुक्खप्पभवो मारपासो मारबळिसं मारविसयो तण्हानदी तण्हाजालं तण्हागद्दुलं तण्हासमुद्दो अभिज्झा लोभो अकुसलमूलं – अयं वुच्चति अभिज्झा कायगन्थो।

११४२. तत्थ कतमो ब्यापादो कायगन्थो? अनत्थं मे अचरी ति आघातो जायति, अनत्थं मे चरतीति आघातो जायति, अनत्थं मे चरिस्सतीति आघातो जायति, पियस्स मे मनापस्स अनत्थं अचरि…पे०… अनत्थं चरति…पे०… अनत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अप्पियस्स मे अमनापस्स अत्थं अचरि…पे०… अत्थं चरति…पे०… अत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अट्ठाने वा पन आघातो जायति। यो एवरूपो चित्तस्स आघातो पटिघातो पटिघं पटिविरोधो कोपो पकोपो सम्पकोपो दोसो पदोसो सम्पदोसो चित्तस्स ब्यापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्झना कुज्झितत्तं दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति

ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – अयं वुच्चति ब्यापादो कायगन्थो।

११४३. तत्थ कतमो सीलब्बतपरामासो कायगन्थो? इतो बहिद्धा समणब्राह्मणानं सीलेन सुद्धि, वतेन सुद्धि, सीलब्बतेन सुद्धीतिः या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति सीलब्बतपरामासो कायगन्थो।

११४४. तत्थ कतमो इदंसच्चाभिनिवेसो कायगन्थो? सस्सतो लोको, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; असस्सतो लोको, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; अन्तवा लोको, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; अनन्तवा लोको, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; तं जीवं तं सरीरं, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरं, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; होति तथागतो परं मरणा, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; न होति तथागतो परं मरणा, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; होति च न च होति तथागतो परं मरणा, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वा; नेव होति न न होति तथागतो परं मरणा, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति वाः या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति इदंसच्चाभिनिवेसो कायगन्थो। ठपेत्वा सीलब्बतपरामासं कायगन्थं सब्बापि मिच्छादिट्ठि इदंसच्चाभिनिवेसो कायगन्थो।

इमे धम्मा गन्था।

११४५. कतमे धम्मा नो गन्था? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो गन्था।

११४६. कतमे धम्मा गन्थनिया? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा गन्थनिया।

११४७. कतमे धम्मा अगन्थनिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अगन्थनिया।

११४८. कतमे धम्मा गन्थसम्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा गन्थसम्पयुत्ता।

११४९. कतमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं असङ्खता च धातु – इमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता।

११५०. कतमे धम्मा गन्था चेव गन्थनिया च? तेव गन्था गन्था चेव गन्थनिया च।

११५१. कतमे धम्मा गन्थनिया चेव नो च गन्था? तेहि धम्मेहि ये धम्मा गन्थनिया, ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा सासवा

कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा गन्थनिया चेव नो च गन्था।

११५२. कतमे धम्मा गन्था चेव गन्थसम्पयुत्ता च? सीलब्बतपरामासो कायगन्थो अभिज्झाकायगन्थेन गन्थो चेव गन्थसम्पयुत्तो च, अभिज्झाकायगन्थो सीलब्बतपरामासेन कायगन्थेन गन्थो चेव गन्थसम्पयुत्तो च, इदंसच्चाभिनिवेसो कायगन्थो अभिज्झाकायगन्थेन गन्थो चेव गन्थसम्पयुत्तो च, अभिज्झाकायगन्थो इदंसच्चाभिनिवेसेन कायगन्थेन गन्थो चेव गन्थसम्पयुत्तो च – इमे धम्मा गन्था चेव गन्थसम्पयुत्ता च।

११५३. कतमे धम्मा गन्थसम्पयुत्ता चेव नो च गन्था? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मे ठपेत्वा वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा गन्थसम्पयुत्ता चेव नो च गन्था।

११५४. कतमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता गन्थनिया? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता गन्थनिया।

११५५. कतमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता अगन्थनिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता अगन्थनिया।

ओघगोच्छकं

११५६. कतमे धम्मा ओघा? चत्तारो ओघा...पे०... इमे धम्मा ओघविप्पयुत्ता ओघनिया।

योगगोच्छकं

११५७. कतमे धम्मा योगा? चत्तारो योगा...पे०... इमे धम्मा योगविप्पयुत्ता योगनिया।

नीवरणगोच्छकं

११५८. कतमे धम्मा नीवरणा? छ नीवरणा [नीवरणानि (स्या०)] – कामच्छन्दनीवरणं, ब्यापादनीवरणं, थिनमिद्धनीवरणं, उद्धच्चकुक्कुच्चनीवरणं, विचिकिच्छानीवरणं, अविज्जानीवरणं।

११५९. तत्थ कतमं कामच्छन्दनीवरणं? यो कामेसु कामच्छन्दो कामरागो कामनन्दी कामतण्हा कामसिनेहो कामपरिळाहो काममुच्छा कामज्झोसानं – इदं वुच्चति कामच्छन्दनीवरणं।

११६०. तत्थ कतमं ब्यापादनीवरणं? अनत्थं मे अचरीति आघातो जायति, अनत्थं मे चरतीति आघातो जायति; अनत्थं मे चरिस्सतीति आघातो जायति; पियस्स मे मनापस्स अनत्थं अचरि...पे०... अनत्थं चरति...पे०... अनत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अप्पियस्स मे अमनापस्स अत्थं अचरि...पे०... अत्थं चरति...पे०... अत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अट्ठाने वा पन आघातो जायति। यो एवरूपो चित्तस्स आघातो पटिघातो पटिघं पटिविरोधो कोपो पकोपो सम्पकोपो दोसो पदोसो सम्पदोसो चित्तस्स ब्यापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्झना कुज्झितत्तं दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – इदं वुच्चति ब्यापादनीवरणं।

११६१. तत्थ कतमं थिनमिद्धनीवरणं? अत्थि थिनं, अत्थि मिद्धं।

११६२. तत्थ कतमं थिनं? या चित्तस्स अकल्लता अकम्मञ्ञता ओलीयना सल्लीयना लीनं लीयना लीयितत्तं थिनं थियना थियितत्तं चित्तस्स – इदं वुच्चति थिनं।

११६३. तत्थ कतमं मिद्धं? या कायस्स अकल्लता अकम्मञ्ञता ओनाहो परियोनाहो अन्तोसमोरोधो मिद्धं सोप्पं पचलायिका सोप्पं सुपना सुपितत्तं – इदं वुच्चति मिद्धं। इति इदञ्च थिनं, इदञ्च मिद्धं – इदं वुच्चति थिनमिद्धनीवरणं।

११६४. तत्थ कतमं उद्धच्चकुक्कुच्चनीवरणं? अत्थि उद्धच्चं, अत्थि कुक्कुच्चं।

११६५. तत्थ कतमं उद्धच्चं? यं चित्तस्स उद्धच्चं अवूपसमो चेतसो विक्खेपो भन्तत्तं चित्तस्स – इदं वुच्चति उद्धच्चं।

११६६. तत्थ कतमं कुक्कुच्चं? अकप्पिये कप्पियसञ्ञिता, कप्पिये अकप्पियसञ्ञिता, अवज्जे वज्जसञ्ञिता, वज्जे अवज्जसञ्ञिता। यं एवरूपं कुक्कुच्चं कुक्कुच्चायना कुक्कुच्चायितत्तं चेतसो विप्पटिसारो मनोविलेखो – इदं वुच्चति कुक्कुच्चं। इति इदञ्च उद्धच्चं, इदञ्च कुक्कुच्चं – इदं वुच्चति उद्धच्चकुक्कुच्चनीवरणं।

११६७. तत्थ कतमं विचिकिच्छानीवरणं? सत्थरि कङ्खति विचिकिच्छति, धम्मे कङ्खति विचिकिच्छति, सङ्घे कङ्खति विचिकिच्छति, सिक्खाय कङ्खति विचिकिच्छति, पुब्बन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, अपरन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, पुब्बन्तापरन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु कङ्खति विचिकिच्छति। या एवरूपा कङ्खा कङ्खायना कङ्खायितत्तं विमति विचिकिच्छा द्वेळ्हकं द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो आसप्पना परिसप्पना अपरियोगाहना थम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो – इदं वुच्चति विचिकिच्छानीवरणं।

११६८. तत्थ कतमं अविज्जानीवरणं? दुक्खे अञ्ञाणं, दुक्खसमुदये अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधे अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय अञ्ञाणं, पुब्बन्ते अञ्ञाणं, अपरन्ते अञ्ञाणं, पुब्बन्तापरन्ते अञ्ञाणं, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अञ्ञाणं ः यं एवरूपं अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो असंगाहना अपरियोगाहना असमपेक्खना अपच्चवेक्खणा अपच्चक्खकम्मं दुम्मेज्झं बाल्यं असम्पजञ्ञं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – इदं वुच्चति अविज्जानीवरणं।

इमे धम्मा नीवरणा।

११६९. कतमे धम्मा नो नीवरणा? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो नीवरणा।

११७०. कतमे धम्मा नीवरणिया? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा नीवरणिया।

११७१. कतमे धम्मा अनीवरणिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनीवरणिया।

११७२. कतमे धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता।

११७३. कतमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता।

११७४. कतमे धम्मा नीवरणा चेव नीवरणिया च? तानेव नीवरणानि नीवरणा चेव नीवरणिया च।

११७५. कतमे धम्मा नीवरणिया चेव नो च नीवरणा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा नीवरणिया, ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा नीवरणिया चेव नो च नीवरणा।

११७६. कतमे धम्मा नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता च? कामच्छन्दनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, अविज्जानीवरणं कामच्छन्दनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, ब्यापादनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, अविज्जानीवरणं ब्यापादनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, थिनमिद्धनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, अविज्जानीवरणं थिनमिद्धनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, अविज्जानीवरणं उद्धच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, कुक्कुच्चनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, अविज्जानीवरणं कुक्कुच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, विचिकिच्छानीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, अविज्जानीवरणं विचिकिच्छानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, कामच्छन्दनीवरणं उद्धच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चनीवरणं कामच्छन्दनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, ब्यापादनीवरणं उद्धच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चनीवरणं ब्यापादनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, थिनमिद्धनीवरणं उद्धच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चनीवरणं थिनमिद्धनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, कुक्कुच्चनीवरणं उद्धच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चनीवरणं कुक्कुच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, विचिकिच्छानीवरणं उद्धच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चनीवरणं विचिकिच्छानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, अविज्जानीवरणं उद्धच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्च – इमे धम्मा नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता च।

११७७. कतमे धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता चेव नो च नीवरणा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मे ठपेत्वा वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता चेव नो च नीवरणा।

११७८. कतमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता नीवरणिया? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता सासवा कुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता नीवरणिया।

११७९. कतमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता अनीवरणिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता अनीवरणिया।

परामासगोच्छकं

११८०. कतमे धम्मा परामासा? दिट्ठिपरामासो।

११८१. तत्थ कतमो दिट्ठिपरामासो? सस्सतो लोकोति वा, असस्सतो लोकोति वा, अन्तवा लोकोति वा, अनन्तवा लोकोति वा, तं जीवं तं सरीरन्ति वा, अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरन्ति वा, होति तथागतो परं मरणाति वा, न होति तथागतो परं मरणाति वा, होति च न च होति तथागतो परं मरणाति वा, नेव होति न न होति तथागतो परं मरणाति वाः या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति दिट्ठिपरामासो। सब्बापि मिच्छादिट्ठि दिट्ठिपरामासो।

इमे धम्मा परामासा।

११८२. कतमे धम्मा नो परामासा? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो परामासा।

११८३. कतमे धम्मा परामट्ठा? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा परामट्ठा।

११८४. कतमे धम्मा अपरामट्ठा? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अपरामट्ठा।

११८५. कतमे धम्मा परामाससम्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा परामाससम्पयुत्ता।

११८६. कतमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता।

११८७. कतमे धम्मा परामासा चेव परामट्ठा च? स्वेव परामासो परामासो चेव परामट्ठो च।

११८८. कतमे धम्मा परामट्ठा चेव नो च परामासा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा परामट्ठा, ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा परामट्ठा चेव नो च परामासा।

११८९. कतमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता परामट्ठा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता सासवा कुसलाकुसलाब्याकता

धम्मा कामावचरा, रूपावचरा अरूपावचरा; रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता परामट्ठा।

११९०. कतमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता अपरामट्ठा? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता अपरामट्ठा।

महन्तरदुकं

११९१. कतमे धम्मा सारम्मणा? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सारम्मणा।

११९२. कतमे धम्मा अनारम्मणा? सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनारम्मणा।

११९३. कतमे धम्मा चित्ता? चक्खुविञ्ञाणं, सोतविञ्ञाणं, घानविञ्ञाणं, जिव्हाविञ्ञाणं, कायविञ्ञाणं, मनोधातु, मनोविञ्ञाणधातु – इमे धम्मा चित्ता।

११९४. कतमे धम्मा नो चित्ता? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो चित्ता।

११९५. कतमे धम्मा चेतसिका? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चेतसिका।

११९६. कतमे धम्मा अचेतसिका? चित्तञ्च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अचेतसिका।

११९७. कतमे धम्मा चित्तसम्पयुत्ता? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसम्पयुत्ता।

११९८. कतमे धम्मा चित्तविप्पयुत्ता? सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा चित्तविप्पयुत्ता। चित्तं न वत्तब्बं – चित्तेन सम्पयुत्तन्तिपि, चित्तेन विप्पयुत्तन्तिपि।

११९९. कतमे धम्मा चित्तसंसट्ठा? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसंसट्ठा।

१२००. कतमे धम्मा चित्तविसंसट्ठा? सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा चित्तविसंसट्ठा। चित्तं न वत्तब्बं – चित्तेन संसट्ठन्तिपि, चित्तेन विसंसट्ठन्तिपि।

१२०१. कतमे धम्मा चित्तसमुट्ठाना? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो; कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति; यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं चित्तजं चित्तहेतुकं चित्तसमुट्ठानं रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इमे धम्मा चित्तसमुट्ठाना।

१२०२. कतमे धम्मा नो चित्तसमुट्ठाना? चित्तञ्च, अवसेसञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो चित्तसमुट्ठाना।

१२०३. कतमे धम्मा चित्तसहभुनो? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति – इमे धम्मा चित्तसहभुनो।

१२०४. कतमे धम्मा नो चित्तसहभुनो? चित्तञ्च, अवसेसञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो चित्तसहभुनो।

१२०५. कतमे धम्मा चित्तानुपरिवत्तिनो? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति – इमे धम्मा चित्तानुपरिवत्तिनो।

१२०६. कतमे धम्मा नो चित्तानुपरिवत्तिनो? चित्तञ्च, अवसेसञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो चित्तानुपरिवत्तिनो।

१२०७. कतमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना।

१२०८. कतमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना? चित्तञ्च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना।

१२०९. कतमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो।

१२१०. कतमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो? चित्तञ्च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो।

१२११. कतमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो।

१२१२. कतमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो? चित्तञ्च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो।

१२१३. कतमे धम्मा अज्झत्तिका? चक्खायतनं...पे०... मनायतनं – इमे धम्मा अज्झत्तिका।

१२१४. कतमे धम्मा बाहिरा? रूपायतनं...पे०... धम्मायतनं – इमे धम्मा बाहिरा।

१२१५. कतमे धम्मा उपादा? चक्खायतनं...पे०... कबळीकारो आहारो – इमे धम्मा उपादा।

१२१६. कतमे धम्मा नो उपादा? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो, चत्तारो च महाभूता, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो उपादा।

१२१७. कतमे धम्मा उपादिण्णा? सासवा कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा;

वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; यञ्च रूपं कम्मस्स कतत्ता – इमे धम्मा उपादिण्णा।

१२१८. कतमे धम्मा अनुपादिण्णा? सासवा कुसलाकुसला धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; ये च धम्मा किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका, यञ्च रूपं न कम्मस्स कतत्ता, अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनुपादिण्णा।

उपादानगोच्छकं

१२१९. कतमे धम्मा उपादाना? चत्तारि उपादानानि – कामुपादानं, दिट्ठुपादानं, सीलब्बतुपादानं, अत्तवादुपादानं [कामूपादानं दिट्ठूपादानं सीलब्बतूपादानं अत्तवादूपादानं (सी०)]।

१२२०. तत्थ कतमं कामुपादानं? यो कामेसु कामच्छन्दो कामरागो कामनन्दी कामतण्हा कामसिनेहो कामपरिळाहो काममुच्छा कामज्झोसानं – इदं वुच्चति कामुपादानं।

१२२१. तत्थ कतमं दिट्ठुपादानं? नत्थि दिन्नं, नत्थि यिट्ठं, नत्थि हुतं, नत्थि सुकतदुक्कटानं कम्मानं फलं विपाको, नत्थि अयं लोको, नत्थि परो लोको, नत्थि माता, नत्थि पिता, नत्थि सत्ता ओपपातिका, नत्थि लोके समणब्राह्मणा सम्मग्गता [समग्गता (क०)] सम्मापटिपन्ना, ये इमञ्च लोकं परञ्च लोकं सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदेन्तीति – या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – इदं वुच्चति दिट्ठुपादानं। ठपेत्वा सीलब्बतुपादानञ्च अत्तवादुपादानञ्च सब्बापि मिच्छादिट्ठि दिट्ठुपादानं।

१२२२. तत्थ कतमं सीलब्बतुपादानं? इतो बहिद्धा समणब्राह्मणानं सीलेन सुद्धि, वतेन सुद्धि, सीलब्बतेन सुद्धीति – या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – इदं वुच्चति सीलब्बतुपादानं।

१२२३. तत्थ कतमं अत्तवादुपादानं? इध अस्सुतवा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावी अरियधम्मस्स अकोविदो अरियधम्मे अविनीतो सप्पुरिसानं अदस्सावी सप्पुरिसधम्मस्स अकोविदो सप्पुरिसधम्मे अविनीतो रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मिं वा अत्तानं। वेदनं...पे०... सञ्ञं...पे०... सङ्खारे...पे०... विञ्ञाणं अत्ततो समनुपस्सति, विञ्ञाणवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा विञ्ञाणं विञ्ञाणस्मिं वा अत्तानं। या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – इदं वुच्चति अत्तवादुपादानं।

इमे धम्मा उपादाना।

१२२४. कतमे धम्मा नो उपादाना? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो उपादाना।

१२२५. कतमे धम्मा उपादानिया? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा उपादानिया।

१२२६. कतमे धम्मा अनुपादानिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनुपादानिया।

१२२७. कतमे धम्मा उपादानसम्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा उपादानसम्पयुत्ता।

१२२८. कतमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता।

१२२९. कतमे धम्मा उपादाना चेव उपादानिया च? तानेव उपादानानि उपादाना चेव उपादानिया च।

१२३०. कतमे धम्मा उपादानिया चेव नो च उपादाना? तेहि धम्मेहि ये धम्मा उपादानिया, ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा उपादानिया चेव नो च उपादाना।

१२३१. कतमे धम्मा उपादाना चेव उपादानसम्पयुत्ता च? दिट्ठुपादानं कामुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसम्पयुत्तञ्च, कामुपादानं दिट्ठुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसम्पयुत्तञ्च, सीलब्बतुपादानं कामुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसम्पयुत्तञ्च, कामुपादानं सीलब्बतुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसम्पयुत्तञ्च, अत्तवादुपादानं कामुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसम्पयुत्तञ्च, कामुपादानं अत्तवादुपादानेन उपादानञ्चेव उपादानसम्पयुत्तञ्च – इमे धम्मा उपादाना चेव उपादानसम्पयुत्ता च।

१२३२. कतमे धम्मा उपादानसम्पयुत्ता चेव नो च उपादाना? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता, ते धम्मे ठपेत्वा वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा उपादानसम्पयुत्ता चेव नो च उपादाना।

१२३३. कतमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता उपादानिया? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता उपादानिया।

१२३४. कतमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता अनुपादानिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता अनुपादानिया।

निक्खेपकण्डे दुतियभाणवारो।

किलेसगोच्छकं

१२३५. कतमे धम्मा किलेसा? दस किलेसवत्थूनि – लोभो, दोसो, मोहो, मानो, दिट्ठि, विचिकिच्छा, थिनं, उद्धच्चं,

अहिरीकं, अनोत्तप्पं।

१२३६. तत्थ कतमो लोभो? यो रागो सारागो अनुनयो अनुरोधो नन्दी नन्दीरागो चित्तस्स सारागो इच्छा मुच्छा अज्झोसानं गेधो पलिगेधो सङ्गो पङ्को एजा माया जनिका सञ्जननी सिब्बिनी जालिनी सरिता विसत्तिका सुत्तं विसटा आयूहिनी दुतिया पणिधि भवनेत्ति वनं वनथो सन्थवो सिनेहो अपेक्खा पटिबन्धु आसा आसिसना आसिसितत्तं रूपासा सद्दासा गन्धासा रसासा फोट्ठब्बासा लाभासा धनासा पुत्तासा जीवितासा जप्पा पजप्पा अभिजप्पा जप्पा जप्पना जप्पितत्तं लोलुप्पं लोलुप्पायना लोलुप्पायितत्तं पुच्छञ्जिकता साधुकम्यता अधम्मरागो विसमलोभो निकन्ति निकामना पत्थना पिहना सम्पत्थना कामतण्हा भवतण्हा विभवतण्हा रूपतण्हा अरूपतण्हा निरोधतण्हा रूपतण्हा सद्दतण्हा गन्धतण्हा रसतण्हा फोट्ठब्बतण्हा धम्मतण्हा ओघो योगो गन्थो उपादानं आवरणं नीवरणं छादनं बन्धनं उपक्किलेसो अनुसयो परियुट्ठानं लता वेविच्छं दुक्खमूलं दुक्खनिदानं दुक्खप्पभवो मारपासो मारबळिसं मारविसयो तण्हानदी तण्हाजालं तण्हागद्दुलं तण्हासमुद्दो अभिज्झा लोभो अकुसलमूलं – अयं वुच्चति लोभो।

१२३७. तत्थ कतमो दोसो? अनत्थं मे अचरीति आघातो जायति, अनत्थं मे चरतीति आघातो जायति, अनत्थं मे चरिस्सतीति आघातो जायति, पियस्स मे मनापस्स अनत्थं अचरि...पे०... अनत्थं चरति...पे०... अनत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अप्पियस्स मे अमनापस्स अत्थं अचरि...पे०... अत्थं चरति...पे०... अत्थं चरिस्सतीति आघातो जायति, अट्ठाने वा पन आघातो जायति। यो एवरूपो चित्तस्स आघातो पटिघातो पटिघं पटिविरोधो कोपो पकोपो सम्पकोपो दोसो पदोसो सम्पदोसो चित्तस्स ब्यापत्ति मनोपदोसो कोधो कुज्झना कुज्झितत्तं दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – अयं वुच्चति दोसो।

१२३८. तत्थ कतमो मोहो? दुक्खे अञ्ञाणं, दुक्खसमुदये अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधे अञ्ञाणं, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय अञ्ञाणं, पुब्बन्ते अञ्ञाणं, अपरन्ते अञ्ञाणं, पुब्बन्तापरन्ते अञ्ञाणं, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अञ्ञाणं। यं एवरूपं अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो असंगाहना अपरियोगाहना असमपेक्खना अपच्चवेक्खणा अपच्चक्खकम्मं दुम्मेज्झं बाल्यं असम्पजञ्ञं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – अयं वुच्चति मोहो।

१२३९. तत्थ कतमो मानो? सेय्योहमस्मीति मानो, सदिसोहमस्मीति मानो, हीनोहमस्मीति मानो; यो एवरूपो मानो मञ्ञना मञ्ञितत्तं उन्नति उन्नमो धजो सम्पग्गाहो केतुकम्यता चित्तस्स – अयं वुच्चति मानो।

१२४०. तत्थ कतमा दिट्ठि? सस्सतो लोकोति वा, असस्सतो लोकोति वा, अन्तवा लोकोति वा, अनन्तवा लोकोति वा, तं जीवं तं सरीरन्ति वा, अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरन्ति वा, होति तथागतो परं मरणाति वा, न होति तथागतो परं मरणाति वा, होति च न च होति तथागतो परं मरणाति वा, नेव होति न न होति तथागतो परं मरणाति वाः या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति दिट्ठि। सब्बापि मिच्छादिट्ठि दिट्ठि।

१२४१. तत्थ कतमा विचिकिच्छा? सत्थरि कङ्खति विचिकिच्छति, धम्मे कङ्खति विचिकिच्छति, सङ्घे कङ्खति विचिकिच्छति सिक्खाय कङ्खति विचिकिच्छति, पुब्बन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, अपरन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, पुब्बन्तापरन्ते कङ्खति विचिकिच्छति, इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु कङ्खति विचिकिच्छतिः या एवरूपा कङ्खा

कङ्खायना कङ्खायितत्तं विमति विचिकिच्छा द्वेळ्हकं द्वेधापथो संसयो, अनेकंसग्गाहो आसप्पना परिसप्पना अपरियोगाहना थम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो – अयं वुच्चति विचिकिच्छा।

१२४२. तत्थ कतमं थिनं? या चित्तस्स अकल्लता अकम्मञ्ञता ओलीयना सल्लीयना लीनं लीयना लीयितत्तं थिनं थियना थियितत्तं चित्तस्स – इदं वुच्चति थिनं।

१२४३. तत्थ कतमं उद्धच्चं? यं चित्तस्स उद्धच्चं अवूपसमो चेतसो विक्खेपो भन्तत्तं चित्तस्स – इदं वुच्चति उद्धच्चं।

१२४४. तत्थ कतमं अहिरिकं? यं न हिरीयति हिरियितब्बेन, न हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं वुच्चति अहिरिकं।

१२४५. तत्थ कतमं अनोत्तप्पं? यं न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन, न ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं वुच्चति अनोत्तप्पं।

इमे धम्मा किलेसा।

१२४६. कतमे धम्मा नो किलेसा? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो ...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा नो किलेसा।

१२४७. कतमे धम्मा संकिलेसिका? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा संकिलेसिका।

१२४८. कतमे धम्मा असंकिलेसिका? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा असंकिलेसिका।

१२४९. कतमे धम्मा संकिलिट्ठा? तीणि अकुसलमूलानि – लोभो, दोसो, मोहो; तदेकट्ठा च किलेसा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो, तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा संकिलिट्ठा।

१२५०. कतमे धम्मा असंकिलिट्ठा? कुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा असंकिलिट्ठा।

१२५१. कतमे धम्मा किलेससम्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा किलेससम्पयुत्ता।

१२५२. कतमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता वेदनाक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता।

१२५३. कतमे धम्मा किलेसा चेव संकिलेसिका च? तेव किलेसा किलेसा चेव संकिलेसिका च।

१२५४. कतमे धम्मा संकिलेसिका चेव नो च किलेसा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा संकिलेसिका, ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो — इमे धम्मा संकिलेसिका चेव नो च किलेसा।

१२५५. कतमे धम्मा किलेसा चेव संकिलिट्ठा च? तेव किलेसा किलेसा चेव संकिलिट्ठा च।

१२५६. कतमे धम्मा संकिलिट्ठा चेव नो च किलेसा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा संकिलिट्ठा, ते धम्मे ठपेत्वा वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो — इमे धम्मा संकिलिट्ठा चेव नो च किलेसा।

१२५७. कतमे धम्मा किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता च? लोभो मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, मोहो लोभेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, दोसो मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, मोहो दोसेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, मानो मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, मोहो मानेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, दिट्ठि मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्ता च, मोहो दिट्ठिया किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, विचिकिच्छा मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्ता च, मोहो विचिकिच्छाय किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, थिनं मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मोहो थिनेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, उद्धच्चं मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मोहो उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अहिरिकं मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मोहो अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अनोत्तप्पं मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मोहो अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, लोभो उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, उद्धच्चं लोभेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, दोसो उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, उद्धच्चं दोसेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मोहो उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, उद्धच्चं मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मानो उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, उद्धच्चं मानेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, दिट्ठि उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्ता च, उद्धच्चं दिट्ठिया किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, विचिकिच्छा उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्ता च, उद्धच्चं विचिकिच्छाय किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, थिनं उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चं थिनेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अहिरिकं उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चं अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अनोत्तप्पं उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चं अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, लोभो अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अहिरिकं लोभेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, दोसो अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अहिरिकं दोसेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मोहो अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अहिरिकं मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मानो अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अहिरिकं मानेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, दिट्ठि अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्ता च, अहिरिकं दिट्ठिया किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, विचिकिच्छा अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्ता च, अहिरिकं विचिकिच्छाय किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, थिनं अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अहिरिकं थिनेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चं अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अहिरिकं उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अनोत्तप्पं अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अहिरिकं अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, लोभो अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अनोत्तप्पं लोभेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, दोसो अनोत्तप्पेन किलेसो चेव

किलेससम्पयुत्तो च, अनोत्तप्पं दोसेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मोहो अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अनोत्तप्पं मोहेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, मानो अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तो च, अनोत्तप्पं मानेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, दिट्ठि अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्ता च, अनोत्तप्पं दिट्ठिया किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, विचिकिच्छा अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्ता च, अनोत्तप्पं विचिकिच्छाय किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, थिनं अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अनोत्तप्पं थिनेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, उद्धच्चं अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अनोत्तप्पं उद्धच्चेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अहिरिकं अनोत्तप्पेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च, अनोत्तप्पं अहिरिकेन किलेसो चेव किलेससम्पयुत्तञ्च – इमे धम्मा किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता च।

१२५८. कतमे धम्मा किलेससम्पयुत्ता चेव नो च किलेसा? तेहि धम्मेहि ये धम्मा सम्पयुत्ता ते धम्मे ठपेत्वा वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा किलेससम्पयुत्ता चेव नो च किलेसा।

१२५९. कतमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता संकिलेसिका? तेहि धम्मेहि ये धम्मा विप्पयुत्ता सासवा कुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता संकिलेसिका।

१२६०. कतमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता असंकिलेसिका? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता असंकिलेसिका।

पिट्ठिदुकं

१२६१. कतमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा? तीणि संयोजनानि – सक्कायदिट्ठि, विचिकिच्छा, सीलब्बतपरामासो।

१२६२. तत्थ कतमा सक्कायदिट्ठि? इध अस्सुतवा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावी अरियधम्मस्स अकोविदो अरियधम्मे अविनीतो सप्पुरिसानं अदस्सावी सप्पुरिसधम्मस्स अकोविदो सप्पुरिसधम्मे अविनीतो रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मिं वा अत्तानं। वेदनं…पे०… सञ्ञं…पे०… सङ्खारे…पे०… विञ्ञाणं अत्ततो समनुपस्सति, विञ्ञाणवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा विञ्ञाणं, विञ्ञाणस्मिं वा अत्तानं। या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं…पे०… विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति सक्कायदिट्ठि।

१२६३. तत्थ कतमा विचिकिच्छा? सत्थरि कङ्खति विचिकिच्छति…पे०… थम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो – अयं वुच्चति विचिकिच्छा।

१२६४. तत्थ कतमो सीलब्बतपरामासो? इतो बहिद्धा समणब्राह्मणानं सीलेन सुद्धि वतेन सुद्धि सीलब्बतेन सुद्धीति – या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं…पे०… विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति सीलब्बतपरामासो। इमानि तीणि संयोजनानि, तदेकट्ठा च किलेसा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, तंसमुट्ठानं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा।

१२६५. कतमे धम्मा न दस्सनेन पहातब्बा? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे

धम्मा न दस्सनेन पहातब्बा।

१२६६. कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बा? अवसेसो लोभो दोसो मोहो, तदेकट्ठा च किलेसा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं मनोकम्मं — इमे धम्मा भावनाय पहातब्बा।

१२६७. कतमे धम्मा न भावनाय पहातब्बा? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो …पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु — इमे धम्मा न भावनाय पहातब्बा।

१२६८. कतमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका? तीणि संयोजनानि — सक्कायदिट्ठि, विचिकिच्छा, सीलब्बतपरामासो।

१२६९. तत्थ कतमा सक्कायदिट्ठि? इध अस्सुतवा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावी अरियधम्मस्स अकोविदो अरियधम्मे अविनीतो सप्पुरिसानं अदस्सावी सप्पुरिसधम्मस्स अकोविदो सप्पुरिसधम्मे अविनीतो रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मिं वा अत्तानं। वेदनं…पे०… सञ्ञं…पे०… सङ्खारे…पे०… विञ्ञाणं अत्ततो समनुपस्सति, विञ्ञाणवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा विञ्ञाणं, विञ्ञाणस्मिं वा अत्तानं। या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं…पे०… विपरियासग्गाहो — अयं वुच्चति सक्कायदिट्ठि।

१२७०. तत्थ कतमा विचिकिच्छा? सत्थरि कङ्खति विचिकिच्छति…पे०… थम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो — अयं वुच्चति विचिकिच्छा।

१२७१. तत्थ कतमो सीलब्बतपरामासो? इतो बहिद्धा समणब्राह्मणानं सीलेन सुद्धि वतेन सुद्धि सीलब्बतेन सुद्धीति — या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं…पे०… विपरियासग्गाहो — अयं वुच्चति सीलब्बतपरामासो। इमानि तीणि संयोजनानि, तदेकट्ठा च किलेसा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं — इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका। तीणि संयोजनानि — सक्कायदिट्ठि, विचिकिच्छा, सीलब्बतपरामासो — इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा। तदेकट्ठो लोभो दोसो मोहो — इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतू। तदेकट्ठा च किलेसा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं — इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका।

१२७२. कतमे धम्मा न दस्सनेन पहातब्बहेतुका? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु — इमे धम्मा न दस्सनेन पहातब्बहेतुका।

१२७३. कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतुका? अवसेसो लोभो दोसो मोहो — इमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतू। तदेकट्ठा च किलेसा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं — इमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतुका।

१२७४. कतमे धम्मा न भावनाय पहातब्बहेतुका? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च

धातु – इमे धम्मा न भावनाय पहातब्बहेतुका।

१२७५. कतमे धम्मा सवितक्का? सवितक्कभूमियं कामावचरे रूपावचरे अपरियापन्ने, वितक्कं ठपेत्वा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सवितक्का।

१२७६. कतमे धम्मा अवितक्का? अवितक्कभूमियं कामावचरे रूपावचरे अरूपावचरे अपरियापन्ने; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; वितक्को च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अवितक्का।

१२७७. कतमे धम्मा सविचारा? सविचारभूमियं कामावचरे रूपावचरे अपरियापन्ने, विचारं ठपेत्वा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सविचारा।

१२७८. कतमे धम्मा अविचारा? अविचारभूमियं कामावचरे रूपावचरे अरूपावचरे अपरियापन्ने; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; विचारो च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अविचारा।

१२७९. कतमे धम्मा सप्पीतिका? सप्पीतिकभूमियं कामावचरे रूपावचरे अपरियापन्ने, पीतिं ठपेत्वा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सप्पीतिका।

१२८०. कतमे धम्मा अप्पीतिका? अप्पीतिकभूमियं कामावचरे रूपावचरे अरूपावचरे अपरियापन्ने; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; पीति च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अप्पीतिका।

१२८१. कतमे धम्मा पीतिसहगता? पीतिभूमियं कामावचरे रूपावचरे अपरियापन्ने, पीतिं ठपेत्वा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा पीतिसहगता।

१२८२. कतमे धम्मा न पीतिसहगता? न पीतिभूमियं कामावचरे रूपावचरे अरूपावचरे अपरियापन्ने; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; पीति च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा न पीतिसहगता।

१२८३. कतमे धम्मा सुखसहगता? सुखभूमियं कामावचरे रूपावचरे अपरियापन्ने, सुखं ठपेत्वा, तंसम्पयुत्तो सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सुखसहगता।

१२८४. कतमे धम्मा न सुखसहगता? न सुखभूमियं कामावचरे रूपावचरे अरूपावचरे अपरियापन्ने; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो; सुखञ्च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा न सुखसहगता।

१२८५. कतमे धम्मा उपेक्खासहगता? उपेक्खाभूमियं कामावचरे रूपावचरे अरूपावचरे अपरियापन्ने, उपेक्खं ठपेत्वा, तंसम्पयुत्तो सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा उपेक्खासहगता।

१२८६. कतमे धम्मा न उपेक्खासहगता? न उपेक्खाभूमियं कामावचरे रूपावचरे अपरियापन्ने, वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, उपेक्खा च, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा न उपेक्खासहगता।

१२८७. कतमे धम्मा कामावचरा? हेट्ठतो अविचिनिरयं परियन्तं करित्वा, उपरितो परनिम्मितवसवत्ती देवे

[परनिम्मितवसवत्तिदेवे (सी॰ क॰)] अन्तो करित्वा, यं एतस्मिं अन्तरे एत्थावचरा एत्थ परियापन्ना खन्धधातु आयतना, रूपं वेदना सञ्ञा सङ्खारा विञ्ञाणं – इमे धम्मा कामावचरा।

१२८८. कतमे धम्मा न कामावचरा? रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना – इमे धम्मा न कामावचरा।

१२८९. कतमे धम्मा रूपावचरा? हेट्ठतो ब्रह्मलोकं परियन्तं करित्वा, उपरितो अकनिट्ठे देवे [अकनिट्ठदेवे (सी॰ क॰)] अन्तो करित्वा, यं एतस्मिं अन्तरे एत्थावचरा एत्थ परियापन्ना समापन्नस्स वा उपपन्नस्स वा दिट्ठधम्मसुखविहारिस्स [दिट्ठधम्मसुखविहारस्स (क॰)] वा चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा रूपावचरा।

१२९०. कतमे धम्मा न रूपावचरा? कामावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना – इमे धम्मा न रूपावचरा।

१२९१. कतमे धम्मा अरूपावचरा? हेट्ठतो आकासानञ्चायतनुपगे देवे परियन्तं करित्वा, उपरितो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनुपगे देवे अन्तो करित्वा, यं एतस्मिं अन्तरे एत्थावचरा एत्थ परियापन्ना समापन्नस्स वा उपपन्नस्स वा दिट्ठधम्मसुखविहारिस्स वा चित्तचेतसिका धम्मा – इमे धम्मा अरूपावचरा।

१२९२. कतमे धम्मा न अरूपावचरा? कामावचरा, रूपावचरा, अपरियापन्ना – इमे धम्मा न अरूपावचरा।

१२९३. कतमे धम्मा परियापन्ना? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, रूपक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा परियापन्ना।

१२९४. कतमे धम्मा अपरियापन्ना? मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अपरियापन्ना।

१२९५. कतमे धम्मा निय्यानिका? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना – इमे धम्मा निय्यानिका।

१२९६. कतमे धम्मा अनिय्यानिका? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनिय्यानिका।

१२९७. कतमे धम्मा नियता? पञ्च कम्मानि आनन्तरिकानि, या च मिच्छादिट्ठि नियता, चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना – इमे धम्मा नियता।

१२९८. कतमे धम्मा अनियता? ते धम्मे ठपेत्वा अवसेसा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनियता।

१२९९. कतमे धम्मा सउत्तरा? सासवा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा; रूपक्खन्धो…पे॰… विञ्ञाणक्खन्धो – इमे धम्मा सउत्तरा।

१३००. कतमे धम्मा अनुत्तरा? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनुत्तरा।

१३०१. कतमे धम्मा सरणा? तीणि अकुसलमूलानि लोभो, दोसो, मोहो; तदेकट्ठा च किलेसा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, तंसमुट्ठानं कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं – इमे धम्मा सरणा।

१३०२. कतमे धम्मा अरणा? कुसलाब्याकता धम्मा कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना; वेदनाक्खन्धो…पे०… विञ्ञाणक्खन्धो, सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अरणा।

अभिधम्मदुकं।

सुत्तन्तिकदुकनिक्खेपं

१३०३. कतमे धम्मा विज्जाभागिनो? विज्जाय सम्पयुत्तका धम्मा – इमे धम्मा विज्जाभागिनो।

१३०४. कतमे धम्मा अविज्जाभागिनो? अविज्जाय सम्पयुत्तका धम्मा – इमे धम्मा अविज्जाभागिनो।

१३०५. कतमे धम्मा विज्जूपमा? हेट्ठिमेसु तीसु अरियमग्गेसु पञ्ञा – इमे धम्मा विज्जूपमा।

१३०६. कतमे धम्मा वजिरूपमा? उपरिट्ठिमे अरहत्तमग्गे पञ्ञा – इमे धम्मा वजिरूपमा।

१३०७. कतमे धम्मा बाला? अहिरीकञ्च अनोत्तप्पञ्च – इमे धम्मा बाला। सब्बेपि अकुसला धम्मा बाला।

१३०८. कतमे धम्मा पण्डिता? हिरी च ओत्तप्पञ्च – इमे धम्मा पण्डिता। सब्बेपि कुसला धम्मा पण्डिता।

१३०९. कतमे धम्मा कण्हा? अहिरीकञ्च अनोत्तप्पञ्च – इमे धम्मा कण्हा। सब्बेपि अकुसला धम्मा कण्हा।

१३१०. कतमे धम्मा सुक्का? हिरी च ओत्तप्पञ्च – इमे धम्मा सुक्का? सब्बेपि कुसला धम्मा सुक्का।

१३११. कतमे धम्मा तपनीया? कायदुच्चरितं, वचीदुच्चरितं, मनोदुच्चरितं – इमे धम्मा तपनीया। सब्बेपि अकुसला धम्मा तपनीया।

१३१२. कतमे धम्मा अतपनीया? कायसुचरितं, वचीसुचरितं, मनोसुचरितं – इमे धम्मा अतपनीया। सब्बेपि कुसला धम्मा अतपनीया।

१३१३. कतमे धम्मा अधिवचना? या तेसं तेसं धम्मानं सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो नामं नामकम्मं नामधेय्यं निरुत्ति ब्यञ्जनं अभिलापो – इमे धम्मा अधिवचना। सब्बेव धम्मा अधिवचनपथा।

१३१४. कतमे धम्मा निरुत्ति? या तेसं तेसं धम्मानं सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो नामं नामकम्मं नामधेय्यं निरुत्ति ब्यञ्जनं अभिलापो – इमे धम्मा निरुत्ति। सब्बेव धम्मा निरुत्तिपथा।

१३१५. कतमे धम्मा पञ्ञत्ति? या तेसं तेसं धम्मानं सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो नामं नामकम्मं नामधेय्यं निरुत्ति ब्यञ्जनं अभिलापो – इमे धम्मा पञ्ञत्ति। सब्बेव धम्मा पञ्ञत्तिपथा।

१३१६. तत्थ कतमं नामं? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो, असङ्खता च धातु – इदं वुच्चति नामं।

१३१७. तत्थ कतमं रूपं? चत्तारो च महाभूता, चतुन्नञ्च महाभूतानं उपादाय रूपं – इदं वुच्चति रूपं।

१३१८. तत्थ कतमा अविज्जा? यं अञ्ञाणं अदस्सनं...पे०... अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – अयं वुच्चति अविज्जा।

१३१९. तत्थ कतमा भवतण्हा? यो भवेसु भवछन्दो...पे०... भवज्झोसानं – अयं वुच्चति भवतण्हा।

१३२०. तत्थ कतमा भवदिट्ठि? भविस्सति अत्ता च लोको चाति, या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति भवदिट्ठि।

१३२१. तत्थ कतमा विभवदिट्ठि? न भविस्सति अत्ता च लोको चाति, या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति विभवदिट्ठि।

१३२२. तत्थ कतमा सस्सतदिट्ठि? सस्सतो अत्ता च लोको चाति, या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति सस्सतदिट्ठि।

१३२३. तत्थ कतमा उच्छेददिट्ठि? उच्छिज्जिस्सति अत्ता च लोको चाति, या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति उच्छेददिट्ठि।

१३२४. तत्थ कतमा अन्तवा दिट्ठि? अन्तवा अत्ता च लोको चाति, या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति अन्तवा दिट्ठि।

१३२५. तत्थ कतमा अनन्तवा दिट्ठि? अनन्तवा अत्ता च लोको चाति, या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति अनन्तवा दिट्ठि।

१३२६. तत्थ कतमा पुब्बन्तानुदिट्ठि? पुब्बन्तं आरब्भ या उप्पज्जति दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति पुब्बन्तानुदिट्ठि।

१३२७. तत्थ कतमा अपरन्तानुदिट्ठि? अपरन्तं आरब्भ या उप्पज्जति दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति अपरन्तानुदिट्ठि।

१३२८. तत्थ कतमं अहिरिकं? यं न हिरीयति हिरियितब्बेन, न हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं वुच्चति अहिरिकं।

१३२९. तत्थ कतमं अनोत्तप्पं? यं न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन, न ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं वुच्चति अनोत्तप्पं।

१३३०. तत्थ कतमा हिरी? यं हिरीयति हिरियितब्बेन, हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – अयं वुच्चति हिरी।

१३३१. तत्थ कतमं ओत्तप्पं? यं ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन, ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं वुच्चति ओत्तप्पं।

१३३२. तत्थ कतमा दोवचस्सता? सहधम्मिके वुच्चमाने दोवचस्सायं दोवचस्सियं दोवचस्सता विप्पटिकूलग्गाहिता विपच्चनीकसातता अनादरियं अनादरता अगारवता अप्पटिस्सवता – अयं वुच्चति दोवचस्सता।

१३३३. तत्थ कतमा पापमित्तता? ये ते पुग्गला अस्सद्धा दुस्सीला अप्पस्सुता मच्छरिनो दुप्पञ्ञा, या तेसं सेवना निसेवना संसेवना भजना सम्भजना भत्ति सम्भत्ति तंसम्पवङ्कता – अयं वुच्चति पापमित्तता।

१३३४. तत्थ कतमा सोवचस्सता? सहधम्मिके वुच्चमाने सोवचस्सायं सोवचस्सियं सोवचस्सता अप्पटिकूलग्गाहिता अविपच्चनीकसातता सगारवता सादरियं सादरता सप्पटिस्सवता – अयं वुच्चति सोवचस्सता।

१३३५. तत्थ कतमा कल्याणमित्तता? ये ते पुग्गला सद्धा सीलवन्तो बहुस्सुता चागवन्तो पञ्ञवन्तो, या तेसं सेवना निसेवना संसेवना भजना सम्भजना भत्ति सम्भत्ति तंसम्पवङ्कता – अयं वुच्चति कल्याणमित्तता।

१३३६. तत्थ कतमा आपत्तिकुसलता? पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्तियो, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्तियो। या तासं आपत्तीनं आपत्तिकुसलता पञ्ञा पजानना…पे०… अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति आपत्तिकुसलता।

१३३७. तत्थ कतमा आपत्तिवुट्ठानकुसलता? या ताहि आपत्तीहि वुट्ठानकुसलता पञ्ञा पजानना…पे०… अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति आपत्तिवुट्ठानकुसलता।

१३३८. तत्थ कतमा समापत्तिकुसलता? अत्थि सवितक्कसविचारा समापत्ति, अत्थि अवितक्कविचारमत्ता समापत्ति, अत्थि अवितक्कअविचारा समापत्ति। या तासं समापत्तीनं समापत्तिकुसलता पञ्ञा पजानना…पे०… अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति समापत्तिकुसलता।

१३३९. तत्थ कतमा समापत्तिवुट्ठानकुसलता? या ताहि समापत्तीहि वुट्ठानकुसलता पञ्ञा पजानना…पे०… अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति समापत्तिवुट्ठानकुसलता।

१३४०. तत्थ कतमा धातुकुसलता? अट्ठारस धातुयो चक्खुधातु रूपधातु चक्खुविञ्ञाणधातु, सोतधातु सद्दधातु सोतविञ्ञाणधातु, घानधातु गन्धधातु घानविञ्ञाणधातु, जिव्हाधातु रसधातु जिव्हाविञ्ञाणधातु, कायधातु फोट्ठब्बधातु कायविञ्ञाणधातु, मनोधातु धम्मधातु मनोविञ्ञाणधातु। या तासं धातूनं धातुकुसलता पञ्ञा पजानना…पे०… अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति धातुकुसलता।

१३४१. तत्थ कतमा मनसिकारकुसलता? या तासं धातूनं मनसिकारकुसलता पञ्ञा पजानना…पे०… अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति मनसिकारकुसलता।

१३४२. तत्थ कतमा आयतनकुसलता? द्वादसायतनानि — चक्खायतनं, रूपायतनं, सोतायतनं, सद्दायतनं, घानायतनं, गन्धायतनं, जिव्हायतनं, रसायतनं, कायायतनं, फोट्ठब्बायतनं, मनायतनं, धम्मायतनं। या तेसं आयतनानं आयतनकुसलता पञ्ञा पजानना...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि — अयं वुच्चति आयतनकुसलता।

१३४३. तत्थ कतमा पटिच्चसमुप्पादकुसलता? अविज्जापच्चया सङ्खारा, सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं, विञ्ञाणपच्चया नामरूपं, नामरूपपच्चया सळायतनं, सळायतनपच्चया फस्सो, फस्सपच्चया वेदना, वेदनापच्चया तण्हा, तण्हापच्चया उपादानं, उपादानपच्चया भवो, भवपच्चया जाति, जातिपच्चया जरामरणं सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा सम्भवन्ति; एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होतीति। या तत्थ पञ्ञा पजानना...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि — अयं वुच्चति पटिच्चसमुप्पादकुसलता।

१३४४. तत्थ कतमा ठानकुसलता? ये ये धम्मा येसं येसं धम्मानं हेतू पच्चया उप्पादाय [उपादाय (सी० क०)] तं तं ठानन्ति, या तत्थ पञ्ञा पजानना...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि — अयं वुच्चति ठानकुसलता।

१३४५. तत्थ कतमा अट्ठानकुसलता? ये ये धम्मा येसं येसं धम्मानं न हेतू न पच्चया उप्पादाय तं तं अट्ठानन्ति, या तत्थ पञ्ञा पजानना...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि — अयं वुच्चति अट्ठानकुसलता।

१३४६. तत्थ कतमो अज्जवो? या अज्जवता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता — अयं वुच्चति अज्जवो।

१३४७. तत्थ कतमो मद्दवो? या मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता नीचचित्तता — अयं वुच्चति मद्दवो।

१३४८. तत्थ कतमा खन्ति? या खन्ति खमनता अधिवासनता अचण्डिक्कं अनसुरोपो अत्तमनता चित्तस्स — अयं वुच्चति खन्ति।

१३४९. तत्थ कतमं सोरच्चं? यो कायिको अवीतिक्कमो, वाचसिको अवीतिक्कमो, कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो — इदं वुच्चति सोरच्चं। सब्बोपि सीलसंवरो सोरच्चं।

१३५०. तत्थ कतमं साखल्यं? या सा वाचा अण्डका कक्कसा परकटुका पराभिसज्जनी कोधसामन्ता असमाधिसंवत्तनिका, तथारूपिं वाचं पहाय या सा वाचा नेळा कण्णसुखा पेमनीया हदयङ्गमा पोरी बहुजनकन्ता बहुजनमनापा तथारूपिं वाचं भासिता होति; या तत्थ सण्हवाचता सखिलवाचता अफरुसवाचता — इदं वुच्चति साखल्यं।

१३५१. तत्थ कतमो पटिसन्थारो? द्वे पटिसन्थारा — आमिसपटिसन्थारो च धम्मपटिसन्थारो च। इधेकच्चो पटिसन्थारको होति आमिसपटिसन्थारेन वा धम्मपटिसन्थारेन वा — अयं वुच्चति पटिसन्थारो।

१३५२. तत्थ कतमा इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता? इधेकच्चो चक्खुना रूपं दिस्वा निमित्तग्गाही होति अनुब्यञ्जनग्गाही। यत्वाधिकरणमेनं चक्खुन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं, तस्स संवराय न पटिपज्जति, न रक्खति चक्खुन्द्रियं, चक्खुन्द्रिये न संवरं आपज्जति। सोतेन सद्दं सुत्वा...पे०... घानेन गन्धं घायित्वा...पे०... जिव्हाय रसं सायित्वा...पे०... कायेन फोट्ठब्बं फुसित्वा...पे०... मनसा धम्मं विञ्ञाय निमित्तग्गाही होति अनुब्यञ्जनग्गाही। यत्वाधिकरणमेनं मनिन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा

अन्वास्सवेय्युं, तस्स संवराय न पटिपज्जति, न रक्खति मनिन्द्रियं, मनिन्द्रिये न संवरं आपज्जति। या इमेसं छन्नं इन्द्रियानं अगुत्ति अगोपना अनारक्खो असंवरो – अयं वुच्चति इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता।

१३५३. तत्थ कतमा भोजने अमत्तञ्ञुता? इधेकच्चो अप्पटिसङ्खा अयोनिसो आहारं आहारेति दवाय मदाय मण्डनाय विभूसनाय। या तत्थ असन्तुट्ठिता अमत्तञ्ञुता अप्पटिसङ्खा भोजने – अयं वुच्चति भोजने अमत्तञ्ञुता।

१३५४. तत्थ कतमा इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता? इधेकच्चो चक्खुना रूपं दिस्वा न निमित्तग्गाही होति न अनुब्यञ्जनग्गाही। यत्वाधिकरणमेनं चक्खुन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं, तस्स संवराय पटिपज्जति, रक्खति चक्खुन्द्रियं, चक्खुन्द्रिये संवरं आपज्जति। सोतेन सद्दं सुत्वा…पे०… घानेन गन्धं घायित्वा…पे०… जिव्हाय रसं सायित्वा…पे०… कायेन फोट्ठब्बं फुसित्वा…पे०… मनसा धम्मं विञ्ञाय न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाही। यत्वाधिकरणमेनं मनिन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं, तस्स संवराय पटिपज्जति, रक्खति मनिन्द्रियं, मनिन्द्रिये संवरं आपज्जति। या इमेसं छन्नं इन्द्रियानं गुत्ति गोपना आरक्खो संवरो – अयं वुच्चति इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता।

१३५५. तत्थ कतमा भोजने मत्तञ्ञुता? इधेकच्चो पटिसङ्खा योनिसो आहारं आहारेति – नेव दवाय न मदाय न मण्डनाय न विभूसनाय यावदेव इमस्स कायस्स ठितिया यापनाय विहिंसूपरतिया ब्रह्मचरियानुग्गहाय, इति पुराणञ्च वेदनं पटिहङ्खामि, नवञ्च वेदनं न उप्पादेस्सामि, यात्रा च मे भविस्सति अनवज्जता च फासुविहारो चाति। या तत्थ सन्तुट्ठिता मत्तञ्ञुता पटिसङ्खा भोजने – अयं वुच्चति भोजने मत्तञ्ञुता।

१३५६. तत्थ कतमं मुट्ठसच्चं? या असति अननुस्सति अप्पटिस्सति असति असरणता अधारणता पिलापनता सम्मुसनता – इदं वुच्चति मुट्ठसच्चं।

१३५७. तत्थ कतमं असम्पजञ्ञं? यं अञ्ञाणं अदस्सनं…पे०… अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – इदं वुच्चति असम्पजञ्ञं।

१३५८. तत्थ कतमा सति? या सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुसनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – अयं वुच्चति सति।

१३५९. तत्थ कतमं सम्पजञ्ञं? या पञ्ञा पजानना…पे०… अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं वुच्चति सम्पजञ्ञं।

१३६०. तत्थ कतमं पटिसङ्खानबलं? या पञ्ञा पजानना…पे०… अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं वुच्चति पटिसङ्खानबलं।

१३६१. तत्थ कतमं भावनाबलं? या कुसलानं धम्मानं आसेवना भावना बहुलीकम्मं – इदं वुच्चति भावनाबलं। सत्तपि बोज्झङ्गा भावनाबलं।

१३६२. तत्थ कतमो समथो? या चित्तस्स ठिति…पे०… सम्मासमाधि – अयं वुच्चति समथो।

१३६३. तत्थ कतमा विपस्सना? या पञ्ञा पजानना...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति विपस्सना।

१३६४. तत्थ कतमं समथनिमित्तं? या चित्तस्स ठिति...पे०... सम्मासमाधि – इदं वुच्चति समथनिमित्तं।

१३६५. तत्थ कतमं पग्गाहनिमित्तं? यो चेतसिको वीरियारम्भो...पे०... सम्मावायामो – इदं वुच्चति पग्गाहनिमित्तं।

१३६६. तत्थ कतमो पग्गाहो? यो चेतसिको वीरियारम्भो...पे०... सम्मावायामो – अयं वुच्चति पग्गाहो।

१३६७. तत्थ कतमो अविक्खेपो? या चित्तस्स ठिति...पे०... सम्मासमाधि – अयं वुच्चति अविक्खेपो।

१३६८. तत्थ कतमा सीलविपत्ति? यो कायिको वीतिक्कमो, वाचसिको वीतिक्कमो, कायिकवाचसिको वीतिक्कमो – अयं वुच्चति सीलविपत्ति। सब्बम्पि दुस्सिल्यं सीलविपत्ति।

१३६९. तत्थ कतमा दिट्ठिविपत्ति? नत्थि दिन्नं, नत्थि यिट्ठं, नत्थि हुतं, नत्थि सुकतदुक्कटानं कम्मानं फलं विपाको, नत्थि अयं लोको, नत्थि परो लोको, नत्थि माता, नत्थि पिता, नत्थि सत्ता ओपपातिका, नत्थि लोके समणब्राह्मणा सम्मग्गता सम्मापटिपन्ना ये इमञ्च लोकं परञ्च लोकं सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदेन्तीतिः या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं...पे०... विपरियासग्गाहो – अयं वुच्चति दिट्ठिविपत्ति। सब्बापि मिच्छादिट्ठि दिट्ठिविपत्ति।

१३७०. तत्थ कतमा सीलसम्पदा? यो कायिको अवीतिक्कमो, वाचसिको अवीतिक्कमो, कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो – अयं वुच्चति सीलसम्पदा। सब्बोपि सीलसंवरो सीलसम्पदा।

१३७१. तत्थ कतमा दिट्ठिसम्पदा? अत्थि दिन्नं, अत्थि यिट्ठं, अत्थि हुतं, अत्थि सुकतदुक्कटानं कम्मानं फलं विपाको, अत्थि अयं लोको, अत्थि परो लोको, अत्थि माता, अत्थि पिता, अत्थि सत्ता ओपपातिका, अत्थि लोके समणब्राह्मणा सम्मग्गता सम्मापटिपन्ना ये इमञ्च लोकं परञ्च लोकं सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदेन्तीतिः या एवरूपा पञ्ञा पजानना...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति दिट्ठिसम्पदा। सब्बापि सम्मादिट्ठि दिट्ठिसम्पदा।

१३७२. तत्थ कतमा सीलविसुद्धि? यो कायिको अवीतिक्कमो, वाचसिको अवीतिक्कमो, कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो – अयं वुच्चति सीलविसुद्धि। सब्बोपि सीलसंवरो सीलविसुद्धि।

१३७३. तत्थ कतमा दिट्ठिविसुद्धि? कम्मस्सकतञाणं सच्चानुलोमिकञाणं मग्गसमङ्गिस्स ञाणं फलसमङ्गिस्स ञाणं।

१३७४. **दिट्ठिविसुद्धि खो पना**ति – या पञ्ञा पजानना...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि।

१३७५. **यथादिट्ठिस्स च पधान**न्ति – यो चेतसिको वीरियारम्भो...पे०... सम्मावायामो।

१३७६. **संवेगो**ति – जातिभयं जराभयं ब्याधिभयं मरणभयं। संवेजनियं [संवेजनीयं (सी०)] ठानन्ति – जाति जरा ब्याधि मरणं।

१३७७. संविग्गस्स च योनिसो पधानन्ति – इध भिक्खु अनुप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाय छन्दं जनेति वायमति वीरियं आरभति चित्तं पग्गण्हाति पदहति, उप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं पहानाय छन्दं जनेति वायमति वीरियं आरभति चित्तं पग्गण्हाति पदहति, अनुप्पन्नानं कुसलानं धम्मानं उप्पादाय छन्दं जनेति वायमति वीरियं आरभति चित्तं पग्गण्हाति पदहति, उप्पन्नानं कुसलानं धम्मानं ठितिया असम्मोसाय भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया छन्दं जनेति वायमति वीरियं आरभति चित्तं पग्गण्हाति पदहति।

१३७८. असन्तुट्ठिता च कुसलेसु धम्मेसूति – या कुसलानं धम्मानं भावनाय असन्तुट्ठस्स भिय्योकम्यता।

१३७९. अप्पटिवानिता च पधानस्मिन्ति – या कुसलानं धम्मानं भावनाय सक्कच्चकिरियता सातच्चकिरियता अट्ठितकिरियता अनोलीनवुत्तिता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता आसेवना भावना बहुलीकम्मं।

१३८०. विज्जाति – तिस्सो विज्जा – पुब्बेनिवासानुस्सति ञाणं विज्जा, सत्तानं चुतूपपाते ञाणं विज्जा, आसवानं खये ञाणं विज्जा।

१३८१. विमुत्तीति – द्वे विमुत्तियो – चित्तस्स [चित्तस्स च (सी॰ स्या॰)] अधिमुत्ति, निब्बानञ्च।

१३८२. खये ञाणन्ति – मग्गसमङ्गिस्स ञाणं।

१३८३. अनुप्पादे ञाणन्ति – फलसमङ्गिस्स ञाणं।

निक्खेपकण्डं निट्ठितं।

४. अट्ठकथाकण्डं

तिकअत्थुद्धारो

१३८४. कतमे धम्मा कुसला? चतूसु भूमीसु कुसलं – इमे धम्मा कुसला।

१३८५. कतमे धम्मा अकुसला? द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा – इमे धम्मा अकुसला।

१३८६. कतमे धम्मा अब्याकता? चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अब्याकता।

१३८७. कतमे धम्मा सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता? कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो चत्तारो कामावचरकुसलस्स विपाकतो च किरियतो च पञ्च, रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं सुखं वेदनं ठपेत्वा – इमे धम्मा सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता।

१३८८. कतमे धम्मा दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता? द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, दुक्खसहगतं कायविञ्ञाणं,

एत्थुप्पन्नं दुक्खं वेदनं ठपेत्वा – इमे धम्मा दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता।

१३८९. कतमे धम्मा अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता? कामावचरकुसलतो चत्तारो उपेक्खासहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो छ, कामावचरकुसलस्स विपाकतो दस, अकुसलस्स विपाकतो छ, किरियतो छ, रूपावचरं चतुत्थं झानं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो अरूपावचरा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरं चतुत्थं झानं कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं अदुक्खमसुखं वेदनं ठपेत्वा – इमे धम्मा अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता। तिस्सो च वेदना, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न वत्तब्बा सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तातिपि, दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्तातिपि, य वेदनाय सम्पयुत्तातिपि।

१३९०. कतमे धम्मा विपाका? चतूसु भूमीसु विपाको – इमे धम्मा विपाका।

१३९१. कतमे धम्मा विपाकधम्मधम्मा? चतूसु भूमीसु कुसलं अकुसलं – इमे धम्मा विपाकधम्मधम्मा।

१३९२. कतमे धम्मा नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा? तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा।

१३९३. कतमे धम्मा उपादिण्णुपादानिया? तीसु भूमीसु विपाको, यञ्च रूपं कम्मस्स कतत्ता – इमे धम्मा उपादिण्णुपादानिया।

१३९४. कतमे धम्मा अनुपादिण्णुपादानिया? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, यञ्च रूपं न कम्मस्स कतत्ता – इमे धम्मा अनुपादिण्णुपादानिया।

१३९५. कतमे धम्मा अनुपादिण्णअनुपादानिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनुपादिण्णअनुपादानिया।

१३९६. कतमे धम्मा संकिलिट्ठसंकिलेसिका? द्वादसाकुसलचित्तुप्पादा – इमे धम्मा संकिलिट्ठसंकिलेसिका।

१३९७. कतमे धम्मा असंकिलिट्ठसंकिलेसिका? तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा असंकिलिट्ठसंकिलेसिका।

१३९८. कतमे धम्मा असंकिलिट्ठअसंकिलेसिका? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा असंकिलिट्ठअसंकिलेसिका।

१३९९. कतमे धम्मा सवितक्कसविचारा? कामावचरं कुसलं, अकुसलं, कामावचरकुसलस्स विपाकतो एकादस चित्तुप्पादा, अकुसलस्स विपाकतो द्वे, किरियतो एकादस, रूपावचरं पठमं झानं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरं पठमं झानं कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्ने वितक्कविचारे ठपेत्वा – इमे धम्मा सवितक्कसविचारा।

१४००. कतमे धम्मा अवितक्कविचारमत्ता? रूपावचरपञ्चकनये दुतियं झानं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो

च, लोकुत्तरपञ्चकनये दुतियं झानं कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं विचारं ठपेत्वा, वितक्को च – इमे धम्मा अवितक्कविचारमत्ता।

१४०१. कतमे धम्मा अवितक्कअविचारा? द्वेपञ्चविञ्ञाणानि, रूपावचरतिकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च लोकुत्तरतिकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च पञ्चकनये दुतिये झाने [दुतियज्झाने (सी॰)], उप्पन्नो च विचारो रूपञ्च निब्बानञ्च – इमे धम्मा अवितक्कअविचारा। वितक्कसहजातो विचारो न वत्तब्बो सवितक्कसविचारोतिपि, अवितक्कविचारमत्तोतिपि, अवितक्कअविचारोतिपि।

१४०२. कतमे धम्मा पीतिसहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो चत्तारो, कामावचरकुसलस्स विपाकतो पञ्च, किरियतो पञ्च, रूपावचरदुकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं पीतिं ठपेत्वा – इमे धम्मा पीतिसहगता।

१४०३. कतमे धम्मा सुखसहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो चत्तारो, कामावचरकुसलस्स विपाकतो छ, किरियतो पञ्च, रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं सुखं ठपेत्वा – इमे धम्मा सुखसहगता।

१४०४. कतमे धम्मा उपेक्खासहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो उपेक्खासहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो छ, कामावचरकुसलस्स विपाकतो दस, अकुसलस्स विपाकतो छ, किरियतो छ, रूपावचरं चतुत्थं झानं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरं चतुत्थं झानं कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं उपेक्खं ठपेत्वा – इमे धम्मा उपेक्खासहगता। पीति न पीतिसहगता, सुखसहगता, न उपेक्खासहगता। सुखं न सुखसहगतं, सिया पीतिसहगतं, न उपेक्खासहगतं, सिया न वत्तब्बं पीतिसहगतन्ति। द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, दुक्खसहगतकायविञ्ञाणं, या च वेदना उपेक्खा, रूपञ्च निब्बानञ्च – इमे धम्मा न वत्तब्बा पीतिसहगतातिपि, सुखसहगतातिपि, उपेक्खासहगतातिपि।

१४०५. कतमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा।

१४०६. कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बा? उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो – इमे धम्मा भावनाय पहातब्बा। चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्ता लोभसहगतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा – इमे धम्मा सिया दस्सनेन पहातब्बा सिया भावनाय पहातब्बा।

१४०७. कतमे धम्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बा? चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बा।

१४०८. कतमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, एत्थुप्पन्नं मोहं ठपेत्वा – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका।

१४०९. कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतुका? उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, एत्थुप्पन्नं मोहं ठपेत्वा – इमे धम्मा

भावनाय पहातब्बहेतुका। चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्ता लोभसहगतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा – इमे धम्मा सिया दस्सनेन पहातब्बहेतुका, सिया भावनाय पहातब्बहेतुका।

१४१०. कतमे धम्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका? विचिकिच्छासहगतो मोहो, उद्धच्चसहगतो मोहो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका।

१४११. कतमे धम्मा आचयगामिनो? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं – इमे धम्मा आचयगामिनो।

१४१२. कतमे धम्मा अपचयगामिनो? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना – इमे धम्मा अपचयगामिनो।

१४१३. कतमे धम्मा नेवाचयगामिनापचयगामिनो? चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नेवाचयगामिनापचयगामिनो।

१४१४. कतमे धम्मा सेक्खा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, हेट्ठिमानि च तीणि सामञ्ञफलानि – इमे धम्मा सेक्खा।

१४१५. कतमे धम्मा असेक्खा? उपरिट्ठिमं अरहत्तफलं – इमे धम्मा असेक्खा।

१४१६. कतमे धम्मा नेवसेक्खनासेक्खा? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नेवसेक्खनासेक्खा।

१४१७. कतमे धम्मा परित्ता? कामावचरकुसलं, अकुसलं, सब्बो कामावचरस्स विपाको, कामावचरकिरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा परित्ता।

१४१८. कतमे धम्मा महग्गता? रूपावचरा, अरूपावचरा, कुसलाब्याकता – इमे धम्मा महग्गता।

१४१९. कतमे धम्मा अप्पमाणा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अप्पमाणा।

१४२०. कतमे धम्मा परित्तारम्मणा? सब्बो कामावचरस्स विपाको, किरियामनोधातु, किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु सोमनस्ससहगता – इमे धम्मा परित्तारम्मणा।

१४२१. कतमे धम्मा महग्गतारम्मणा? विञ्ञाणञ्चायतनं, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं – इमे धम्मा महग्गतारम्मणा।

१४२२. कतमे धम्मा अप्पमाणारम्मणा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि – इमे धम्मा अप्पमाणारम्मणा। कामावचरकुसलतो चत्तारो ञाणविप्पयुत्तचित्तुप्पादा, किरियतो चत्तारो ञाणविप्पयुत्तचित्तुप्पादा, सब्बं अकुसलं – इमे धम्मा सिया परित्तारम्मणा, सिया महग्गतारम्मणा, न अप्पमाणारम्मणा, सिया न वत्तब्बा परित्तारम्मणातिपि, महग्गतारम्मणातिपि। कामावचरकुसलतो चत्तारो ञाणसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, किरियतो चत्तारो ञाणसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, रूपावचरं चतुत्थं झानं कुसलतो च किरियतो च, किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता

— इमे धम्मा सिया परित्तारम्मणा, सिया महग्गतारम्मणा, सिया अप्पमाणारम्मणा, सिया न वत्तब्बा परित्तारम्मणातिपि, महग्गतारम्मणातिपि, अप्पमाणारम्मणातिपि। रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चतुत्थस्स झानस्स विपाको, आकासानञ्चायतनं, आकिञ्चञ्ञायतनं — इमे धम्मा न वत्तब्बा परित्तारम्मणातिपि, महग्गतारम्मणातिपि, अप्पमाणारम्मणातिपि। रूपञ्च निब्बानञ्च अनारम्मणा।

१४२३. कतमे धम्मा हीना? द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा — इमे धम्मा हीना।

१४२४. कतमे धम्मा मज्झिमा? तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं — इमे धम्मा मज्झिमा।

१४२५. कतमे धम्मा पणीता? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च — इमे धम्मा पणीता।

१४२६. कतमे धम्मा मिच्छत्तनियता? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा — इमे धम्मा सिया मिच्छत्तनियता, सिया अनियता।

१४२७. कतमे धम्मा सम्मत्तनियता? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना — इमे धम्मा सम्मत्तनियता।

१४२८. कतमे धम्मा अनियता? चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, तीसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च — इमे धम्मा अनियता।

१४२९. कतमे धम्मा मग्गारम्मणा? कामावचरकुसलतो चत्तारो ञाणसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, किरियतो चत्तारो ञाणसम्पयुत्तचित्तुप्पादा — इमे धम्मा सिया मग्गारम्मणा, न मग्गहेतुका; सिया मग्गाधिपतिनो, सिया न वत्तब्बा मग्गारम्मणातिपि, मग्गाधिपतिनोतिपि। चत्तारो अरियमग्गा न मग्गारम्मणा, मग्गहेतुका; सिया मग्गाधिपतिनो, सिया न वत्तब्बा मग्गाधिपतिनोति। रूपावचरचतुत्थं झानं कुसलतो च किरियतो च, किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता — इमे धम्मा सिया मग्गारम्मणा; न मग्गहेतुका, न मग्गाधिपतिनो; सिया न वत्तब्बा मग्गारम्मणाति। कामावचरकुसलतो चत्तारो ञाणविप्पयुत्तचित्तुप्पादा, सब्बं अकुसलं, सब्बो कामावचरस्स विपाको, किरियतो छ चित्तुप्पादा, रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चतुत्थस्स झानस्स विपाको, चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारि च सामञ्ञफलानि — इमे धम्मा न वत्तब्बा मग्गारम्मणातिपि, मग्गहेतुकातिपि, मग्गाधिपतिनोतिपि। रूपञ्च निब्बानञ्च अनारम्मणा।

१४३०. कतमे धम्मा उप्पन्ना? चतूसु भूमीसु विपाको, यञ्च रूपं कम्मस्स कतत्ता — इमे धम्मा सिया उप्पन्ना, सिया उप्पादिनो; न वत्तब्बा अनुप्पन्नाति। चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, यञ्च रूपं न कम्मस्स कतत्ता — इमे धम्मा सिया उप्पन्ना, सिया अनुप्पन्ना, न वत्तब्बा उप्पादिनोति। निब्बानं न वत्तब्बं उप्पन्नन्तिपि, अनुप्पन्नन्तिपि, उप्पादिनोतिपि।

१४३१. निब्बानं ठपेत्वा सब्बे धम्मा सिया अतीता, सिया अनागता, सिया पच्चुप्पन्ना। निब्बानं न वत्तब्बं

अतीतन्तिपि, अनागतन्तिपि, पच्चुप्पन्नन्तिपि।

१४३२. कतमे धम्मा अतीतारम्मणा? विञ्ञाणञ्चायतनं, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं – इमे धम्मा अतीतारम्मणा।

१४३३. नियोगा अनागतारम्मणा नत्थि।

१४३४. कतमे धम्मा पच्चुप्पन्नारम्मणा? द्वेपञ्चविञ्ञाणानि, तिस्सो च मनोधातुयो – इमे धम्मा पच्चुप्पन्नारम्मणा। कामावचरकुसलस्स विपाकतो दस चित्तुप्पादा, अकुसलस्स विपाकतो मनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता, किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु सोमनस्ससहगता – इमे धम्मा सिया अतीतारम्मणा, सिया अनागतारम्मणा, सिया पच्चुप्पन्नारम्मणा। कामावचरकुसलं, अकुसलं, किरियतो नव चित्तुप्पादा, रूपावचरं चतुत्थं झानं कुसलतो च किरियतो च – इमे धम्मा सिया अतीतारम्मणा, सिया अनागतारम्मणा, सिया पच्चुप्पन्नारम्मणा; सिया न वत्तब्बा अतीतारम्मणातिपि, अनागतारम्मणातिपि, पच्चुप्पन्नारम्मणातिपि। रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चतुत्थस्स झानस्स विपाको, आकासानञ्चायतनं, आकिञ्चञ्ञायतनं, चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि – इमे धम्मा न वत्तब्बा अतीतारम्मणातिपि, अनागतारम्मणातिपि, पच्चुप्पन्नारम्मणातिपि। रूपञ्च निब्बानञ्च अनारम्मणा।

१४३५. अनिन्द्रियबद्धरूपञ्च निब्बानञ्च ठपेत्वा, सब्बे धम्मा सिया अज्झत्ता, सिया बहिद्धा, सिया अज्झत्तबहिद्धा। अनिन्द्रियबद्धरूपञ्च निब्बानञ्च बहिद्धा।

१४३६. कतमे धम्मा अज्झत्तारम्मणा? विञ्ञाणञ्चायतनं, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं – इमे धम्मा अज्झत्तारम्मणा।

१४३७. कतमे धम्मा बहिद्धारम्मणा? रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चतुत्थस्स झानस्स विपाको, आकासानञ्चायतनं, चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना चत्तारि च सामञ्ञफलानि – इमे धम्मा बहिद्धारम्मणा। रूपं ठपेत्वा, सब्बेव कामावचरा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा, रूपावचरं चतुत्थं झानं कुसलतो च किरियतो च – इमे धम्मा सिया अज्झत्तारम्मणा, सिया बहिद्धारम्मणा, सिया अज्झत्तबहिद्धारम्मणा। आकिञ्चञ्ञायतनं न वत्तब्बं अज्झत्तारम्मणन्तिपि, बहिद्धारम्मणन्तिपि, अज्झत्तबहिद्धारम्मणन्तिपि। रूपञ्च निब्बानञ्च अनारम्मणा।

१४३८. कतमे धम्मा सनिदस्सनसप्पटिघा? रूपायतनं – इमे धम्मा सनिदस्सनसप्पटिघा।

१४३९. कतमे धम्मा अनिदस्सनसप्पटिघा? चक्खायतनं...पे०... फोट्ठब्बायतनं – इमे धम्मा अनिदस्सनसप्पटिघा।

१४४०. कतमे धम्मा अनिदस्सनअप्पटिघा? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, यञ्च रूपं अनिदस्सनं अप्पटिघं धम्मायतनपरियापन्नं, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनिदस्सनअप्पटिघा।

तिकं।

दुकअत्थुद्धारो

हेतुगोच्छकं

१४४१. कतमे धम्मा हेतू? तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू। अलोभो कुसलहेतु, अदोसो कुसलहेतु, चतूसु भूमीसु कुसलेसु उप्पज्जन्ति। अमोहो कुसलहेतु, कामावचरकुसलतो चत्तारो ञाणविप्पयुत्ते चित्तुप्पादे ठपेत्वा, चतूसु भूमीसु कुसलेसु उप्पज्जति।

लोभो अट्ठसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। दोसो द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। मोहो सब्बाकुसलेसु उप्पज्जति।

अलोभो विपाकहेतु अदोसो विपाकहेतु, कामावचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा, चतूसु भूमीसु विपाकेसु उप्पज्जन्ति। अमोहो विपाकहेतु, कामावचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा, चत्तारो ञाणविप्पयुत्ते चित्तुप्पादे ठपेत्वा, चतूसु भूमीसु विपाकेसु उप्पज्जति।

अलोभो किरियहेतु अदोसो किरियहेतु, कामावचरकिरियतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा, तीसु भूमीसु किरियेसु उप्पज्जन्ति। अमोहो किरियहेतु, कामावचरकिरियतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा, चत्तारो ञाणविप्पयुत्ते चित्तुप्पादे ठपेत्वा, तीसु भूमीसु किरियेसु उप्पज्जति – इमे धम्मा हेतू।

१४४२. कतमे धम्मा न हेतू? ठपेत्वा हेतू, चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न हेतू।

१४४३. कतमे धम्मा सहेतुका? विचिकिच्छासहगतं उद्धच्चसहगतं मोहं ठपेत्वा अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, कामावचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा चतूसु भूमीसु विपाको, कामावचरकिरियतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं – इमे धम्मा सहेतुका।

१४४४. कतमे धम्मा अहेतुका? विचिकिच्छासहगतो मोहो, उद्धच्चसहगतो मोहो, द्वेपञ्चविञ्ञाणानि, तिस्सो च मनोधातुयो, पञ्च च अहेतुकमनोविञ्ञाणधातुयो, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अहेतुका।

१४४५. कतमे धम्मा हेतुसम्पयुत्ता? विचिकिच्छासहगतं उद्धच्चसहगतं मोहं ठपेत्वा अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, कामावचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा चतूसु भूमीसु विपाको, कामावचरकिरियतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं – इमे धम्मा हेतुसम्पयुत्ता।

१४४६. कतमे धम्मा हेतुविप्पयुत्ता? विचिकिच्छासहगतो मोहो, उद्धच्चसहगतो मोहो, द्वेपञ्चविञ्ञाणानि तिस्सो च मनोधातुयो पञ्च च अहेतुकमनोविञ्ञाणधातुयो, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा हेतुविप्पयुत्ता।

१४४७. कतमे धम्मा हेतू चेव सहेतुका च? यत्थ द्वे तयो हेतू एकतो उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा हेतू चेव सहेतुका च।

१४४८. कतमे धम्मा सहेतुका चेव न च हेतू? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, कामावचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा चतूसु भूमीसु विपाको, कामावचरकिरियतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, एत्थुप्पन्ने हेतू ठपेत्वा – इमे धम्मा सहेतुका चेव न च हेतू। अहेतुका धम्मा न वत्तब्बा – हेतू चेव सहेतुका चातिपि, सहेतुका चेव न च हेतूतिपि।

१४४९. कतमे धम्मा हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता च? यत्थ द्वे तयो हेतू एकतो उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता च।

१४५०. कतमे धम्मा हेतुसम्पयुत्ता चेव न च हेतू? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, कामावचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा चतूसु भूमीसु विपाको, कामावचरकिरियतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, एत्थुप्पन्ने हेतू ठपेत्वा – इमे धम्मा हेतुसम्पयुत्ता चेव न च हेतू। हेतुविप्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता चातिपि, हेतुसम्पयुत्ता चेव न च हेतूतिपि।

१४५१. कतमे धम्मा न हेतू सहेतुका? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, कामावचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा चतूसु भूमीसु विपाको, कामावचरकिरियतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, एत्थुप्पन्ने हेतू ठपेत्वा – इमे धम्मा न हेतू सहेतुका।

१४५२. कतमे धम्मा न हेतू अहेतुका? द्वेपञ्चविञ्ञाणानि, तिस्सो च मनोधातुयो, पञ्च च अहेतुकमनोविञ्ञाणधातुयो, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न हेतू अहेतुका। हेतू धम्मा न वत्तब्बा – न हेतू सहेतुकातिपि, न हेतू अहेतुकातिपि।

चूळन्तरदुकं

१४५३. कतमे धम्मा सप्पच्चया? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा सप्पच्चया।

१४५४. कतमे धम्मा अप्पच्चया? निब्बानं – इमे धम्मा अप्पच्चया।

१४५५. कतमे धम्मा सङ्खता? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा सङ्खता।

१४५६. कतमे धम्मा असङ्खता? निब्बानं – इमे धम्मा असङ्खता।

१४५७. कतमे धम्मा सनिदस्सना? रूपायतनं – इमे धम्मा सनिदस्सना।

१४५८. कतमे धम्मा अनिदस्सना? चक्खायतनं …पे॰… फोट्ठब्बायतनं, चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, यञ्च रूपं अनिदस्सनं अप्पटिघं धम्मायतनपरियापन्नं, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनिदस्सना।

१४५९. कतमे धम्मा सप्पटिघा? चक्खायतनं…पे॰… फोट्ठब्बायतनं – इमे धम्मा सप्पटिघा।

१४६०. कतमे धम्मा अप्पटिघा? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, यञ्च रूपं अनिदस्सनं अप्पटिघं धम्मायतनपरियापन्नं, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अप्पटिघा।

१४६१. कतमे धम्मा रूपिनो? चत्तारो च महाभूता, चतुन्नञ्च महाभूतानं उपादाय रूपं – इमे धम्मा रूपिनो।

१४६२. कतमे धम्मा अरूपिनो? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अरूपिनो।

१४६३. कतमे धम्मा लोकिया? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा लोकिया।

१४६४. कतमे धम्मा लोकुत्तरा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा लोकुत्तरा। सब्बे [सब्बेव (स्या०)] धम्मा केनचि विञ्ञेय्या, केनचि न विञ्ञेय्या।

आसवगोच्छकं

१४६५. कतमे धम्मा आसवा? चत्तारो आसवा – कामासवो, भवासवो, दिट्ठासवो, अविज्जासवो। कामासवो अट्ठसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति भवासवो चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति दिट्ठासवो चतूसु दिट्ठिगतसम्पयुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। अविज्जासवो सब्बाकुसलेसु उप्पज्जति – इमे धम्मा आसवा।

१४६६. कतमे धम्मा नो आसवा? ठपेत्वा आसवे अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो आसवा।

१४६७. कतमे धम्मा सासवा? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा सासवा।

१४६८. कतमे धम्मा अनासवा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनासवा।

१४६९. कतमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता? द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा एत्थुप्पन्नं मोहं ठपेत्वा, विचिकिच्छासहगतं उद्धच्चसहगतं मोहं ठपेत्वा, अवसेसं अकुसलं – इमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता।

१४७०. कतमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता? द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो मोहो, विचिकिच्छासहगतो मोहो, उद्धच्चसहगतो मोहो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता।

१४७१. कतमे धम्मा आसवा चेव सासवा च? तेव आसवा आसवा चेव सासवा च।

१४७२. कतमे धम्मा सासवा चेव नो च आसवा? ठपेत्वा आसवे, अवसेसं अकुसलं, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा सासवा चेव नो च आसवा। अनासवा धम्मा न वत्तब्बा – आसवा चेव सासवा चातिपि, सासवा चेव नो च आसवातिपि।

१४७३. कतमे धम्मा आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता च? यत्थ द्वे तयो आसवा एकतो उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता च।

१४७४. कतमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता चेव नो च आसवा? ठपेत्वा आसवे, अवसेसं अकुसलं – इमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता चेव नो च आसवा। आसवविप्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता चातिपि, आसवसम्पयुत्ता चेव नो च आसवातिपि।

१४७५. कतमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता सासवा? द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो मोहो, विचिकिच्छासहगतो मोहो, उद्धच्चसहगतो मोहो, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता सासवा।

१४७६. कतमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता अनासवा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता अनासवा। आसवसम्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – आसवविप्पयुत्ता सासवातिपि, आसवविप्पयुत्ता अनासवातिपि।

संयोजनगोच्छकं

१४७७. कतमे धम्मा संयोजना? दस संयोजनानि – कामरागसंयोजनं, पटिघसंयोजनं, मानसंयोजनं, दिट्ठिसंयोजनं, विचिकिच्छासंयोजनं, सीलब्बतपरामाससंयोजनं, भवरागसंयोजनं, इस्सासंयोजनं, मच्छरियसंयोजनं, अविज्जासंयोजनं। कामरागसंयोजनं अट्ठसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। पटिघसंयोजनं द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। मानसंयोजनं चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। दिट्ठिसंयोजनं चतूसु दिट्ठिगतसम्पयुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। विचिकिच्छासंयोजनं विचिकिच्छासहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। सीलब्बतपरामाससंयोजनं चतूसु दिट्ठिगतसम्पयुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। भवरागसंयोजनं चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। इस्सासंयोजनञ्च मच्छरियसंयोजनञ्च द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जन्ति। अविज्जासंयोजनं सब्बाकुसलेसु उप्पज्जति – इमे धम्मा संयोजना।

१४७८. कतमे धम्मा नो संयोजना। ठपेत्वा संयोजने अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो संयोजना।

१४७९. कतमे धम्मा संयोजनिया? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा संयोजनिया।

१४८०. कतमे धम्मा असंयोजनिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा असंयोजनिया।

१४८१. कतमे धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता? उद्धच्चसहगतं मोहं ठपेत्वा अवसेसं अकुसलं – इमे धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता।

१४८२. कतमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता? उद्धच्चसहगतो मोहो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता।

१४८३. कतमे धम्मा संयोजना चेव संयोजनिया च? तानेव संयोजनानि संयोजना चेव संयोजनिया च।

१४८४. कतमे धम्मा संयोजनिया चेव नो च संयोजना? ठपेत्वा संयोजने अवसेसं अकुसलं, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा संयोजनिया चेव नो च संयोजना। असंयोजनिया धम्मा न वत्तब्बा – संयोजना चेव संयोजनिया चातिपि, संयोजनिया चेव नो च संयोजनातिपि।

१४८५. कतमे धम्मा संयोजना चेव संयोजनसम्पयुत्ता च? यत्थ द्वे तीणि संयोजनानि एकतो उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा संयोजना चेव संयोजनसम्पयुत्ता च।

१४८६. कतमे धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता चेव नो च संयोजना? ठपेत्वा संयोजने, अवसेसं अकुसलं – इमे धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता चेव नो च संयोजना। संयोजनविप्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – संयोजना चेव संयोजनसम्पयुत्ता चातिपि, संयोजनसम्पयुत्ता चेव नो च संयोजनातिपि।

१४८७. कतमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता संयोजनिया? उद्धच्चसहगतो मोहो, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता संयोजनिया।

१४८८. कतमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता असंयोजनिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता असंयोजनिया। संयोजनसम्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – संयोजनविप्पयुत्ता संयोजनियातिपि, संयोजनविप्पयुत्ता असंयोजनियातिपि।

गन्थगोच्छकं

१४८९. कतमे धम्मा गन्था? चत्तारो गन्था – अभिज्झाकायगन्थो, ब्यापादो कायगन्थो, सीलब्बतपरामासो कायगन्थो, इदंसच्चाभिनिवेसो कायगन्थो। अभिज्झाकायगन्थो अट्ठसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। ब्यापादो कायगन्थो द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। सीलब्बतपरामासो कायगन्थो च इदंसच्चाभिनिवेसो कायगन्थो च चतूसु दिट्ठिगतसम्पयुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा गन्था।

१४९०. कतमे धम्मा नो गन्था? ठपेत्वा गन्थे, अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो गन्था।

१४९१. कतमे धम्मा गन्थनिया? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा गन्थनिया।

१४९२. कतमे धम्मा अगन्थनिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अगन्थनिया।

१४९३. कतमे धम्मा गन्थसम्पयुत्ता? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्नं लोभं ठपेत्वा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्नं पटिघं ठपेत्वा – इमे धम्मा गन्थसम्पयुत्ता।

१४९४. कतमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता? चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो लोभो, द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नं पटिघं, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता।

१४९५. कतमे धम्मा गन्था चेव गन्थनिया च? तेव गन्था गन्था चेव गन्थनिया च।

१४९६. कतमे धम्मा गन्थनिया चेव नो च गन्था? ठपेत्वा गन्थे अवसेसं अकुसलं, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा गन्थनिया चेव नो च गन्था। अगन्थनिया धम्मा न वत्तब्बा – गन्था चेव गन्थनिया चातिपि, गन्थनिया चेव नो च गन्थातिपि।

१४९७. कतमे धम्मा गन्था चेव गन्थसम्पयुत्ता च? यत्थ दिट्ठि च लोभो च एकतो उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा गन्था चेव गन्थसम्पयुत्ता च।

१४९८. कतमे धम्मा गन्थसम्पयुत्ता चेव नो च गन्था? अट्ठ लोभसहगतचित्तुप्पादा द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्ने गन्थे ठपेत्वा – इमे धम्मा गन्थसम्पयुत्ता चेव नो च गन्था। गन्थविप्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – गन्था चेव गन्थसम्पयुत्ता चातिपि, गन्थसम्पयुत्ता चेव नो च गन्थातिपि।

१४९९. कतमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता गन्थनिया? चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो लोभो, द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नं पटिघं, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता गन्थनिया।

१५००. कतमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता अगन्थनिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा गन्थविप्पयुत्ता अगन्थनिया। गन्थसम्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – गन्थविप्पयुत्ता गन्थनियातिपि, गन्थविप्पयुत्ता अगन्थनियातिपि।

ओघगोच्छकं

१५०१. कतमे धम्मा ओघा…पे॰…।

योगगोच्छकं

१५०२. कतमे धम्मा योगा…पे॰…।

नीवरणगोच्छकं

१५०३. कतमे धम्मा नीवरणा? छ नीवरणा – कामच्छन्दनीवरणं, ब्यापादनीवरणं, थिनमिद्धनीवरणं, उद्धच्चकुक्कुच्चनीवरणं, विचिकिच्छानीवरणं, अविज्जानीवरणं। कामच्छन्दनीवरणं अट्ठसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति, ब्यापादनीवरणं द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति, थिनमिद्धनीवरणं ससङ्खारिकेसु अकुसलेसु उप्पज्जति, उद्धच्चनीवरणं उद्धच्चसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति, कुक्कुच्चनीवरणं द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति, विचिकिच्छानीवरणं विचिकिच्छासहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति, अविज्जानीवरणं सब्बाकुसलेसु उप्पज्जति – इमे धम्मा नीवरणा।

१५०४. कतमे धम्मा नो नीवरणा? ठपेत्वा नीवरणे अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो नीवरणा।

१५०५. कतमे धम्मा नीवरणिया? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा नीवरणिया।

१५०६. कतमे धम्मा अनीवरणिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनीवरणिया।

१५०७. कतमे धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता? द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा – इमे धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता।

१५०८. कतमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता? चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता।

१५०९. कतमे धम्मा नीवरणा चेव नीवरणिया च? तानेव नीवरणानि नीवरणा चेव नीवरणिया च।

१५१०. कतमे धम्मा नीवरणिया चेव नो च नीवरणा? ठपेत्वा नीवरणे, अवसेसं अकुसलं, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा नीवरणिया चेव नो च नीवरणा। अनीवरणिया धम्मा न वत्तब्बा – नीवरणा चेव नीवरणिया चातिपि, नीवरणिया चेव नो च नीवरणातिपि।

१५११. कतमे धम्मा नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता च? यत्थ द्वे तीणि नीवरणानि एकतो उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता च।

१५१२. कतमे धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता चेव नो च नीवरणा? ठपेत्वा नीवरणे, अवसेसं अकुसलं – इमे धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता चेव नो च नीवरणा। नीवरणविप्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता चातिपि, नीवरणसम्पयुत्ता चेव नो च नीवरणातिपि।

१५१३. कतमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता नीवरणिया? तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता नीवरणिया।

१५१४. कतमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता अनीवरणिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि,

निब्बानञ्च – इमे धम्मा नीवरणविप्पयुत्ता अनीवरणिया। नीवरणसम्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – नीवरणविप्पयुत्ता नीवरणियातिपि, नीवरणविप्पयुत्ता अनीवरणियातिपि।

परामासगोच्छकं

१५१५. कतमे धम्मा परामासा? दिट्ठिपरामासो चतूसु दिट्ठिगतसम्पयुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति – इमे धम्मा परामासा।

१५१६. कतमे धम्मा नो परामासा? ठपेत्वा परामासं अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो परामासा।

१५१७. कतमे धम्मा परामट्ठा? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा परामट्ठा।

१५१८. कतमे धम्मा अपरामट्ठा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि निब्बानञ्च – इमे धम्मा अपरामट्ठा।

१५१९. कतमे धम्मा परामाससम्पयुत्ता? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्नं परामासं ठपेत्वा – इमे धम्मा परामाससम्पयुत्ता।

१५२०. कतमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता? चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता। परामासो न वत्तब्बो – परामाससम्पयुत्तोतिपि, परामासविप्पयुत्तोतिपि।

१५२१. कतमे धम्मा परामासा चेव परामट्ठा च? सो एव परामासो परामासो चेव परामट्ठो च।

१५२२. कतमे धम्मा परामट्ठा चेव नो च परामासा? ठपेत्वा परामासं अवसेसं अकुसलं, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा परामट्ठा चेव नो च परामासा। अपरामट्ठा धम्मा न वत्तब्बा – परामासा चेव परामट्ठा चातिपि, परामट्ठा चेव नो च परामासातिपि।

१५२३. कतमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता परामट्ठा? चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता परामट्ठा।

१५२४. कतमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता अपरामट्ठा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा परामासविप्पयुत्ता अपरामट्ठा। परामासा च परामाससम्पयुत्ता च धम्मा न वत्तब्बा – परामासविप्पयुत्ता परामट्ठातिपि, परामासविप्पयुत्ता अपरामट्ठातिपि।

महन्तरदुकं

१५२५. कतमे धम्मा सारम्मणा? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं – इमे धम्मा सारम्मणा।

१५२६. कतमे धम्मा अनारम्मणा? रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनारम्मणा।

१५२७. कतमे धम्मा चित्ता? चक्खुविञ्ञाणं, सोतविञ्ञाणं, घानविञ्ञाणं, जिव्हाविञ्ञाणं, कायविञ्ञाणं, मनोधातु, मनोविञ्ञाणधातु – इमे धम्मा चित्ता।

१५२८. कतमे धम्मा नो चित्ता? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो चित्ता।

१५२९. कतमे धम्मा चेतसिका? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चेतसिका।

१५३०. कतमे धम्मा अचेतसिका? चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अचेतसिका।

१५३१. कतमे धम्मा चित्तसम्पयुत्ता? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसम्पयुत्ता।

१५३२. कतमे धम्मा चित्तविप्पयुत्ता? रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा चित्तविप्पयुत्ता। चित्तं न वत्तब्बं – चित्तेन सम्पयुत्तन्तिपि, चित्तेन विप्पयुत्तन्तिपि।

१५३३. कतमे धम्मा चित्तसंसट्ठा? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसंसट्ठा।

१५३४. कतमे धम्मा चित्तविसंसट्ठा? रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा चित्तविसंसट्ठा। चित्तं न वत्तब्बं – चित्तेन संसट्ठन्तिपि, चित्तेन विसंसट्ठन्तिपि।

१५३५. कतमे धम्मा चित्तसमुट्ठाना? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं चित्तजं चित्तहेतुकं चित्तसमुट्ठानं – रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स लहुता रूपस्स मुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इमे धम्मा चित्तसमुट्ठाना।

१५३६. कतमे धम्मा नो चित्तसमुट्ठाना? चित्तञ्च, अवसेसञ्च रूपं, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो चित्तसमुट्ठाना।

१५३७. कतमे धम्मा चित्तसहभुनो? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति – इमे धम्मा चित्तसहभुनो।

१५३८. कतमे धम्मा नो चित्तसहभुनो? चित्तञ्च, अवसेसञ्च रूपं, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो चित्तसहभुनो।

१५३९. कतमे धम्मा चित्तानुपरिवत्तिनो? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति – इमे धम्मा चित्तानुपरिवत्तिनो।

१५४०. कतमे धम्मा नो चित्तानुपरिवत्तिनो? चित्तञ्च, अवसेसञ्च रूपं, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो चित्तानुपरिवत्तिनो।

१५४१. कतमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना।

१५४२. कतमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना? चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना।

१५४३. कतमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो।

१५४४. कतमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो? चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो।

१५४५. कतमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इमे धम्मा चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो।

१५४६. कतमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो? चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो।

१५४७. कतमे धम्मा अज्झत्तिका? चक्खायतनं…पे०… मनायतनं – इमे धम्मा अज्झत्तिका।

१५४८. कतमे धम्मा बाहिरा? रूपायतनं…पे०… धम्मायतनं – इमे धम्मा बाहिरा।

१५४९. कतमे धम्मा उपादा? चक्खायतनं…पे०… कबळीकारो आहारो – इमे धम्मा उपादा।

१५५०. कतमे धम्मा नो उपादा? चतूसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, चत्तारो च महाभूता, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो उपादा।

१५५१. कतमे धम्मा उपादिण्णा? तीसु भूमीसु विपाको, यञ्च रूपं कम्मस्स कतत्ता – इमे धम्मा उपादिण्णा।

१५५२. कतमे धम्मा अनुपादिण्णा? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, यञ्च रूपं न कम्मस्स कतत्ता, चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनुपादिण्णा।

उपादानगोच्छकं

१५५३. कतमे धम्मा उपादाना? चत्तारि उपादानानि – कामुपादानं, दिट्ठुपादानं, सीलब्बतुपादानं, अत्तवादुपादानं। कामुपादानं अट्ठसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। दिट्ठुपादानञ्च सीलब्बतुपादानञ्च अत्तवादुपादानञ्च चतूसु दिट्ठिगतसम्पयुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा उपादाना।

१५५४. कतमे धम्मा नो उपादाना? ठपेत्वा उपादाने अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो उपादाना।

१५५५. कतमे धम्मा उपादानिया? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा उपादानिया।

१५५६. कतमे धम्मा अनुपादानिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनुपादानिया।

१५५७. कतमे धम्मा उपादानसम्पयुत्ता? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्नं लोभं ठपेत्वा – इमे धम्मा उपादानसम्पयुत्ता।

१५५८. कतमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता? चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो लोभो, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता।

१५५९. कतमे धम्मा उपादाना चेव उपादानिया च? तानेव उपादानानि उपादाना चेव उपादानिया च।

१५६०. कतमे धम्मा उपादानिया चेव नो च उपादाना? ठपेत्वा उपादाने अवसेसं अकुसलं, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा उपादानिया चेव नो च उपादाना। अनुपादानिया धम्मा न वत्तब्बा – उपादाना चेव उपादानिया चातिपि, उपादानिया चेव नो च उपादानातिपि।

१५६१. कतमे धम्मा उपादाना चेव उपादानसम्पयुत्ता च? यत्थ दिट्ठि च लोभो च एकतो उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा उपादाना चेव उपादानसम्पयुत्ता च।

१५६२. कतमे धम्मा उपादानसम्पयुत्ता चेव नो च उपादाना? अट्ठ लोभसहगतचित्तुप्पादा, एत्थुप्पन्ने उपादाने ठपेत्वा – इमे धम्मा उपादानसम्पयुत्ता चेव नो च उपादाना। उपादानविप्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – उपादाना चेव उपादानसम्पयुत्ता चातिपि, उपादानसम्पयुत्ता चेव नो च उपादानातिपि।

१५६३. कतमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता उपादानिया? चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पन्नो लोभो, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता उपादानिया।

१५६४. कतमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता अनुपादानिया? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि,

निब्बानञ्च – इमे धम्मा उपादानविप्पयुत्ता अनुपादानिया। उपादानसम्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – उपादानविप्पयुत्ता उपादानियातिपि, उपादानविप्पयुत्ता अनुपादानियातिपि।

किलेसगोच्छकं

१५६५. कतमे धम्मा किलेसा? दस किलेसवत्थूनि – लोभो, दोसो, मोहो, मानो, दिट्ठि, विचिकिच्छा, थिनं, उद्धच्चं, अहिरिकं, अनोत्तप्पं। लोभो अट्ठसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। दोसो द्वीसु दोमनस्ससहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। मोहो सब्बाकुसलेसु उप्पज्जति। मानो चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। दिट्ठि चतूसु दिट्ठिगतसम्पयुत्तेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। विचिकिच्छा विचिकिच्छासहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जति। थिनं ससङ्खारिकेसु अकुसलेसु उप्पज्जति। उद्धच्चञ्च अहिरिकञ्च अनोत्तप्पञ्च सब्बाकुसलेसु उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा किलेसा।

१५६६. कतमे धम्मा नो किलेसा? ठपेत्वा किलेसे अवसेसं अकुसलं, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा नो किलेसा।

१५६७. कतमे धम्मा संकिलेसिका? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा संकिलेसिका।

१५६८. कतमे धम्मा असंकिलेसिका? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा असंकिलेसिका।

१५६९. कतमे धम्मा संकिलिट्ठा? द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा – इमे धम्मा संकिलिट्ठा।

१५७०. कतमे धम्मा असंकिलिट्ठा? चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा असंकिलिट्ठा।

१५७१. कतमे धम्मा किलेससम्पयुत्ता? द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा – इमे धम्मा किलेससम्पयुत्ता।

१५७२. कतमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता? चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता।

१५७३. कतमे धम्मा किलेसा चेव संकिलेसिका च? तेव किलेसा किलेसा चेव संकिलेसिका च।

१५७४. कतमे धम्मा संकिलेसिका चेव नो च किलेसा? ठपेत्वा किलेसे अवसेसं अकुसलं, तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा संकिलेसिका चेव नो च किलेसा। असंकिलेसिका धम्मा न वत्तब्बा – किलेसा चेव संकिलेसिका चातिपि, संकिलेसिका चेव नो च किलेसातिपि।

१५७५. कतमे धम्मा किलेसा चेव संकिलिट्ठा च? तेव किलेसा किलेसा चेव संकिलिट्ठा च।

१५७६. कतमे धम्मा संकिलिट्ठा चेव नो च किलेसा? ठपेत्वा किलेसे अवसेसं अकुसलं – इमे धम्मा संकिलिट्ठा चेव नो च किलेसा। असंकिलिट्ठा धम्मा न वत्तब्बा – किलेसा चेव संकिलिट्ठा चातिपि, संकिलिट्ठा चेव नो च किलेसातिपि।

१५७७. कतमे धम्मा किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता च? यत्थ द्वे तयो किलेसा एकतो उप्पज्जन्ति – इमे धम्मा किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता च।

१५७८. कतमे धम्मा किलेससम्पयुत्ता चेव नो च किलेसा? ठपेत्वा किलेसे अवसेसं अकुसलं – इमे धम्मा किलेससम्पयुत्ता चेव नो च किलेसा। किलेसविप्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता चातिपि, किलेससम्पयुत्ता चेव नो च किलेसातिपि।

१५७९. कतमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता संकिलेसिका? तीसु भूमीसु कुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता संकिलेसिका।

१५८०. कतमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता असंकिलेसिका? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा किलेसविप्पयुत्ता असंकिलेसिका। किलेससम्पयुत्ता धम्मा न वत्तब्बा – किलेसविप्पयुत्ता संकिलेसिकातिपि, किलेसविप्पयुत्ता असंकिलेसिकातिपि।

पिट्ठिदुकं

१५८१. कतमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा। चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ససहगतचित्तुप्पादा – इमे धम्मा सिया दस्सनेन पहातब्बा, सिया न दस्सनेन पहातब्बा।

१५८२. कतमे धम्मा न दस्सनेन पहातब्बा? उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न दस्सनेन पहातब्बा।

१५८३. कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बा? उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो – इमे धम्मा भावनाय पहातब्बा। चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा – इमे धम्मा सिया भावनाय पहातब्बा, सिया न भावनाय पहातब्बा।

१५८४. कतमे धम्मा न भावनाय पहातब्बा? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न भावनाय पहातब्बा।

१५८५. कतमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, एत्थुप्पन्नं मोहं ठपेत्वा – इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका। चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा – इमे धम्मा सिया दस्सनेन पहातब्बहेतुका, सिया न दस्सनेन पहातब्बहेतुका।

१५८६. कतमे धम्मा न दस्सनेन पहातब्बहेतुका? विचिकिच्छासहगतो मोहो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न दस्सनेन पहातब्बहेतुका।

१५८७. कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतुका? उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, एत्थुप्पन्नं मोहं ठपेत्वा – इमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतुका। चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा – इमे धम्मा सिया भावनाय पहातब्बहेतुका, सिया न भावनाय पहातब्बहेतुका।

१५८८. कतमे धम्मा न भावनाय पहातब्बहेतुका? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो मोहो, चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न भावनाय पहातब्बहेतुका।

१५८९. कतमे धम्मा सवितक्का? कामावचरकुसलं, अकुसलं, कामावचरकुसलस्स विपाकतो एकादस चित्तुप्पादा, अकुसलस्स विपाकतो द्वे, किरियतो एकादस, रूपावचरं पठमं झानं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च लोकुत्तरं पठमं झानं कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं वितक्कं ठपेत्वा – इमे धम्मा सवितक्का।

१५९०. कतमे धम्मा अवितक्का? द्वेपञ्चविञ्ञाणानि, रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो अरूपावचरा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, वितक्को च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अवितक्का।

१५९१. कतमे धम्मा सविचारा? कामावचरकुसलं, अकुसलं, कामावचरकुसलस्स विपाकतो एकादस चित्तुप्पादा, अकुसलस्स विपाकतो द्वे किरियतो एकादस, रूपावचरएककदुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरएककदुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं विचारं ठपेत्वा – इमे धम्मा सविचारा।

१५९२. कतमे धम्मा अविचारा? द्वेपञ्चविञ्ञाणानि, रूपावचरतिकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरतिकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, विचारो च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अविचारा।

१५९३. कतमे धम्मा सप्पीतिका? कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो चत्तारो, कामावचरकुसलस्स विपाकतो पञ्च, किरियतो पञ्च, रूपावचरदुकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं पीतिं ठपेत्वा – इमे धम्मा सप्पीतिका।

१५९४. कतमे धम्मा अप्पीतिका? कामावचरकुसलतो चत्तारो उपेक्खासहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो अट्ठ, कामावचरकुसलस्स विपाकतो एकादस, अकुसलस्स विपाकतो सत्त, किरियतो छ, रूपावचरदुकदुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकदुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च पीति च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अप्पीतिका।

१५९५. कतमे धम्मा पीतिसहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो चत्तारो,

कामावचरकुसलस्स विपाकतो पञ्च, किरियतो पञ्च, रूपावचरदुकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकतिकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं पीतिं ठपेत्वा – इमे धम्मा पीतिसहगता।

१५९६. कतमे धम्मा न पीतिसहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो उपेक्खासहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो अट्ठ, कामावचरकुसलस्स विपाकतो एकादस, अकुसलस्स विपाकतो सत्त, किरियतो छ, रूपावचरदुकदुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरदुकदुकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, पीति च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न पीतिसहगता।

१५९७. कतमे धम्मा सुखसहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो चत्तारो, कामावचरकुसलस्स विपाकतो छ, किरियतो पञ्च, रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च लोकुत्तरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं सुखं ठपेत्वा – इमे धम्मा सुखसहगता।

१५९८. कतमे धम्मा न सुखसहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो उपेक्खासहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो अट्ठ, कामावचरकुसलस्स विपाकतो दस, अकुसलस्स विपाकतो सत्त, किरियतो छ, रूपावचरं चतुत्थं झानं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च लोकुत्तरं चतुत्थं झानं कुसलतो च विपाकतो च, सुखञ्च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न सुखसहगता।

१५९९. कतमे धम्मा उपेक्खासहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो उपेक्खासहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो छ, कामावचरकुसलस्स विपाकतो दस, अकुसलस्स विपाकतो छ, किरियतो छ, रूपावचरं चतुत्थं झानं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरं चतुत्थं झानं कुसलतो च विपाकतो च, एत्थुप्पन्नं उपेक्खं ठपेत्वा – इमे धम्मा उपेक्खासहगता।

१६००. कतमे धम्मा न उपेक्खासहगता? कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा, अकुसलतो छ, कामावचरकुसलस्स विपाकतो छ, अकुसलस्स विपाकतो एको, किरियतो पञ्च, रूपावचरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, लोकुत्तरतिकचतुक्कज्झाना कुसलतो च विपाकतो च, उपेक्खा च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा न उपेक्खासहगता।

१६०१. कतमे धम्मा कामावचरा? कामावचरकुसलं, अकुसलं, सब्बो कामावचरस्स विपाको, कामावचरकिरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा कामावचरा।

१६०२. कतमे धम्मा न कामावचरा? रूपावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना – इमे धम्मा न कामावचरा।

१६०३. कतमे धम्मा रूपावचरा? रूपावचरचतुक्कपञ्चकज्झाना कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च – इमे धम्मा रूपावचरा।

१६०४. कतमे धम्मा न रूपावचरा? कामावचरा, अरूपावचरा, अपरियापन्ना – इमे धम्मा न रूपावचरा।

१६०५. कतमे धम्मा अरूपावचरा? चत्तारो आरुप्पा कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च – इमे धम्मा

अरूपावचरा।

१६०६. कतमे धम्मा न अरूपावचरा? कामावचरा, रूपावचरा, अपरियापन्ना – इमे धम्मा न अरूपावचरा।

१६०७. कतमे धम्मा परियापन्ना? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा परियापन्ना।

१६०८. कतमे धम्मा अपरियापन्ना? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अपरियापन्ना।

१६०९. कतमे धम्मा निय्यानिका? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना – इमे धम्मा निय्यानिका।

१६१०. कतमे धम्मा अनिय्यानिका? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनिय्यानिका।

१६११. कतमे धम्मा नियता? चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा, द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा – इमे धम्मा सिया नियता सिया अनियता। चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना – इमे धम्मा नियता।

१६१२. कतमे धम्मा अनियता? चत्तारो दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादा, विचिकिच्छासहगतो चित्तुप्पादो, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो, तीसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनियता।

१६१३. कतमे धम्मा सउत्तरा? तीसु भूमीसु कुसलं, अकुसलं, तीसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, सब्बञ्च रूपं – इमे धम्मा सउत्तरा।

१६१४. कतमे धम्मा अनुत्तरा? चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनुत्तरा।

१६१५. कतमे धम्मा सरणा? द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा – इमे धम्मा सरणा।

१६१६. कतमे धम्मा अरणा? चतूसु भूमीसु कुसलं, चतूसु भूमीसु विपाको, तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अरणा।

अत्थुद्धारो निट्ठितो।

धम्मसङ्गणीपकरणं निट्ठितं।